Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGan

हींद समाचार जगत

१९६७

C.K.Y.

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Har

078084

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

V2 1967

078084

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

हिंदी समाचार जगत

RT-0339

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

STOCK VERIFICATION
Central Library
2024-25 G.K.V.

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078084

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817। 66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 सितंबर 1967 अंक 1

- 0 भाषा-संगम (पंजाब का भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण)
- 0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद)
- 0 हिन्दी
  - * भारत सरकार में
  - * राजधानी में
  - * प्रादेशिक अंचल में
  - * विश्वविद्यालयों में
  - * विदेशों में
- 0 नए प्रकाशन

हिन्दी पुस्तकों की थोक खरीद

अहिंदी भाषी प्रदेशों के स्कूलों, कालेजों आदि को हिंदी पुस्तकें भेंट स्वरूप देने के उद्देश्य से निदेशालय ने 1967-68 में विभिन्न विषयों पर हिंदी की मौलिक एवं अनूदित पुस्तकों की थोक खरीद के लिए प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं और लेखकों से पुस्तकें आमंत्रित की हैं। प्रत्येक पुस्तक की तीन-तीन प्रतियां उप निदेशक (प्रकाशन), केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली को 15 सितम्बर 1967 तक पहुंच जाएं। विशेष विवरण के लिए कृपया 21-22 अगस्त 1967 के दैनिक समाचार पत्र देखें।

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा संगम

पंजाब का भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण

पंजाब सरकार ने पंजाब राज्य के भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण की योजना बनाई है। यह योजना पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के सहयोग से पंजाब सरकार के शिक्षा और भाषा विभागों की देख-रेख में चलाई जायगी। पूरी योजना को पूरा करने में लगभग पांच वर्ष लगेंगे और उस पर 30 से 40 लाख रुपये खर्च होंगे।

इस प्रकार का प्रथम वैज्ञानिक सर्वेक्षण 1894 में सर जार्ज एब्राहम ग्रियर्सन ने किया था। वे उस समय भारतीय सिविल सेवा के उच्च अधिकारी थे। तब से अब तक भाषा विज्ञान ने काफी उन्नति कर ली है। सर्वेक्षण के आधारभूत सिद्धान्त भी बदल गए हैं। टेप रिकार्डर, काइमोग्राफ, पैलेटोग्राफ, स्पीच स्ट्रैचर आदि अनेक यांत्रिक साधन उपलब्ध हैं। इनसे भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन में सहायता मिलती है। डा0 ग्रियर्सन के द्वारा किए गए भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण का बड़ा महत्व है परन्तु वह अब पुराना और दोषपूर्ण माना जाने लगा है। आधुनिक भाषा वैज्ञानिक उनके द्वारा प्रतिपादित अनेक सिद्धान्तों से सहमत नहीं हैं।

देश के विभाजन तथा अन्य कई कारणों से पंजाबी भाषी जनता का विस्थापन-पुनर्स्थापन हुआ है। फलतः पंजाब की विभिन्न बोलियों के क्षेत्रों की जो सीमाएं पहले निर्धारित की गई थीं, वे अब बदल गई हैं। विभिन्न बोलियां बोलने वाले लोग परस्पर अधिकाधिक संपर्क में आए हैं। पत्र-पत्रिकाओं, फिल्मों तथा शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ संस्कृत, हिंदी तथा अंग्रेजी का प्रभाव भी इन बोलियों पर पड़ा है इस कारण उनकी शब्दावली, वाक्य-विन्यास, बोलने के ढंग आदि में भी परिवर्तन आया है।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए पंजाब सरकार ने यह सर्वेक्षण हाथ में लिया है। इसके प्रमुख उद्देश्य हैं : भाषाओं और बोलियों के क्षेत्रों का सीमांकन, मिली-जुली जनता की नई पीढ़ी की बोलियों का अध्ययन और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्यांकन, विभिन्न बोलियों के ध्वनि ग्रामों का आतन लेखा, प्रत्येक बोली का ध्वनिरूपात्मक विश्लेषण और उसके आधार पर पंजाबी के आधुनिक व्याकरण का प्रतिपादन ।

इस सर्वेक्षण के और भी लाभ होंगे । विभिन्न भाषाओं और बोलियों के अध्ययन से पंजाबी भाषा का भाषा वैज्ञानिक एटलस तैयार किया जा सकेगा । पंजाबी की विभिन्न बोलियों के तुलनात्मक अध्ययन में सहायता मिलेगी । भारत की प्राचीन भाषाओं संस्कृत, पाली, प्राकृत आदि से पंजाबी का क्या संबंध है, यह प्रामाणिक रूप से जाना जा सकेगा । इस सर्वेक्षण के लिए जो आधारभूत सामग्री और आंकड़े एकत्र किए जाएंगे उनसे पंजाबी भाषा की अनेक ऐसी विशेषताओं का पता चलेगा जो अब तक भाषा वैज्ञानिकों को मालूम नहीं हैं । विभिन्न वर्गों, जातियों, समुदायों की बोलियों का गंभीर अध्ययन किया जाएगा । विभिन्न कार्य क्षेत्रों में प्रचलित शब्दावली का संग्रह किया जाएगा । उससे पंजाबी भाषा के वैज्ञानिक और शास्त्रीय शब्दकोश बनाने में सहायता मिलेगी । ये कोश आगे चलकर पंजाबी में वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य के निर्माण में सहायक होंगे ।

सर्वेक्षण के दौरान पंजाब के लोक-साहित्य का संग्रह करने की भी योजना है । पंजाब के 12000 गांवों में घूमफिर कर वहां के लोक-गीतों, लोक-कथाओं, कहावतों, मुहावरों, लोकोक्तियों, अनुश्रुतियों आदि का संकलन किया जाएगा । इससे पंजाब के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन में सहायता मिलेगी ।

सर्वेक्षण की सम्पूर्ण सामग्री जुटाने का दायित्व पंजाब सरकार के भाषा और शिक्षा विभागों पर है । सामग्री के अध्ययन, वर्गीकरण, विश्लेषण आदि का कार्य पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला की देख-रेख में होगा । इस कार्य के लिए पंजाबी विश्वविद्यालय में नए ढंग की भाषा वैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की जा रही है और इस महान अनुष्ठान को सम्पन्न करने के लिए योग्य और अनुभवी कार्यकर्ताओं का दल तैयार किया जा रहा है । आशा है, यह योजना नियत अवधि में पूर्ण हो जाएगी और उससे भाषा-विज्ञान के विद्यार्थी लाभान्वित होंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएं

गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद : संक्षिप्त परिचय

(गतांक से आगे)

प्रकाशन कार्य :

विद्यापीठ ने हिंदी-गुजराती और गुजराती-हिंदी कोश तैयार किए हैं। साथ ही विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिए पाठ्य-पुस्तकें तथा माध्यमिक स्कूलों के लिए आंतर-भाषा पाठावली की पुस्तकें भी तैयार की हैं। विद्यापीठ द्वारा अब तक 42 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं।

सम्मेलन :

विभिन्न क्षेत्रों के प्रचारकों का परस्पर सम्पर्क बनाए रखने के लिए तथा हिंदी अध्ययन-अध्यापन की समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए समय-समय पर ज़िला तथा राज्य-स्तर पर प्रचारकों के सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं।

भाषण तथा निबंध-लेखन प्रतियोगिताएं :

हिंदी के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए विभिन्न स्तरों के विद्यार्थियों के लिए भाषण-प्रतियोगिताएं तथा निबंध-लेखन-प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं।

विद्यापीठ इस ध्येय से काम कर रहा है कि समस्त देशवासियों को भारत की सभी प्रमुख भाषाएं पढ़ने की सुविधा प्राप्त हो और लोगों में दूसरी भाषाओं तथा उनके बोलने वालों के प्रति प्रेम बढ़े।

विद्यापीठक्को देश के मूर्धन्य नेताओं तथा विद्वानों से मार्ग-दर्शन मिलता रहा है। इस समय श्री मोरार जी भाई देसाई विद्यापीठ के कुलपति हैं, श्री ठाकोर भाई देसाई कुलनायक तथा श्री रामलाल पारीख महामात्र हैं। संस्था का मुख्य कार्यालय हिंदी भवन, अहमदाबाद-14 में स्थित है।

=== 000 ===

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

o हिंदी

* भारत सरकार में

केन्द्रीय कानूनों का हिंदी में अनुवाद

भारत सरकार ने दस सदस्यों की एक हिंदी सलाहकार समिति का गठन किया है। केंद्रीय अधिनियमों, विनियमों आदि का हिंदी में अनुवाद करने, समान विधि शब्दावली बनाने, कानून की शिक्षा के लिए हिंदी में पुस्तकें तैयार कराने तथा कानून से संबंधित प्रतिवेदन आदि हिंदी में प्रकाशित करने के विषय में भारत सरकार को परामर्श देना इस समिति का काम है। समिति में सर्वश्री गंगा शरण सिंह, प्रकाशवीर शास्त्री, नाथ पै, बी० के० पी० सिन्हा, सेठ गोविन्द दास, प्रो० सिद्धेश्वर प्रसाद, प्रो० एन० एन० मुखर्जी (सभी संसद सदस्य), पटना हाई कोर्ट के न्यायाधीश श्री एस० सी० मिश्र तथा श्री गोपीनाथ दीक्षित हैं। विधि-मंत्री श्री गोविन्द मेनन इस समिति के अध्यक्ष हैं।

निर्धन छात्रों के लिए पुस्तक बैंक की स्थापना

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री त्रिगुण सेन ने राज्य सभा में विनियोग विधेयक पर बहस के दौरान कहा कि निर्धन छात्रों को पाठ्य पुस्तकों की सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से इसी वर्ष पुस्तक बैंक की स्थापना की जाएगी। उन्होंने कहा कि सभी छात्रों को पढ़ाई की पुस्तकें मुफ्त मिलनी चाहिए। जब तक यह संभव नहीं होता तब तक पुस्तक बैंक से ही काम चलाया जाएगा। वहां से जरूरतमंद छात्र पुस्तकें प्राप्त कर सकेंगे।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी पुस्तकों के अनुवाद की योजना

शिक्षा मंत्रालय के राज्यमंत्री प्रो० शेरसिंह ने राज्य सभा में बताया कि सरकार विज्ञान तथा अन्य विषयों की विदेशी पुस्तकों के पुनर्मुद्रण और अनुवाद का विशाल कार्यक्रम शुरु करना चाहती है। भारतीय भाषाओं को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने में इससे सुविधा होगी।

हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की संख्या सर्वाधिक

प्रेस रजिस्ट्रार की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 1966 के अंत में कुल 10,085 पत्र-पत्रिकाएं थी। इनमें हिंदी की पत्र-पत्रिकाओं की संख्या सबसे अधिक अर्थात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1931 थी । 1966 में 601 दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित होते थे । इनमें से
हिंदी के 167 और अंग्रेजी के 61 नियत कालिक पत्रों की संख्या की दृष्टि से हिंदी
का स्थान अंग्रेजी के लगभग बराबर ही रहा । अंग्रेजी में कुल 1782 पत्र निकल रहे थे ।
इसकी तुलना में हिंदी में 1764 नियतकालिक पत्र थे । अंग्रेजी की पत्र-पत्रिकाओं की
खपत 55,60,000 रही । इसकी तुलना में हिंदी के पत्रों की 39,10,000 थी ।

यूनेस्को कूरियर (हिंदी) का विमोचन

यूनेस्को की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका 'कूरियर' के हिंदी संस्करण का विमोचन 8 अगस्त 1967 को शिक्षा सचिव श्री प्रेम कृपाल ने किया । शिक्षा मंत्री डा0 सेन का भाषण श्री प्रेमकृपाल ने पढ़कर सुनाया । डा0 सेन ने यूनेस्को के आमुख का उद्धरण देते हुए कहा कि मनुष्यों की भावनाएं ही युद्ध का कारण होती हैं इसलिए इन भावनाओं के आधार पर ही शांति की स्थापना की जानी चाहिए । मंत्री महोदय ने यह भी बताया कि 1969 में महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी के अवसर पर यूनेस्को की ओर से विश्व स्तर पर एक परिसंवाद का आयोजन किया जाएगा जिसका विषय होगा - विश्व शांति के संदर्भ में महात्मा गांधी का जीवन तथा उनकी कृतियां ।

संयुक्त शिक्षा सलाहकार डा0 परमेश्वरदीन शुक्ल ने अपने भाषण में आशा व्यक्त की कि हिंदी कूरियर के माध्यम से यूनेस्को के शान्ति सन्देश और राष्ट्र-भाषा हिंदी का देश में अधिकाधिक प्रचार होगा ।

पारिभाषिक शब्द-निर्माण की प्रगति

केंद्रीय शिक्षा राज्यमंत्री प्रो0 शेरसिंह ने एक प्रेस सम्मेलन में बताया कि एक दो विषयों को छोड़ कर सभी विषयों की हिंदी पारिभाषिक शब्दावलियां तैयार की जा चुकी हैं । इन शब्दावलियों को अन्य भारतीय भाषाओं में परिवर्तित करने का काम चौथी योजना के अंत तक पूरा हो जाएगा । इसके अतिरिक्त 131 पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं । इनमें 88 अनूदित और 43 मौलिक पुस्तकें हैं । राज्यमंत्री ने इस बात का खंडन किया कि पारिभाषिक शब्द अधिकांशतः संस्कृत से लिए गए हैं और 20 प्रतिशत शब्द क्षेत्रीय भाषाओं के हैं । शेष 80 प्रतिशत शब्द संस्कृत मूल पर आधारित हैं और वे अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रयुक्त होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

*राजधानी में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत सम्मेलन द्वारा राष्ट्रपति का अभिनंदन

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन ने 29 जुलाई, 1967 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन का अभिनंदन किया। राष्ट्रपति को संस्कृत में अभिनंदन-पत्र भेंट किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने आश्वासन दिया कि अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन को उनकी ओर से वैसा ही सहयोग मिलता रहेगा जो पूर्ववर्ती राष्ट्रपतियों से मिलता रहा है।

संस्कृत के बिना भारत भारत नहीं

केन्द्रीय पर्यटन मंत्री डा० कर्णसिंह ने श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ द्वारा आयोजित एक स्वागत समारोह में भाषण देते हुए कहा कि संस्कृत के उत्थान और विकास के लिए विशाल स्तर पर काम करने की आवश्यकता है। शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ जैसी संस्थाएं समस्त राज्यों में स्थापित होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि संस्कृत के बिना भारत, भारत नहीं रहेगा।

तुलसी जयंती समारोह

राजधानी की विभिन्न हिंदी संस्थाओं की ओर से 25 जुलाई 1967 को तुलसी जयंती के उपलक्ष्य में अनेक समारोह किए गए। एक समारोह में केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री श्री भागवत झा आज़ाद ने गोस्वामी तुलसीदासके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि जिस भाषा में लोकनायक तुलसी ने अपनी रामकथा गाई थी अब उसी भाषा के माध्यम से देश का कामकाज चलना चाहिए। हिंदी का विरोध करने वाले कुछ अंग्रेज़ी समाचार-पत्रों की भर्त्सना करते हुए उन्होंने कहा कि ये समाचार-पत्र समूचे देश का न तो प्रतिनिधित्व करते हैं और न उनका कोई विशेष महत्व है।

मुंशी प्रेमचंद को श्रद्धांजलि

राजधानी की हिंदी सेवी संस्थाओं की ओर से 1 अगस्त, 1967 को उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद का स्मृति दिवस मनाया गया। दरीबा हिंदी साहित्य सम्मेलन की एक सभा में केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन ने मुंशी प्रेमचन्द के चित्र पर पुष्पमाला चढ़ा कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

स्वर्गीय टंडन जी का जन्म दिवस समारोह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से सोमवार 7 अगस्त, 1967 को नई दिल्ली के टाउन हाल में राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन के जन्म दिवस पर एक समारोह आयोजित किया गया। इसमें अनेक प्रसिद्ध विद्वानों ने भाग लिया। इस अवसर पर सम्मेलन की ओर से नगर निगम की स्थायी समिति, कार्य समिति और साधारण सदस्यों से अनुरोध किया गया कि वे समस्त काम-काज के लिए हिंदी का ही उपयोग करें।

भाषाई पत्रों का विकास आवश्यक

भारत के उपराष्ट्रपति डा० वि० वि० गिरि ने बुधवार, 9 अगस्त, 1967 को भारतीय पत्रकारिता विद्यापीठ का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उपराष्ट्रपति ने भाषाई पत्रों के विकास की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। समारोह में संसदीय मामलों के मंत्री श्री राम सुभग सिंह, परिवहन उपमंत्री श्री भक्तदर्शन तथा संसद सदस्य सेठ गोविन्ददास ने भी भाग लिया।

भाषा संशोधन विधेयक पर प्रधान मंत्री का आश्वासन

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से चार हिंदी विद्वानों के एक शिष्टमंडल को आश्वासन दिया कि प्रस्तावित राजभाषा संशोधन विधेयक का उद्देश्य यह नहीं है कि उससे किसी एक राज्य को समस्त देश में हिंदी की प्रगति को रोकने का अधिकार मिल जाए। प्रधानमंत्री ने इस विधेयक के दो पहलू बताए हैं। पहला यह कि हिंदी को कोई राज्य सम्पर्क भाषा बनने से न रोक सके और दूसरा यह कि यदि कोई राज्य सरकारी काम-काज के लिए अंग्रेजी का इस्तेमाल करना चाहता है तो उसे ऐसा करने दिया जाए।

दिल्ली नगर निगम में हिंदी का प्रयोग

दिल्ली नगर निगम में तदर्थ हिंदी समिति का पुनर्गठन किया गया है। निगम का काम-काज अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी में चलाने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन देने के विचार से ही समिति स्थापित की गई थी। समिति के अध्यक्ष श्री बलराज खन्ना और उपाध्यक्ष श्री केदार नाथ साहनी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

केरल : हिंदी सलाहकार समिति तथा हिंदी शिक्षण कालेज

केरल के शिक्षा मंत्री श्री सी० एस० मोहम्मद कोया ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की केरल शाखा द्वारा आयोजित सभा में कहा कि सरकार हिंदी सलाहकार समिति की पुन: स्थापना करना चाहती है। इसके लिए हिन्दी प्रचार सभा जैसे संगठनों की सलाह तथा मदद ली जायगी।

उन्होंने यह भी कहा कि राज्य की शिक्षा संस्थाओं में सभी स्तर पर मलयालम भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए राज्य में स्थित विश्वविद्यालयों और कालेजों के प्रतिनिधियों तथा शिक्षा-शास्त्रियों का सम्मेलन बुलाया जाएगा।

तिरुवनन्तपुरम में हिंदी शिक्षण कालेज खोलने के लिए सरकार ने स्वीकृति दे दी है। कालेज इसी शिक्षा सत्र में खुल जायगा।

मैसूर : दीक्षान्त एवं सम्मान समारोह

मैसूर राज्य के मुख्य मंत्री श्री एस० निजलिंगप्पा की अध्यक्षता में कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति बंगलोर ने 13 अगस्त 1967 को द्वितीय दीक्षान्त समारोह का आयोजन किया। शिक्षा राज्य मंत्री प्रो० शेर सिंह ने दीक्षान्त भाषण दिया और केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो० चन्द्रहासन ने हिंदी के कतिपय विद्वानों और प्रचारकों को सम्मान स्वरूप शाल प्रदान किए।

पंजाब : पंजाबी समाचार एजेंसी की स्थापना

पंजाब सरकार सहकारी क्षेत्र में पंजाबी समाचार एजेंसी स्थापित करने के प्रस्ताव पर विचार कर रही है। सम्पादक और लेखक एजेंसी के सदस्य होंगे और उसे सरकार प्राथमिकता देगी।

कवि सम्मेलन का आयोजन

साहित्य प्रेरक संस्था, जीन्द ने स्वतंत्रता दिवस पर हरियाणा राज्य के कवि प्रो० उदयभानु 'हंस' के सम्मान में कवि सम्मेलन का आयोजन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी और पंजाबी - दोनों का विकास

पंजाब के श्रम मंत्री श्री कृष्ण लाल ने जैतू में भाषण करते हुए कहा कि पंजाब में हिंदी सम्पर्क भाषा के रूप में और पंजाबी राजभाषा के रूप में प्रयोग में लाई जाएगी।

हरियाणा : सचिवालय स्तर तक हिन्दी

हरियाणा के मुख्य मंत्री राव वीरेन्द्र सिंह ने कहा कि दो साल के भीतर सभी स्तरों पर हिन्दी भाषा लागू हो जाएगी। कुछ मंत्रियों ने अभी से हिंदी में कार्य शुरु कर दिया है।

उत्तर प्रदेश : हिंदी ही अपनानी होगी

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल डा० गोपाल रेड्डी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साहित्यिक गोष्ठी में मुख्य अतिथि पद से तेलुगू में भाषण करते हुए कहा : मुगल शासन काल में उर्दू की प्रधानता रही। ब्रिटिश शासन काल में उर्दू की प्रधानता धीरे-धीरे मिटती गई। स्वतंत्र भारत में अंग्रेजी की प्रधानता धीरे-धीरे मिटेगी। भारत के सर्वोच्च न्यायालय की भाषा हिंदी ही करनी होगी। हिन्दी ही अंग्रेजी का स्थान ले सकेगी। अहिन्दी भाषी प्रदेशों में उच्च स्तर पर हिंदी का अध्ययन होना चाहिए। अहिन्दी भाषी प्रदेशों में उच्च न्यायालयों, विधान मंडलों और विश्व-विद्यालयों की भाषा हिन्दी होनी चाहिए। क्षेत्रीय भाषाओं का भी समुचित विकास होना चाहिए।

शिक्षा का माध्यम हिन्दी

उत्तर प्रदेश के उप-मुख्य मंत्री श्री रामप्रकाश ने बताया कि राज्य में इसी वर्ष से सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम हिन्दी करने के लिए विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों को निर्देश दे दिए गए हैं।

उन्होंने विधि-छात्र सहायता पुस्तकागार का उद्घाटन करते हुए कहा कि छात्रों को हिन्दी स्थापित करने में सक्रिय होना चाहिए।

वित्त विभाग का समस्त कार्य हिन्दी में

उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्री श्री रामस्वरूप वर्मा ने उत्तर प्रदेश स्थानीय कोश लेखा परीक्षक संघ के वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि आगामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2 अक्तूबर से राज्य के वित्त विभाग का सारा कार्य पूरी तरह हिन्दी में होगा। उन्होंने यह भी कहा कि लेखा-परीक्षक को अपनी रिपोर्ट हिन्दी में ही तैयार करनी चाहिए।

इन्टर में हिन्दी अनिवार्य

उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री रामप्रकाश ने विधान सभा में घोषित किया कि इन्टरमीडिएट के छात्रों के लिए हिन्दी अनिवार्य विषय होगी।

पुरस्कार के लिए आयुर्वेदिक और तिब्बी पुस्तकें आमंत्रित

आयुर्वेदिक और तिब्बी अकादमी, तुलसीदास मार्ग, लखनऊ, उत्तर प्रदेश ने लेखकों से आयुर्वेद और यूनानी तिब्ब की उत्कृष्ट पुस्तकों पर पुरस्कार देने के लिए पुस्तकें आमंत्रित की हैं। आयुर्वेदिक पुस्तकें संस्कृत अथवा हिन्दी में और यूनानी तिब्ब की पुस्तकें उर्दू में 1964 के बाद लिखी गई अथवा प्रकाशित हुई हों। पुस्तकें भेजने की अन्तिम तिथि 15 सितम्बर 1967 है।

मध्य प्रदेश : हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में गति लाने के लिए मध्यप्रदेश सरकार ने अपने कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिता परीक्षाएं आयोजित करने का निश्चय किया है। प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वालों को 250, 200 और 100 रुपए के पुरस्कार दिए जायेंगे। सरकार ने यह भी तय किया है कि 65 प्रतिशत से अधिक अंक पाने वालों को दो अग्रिम वार्षिक वेतन वृद्धियां दी जाएंगी, 50 से 64 प्रतिशत पाने वालों को एक अतिरिक्त वार्षिक वेतन वृद्धि दी जायगी।

हिन्दी उत्तर की ही नहीं, दक्षिण की भाषा भी है

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के नए भवन का उद्घाटन करते हुए मैसूर के मुख्य मंत्री श्री एस० निजलिंगप्पा ने कहा कि हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो देश की एकता बनाए रखने में मदद कर सकती है। हिन्दी केवल उत्तर के कुछ राज्यों की ही नहीं बल्कि दक्षिण की भाषा भी है। आगे उन्होंने कहा कि दक्षिण में इसका कोई विरोध नहीं है। हमें राष्ट्रभाषा को अधिक सम्पन्न और स्वीकार्य बनाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद : हिन्दी विभाग

(गतांक से आगे)

गुजरात कालेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० गोवर्धन शर्मा के निर्देशन में निम्नलिखित छात्र शोध कर रहे हैं :

पंजीकृत विषय	अनुसंधित्सु
(1) सन्त रामचरण और रामस्नेही संप्रदाय	श्री अरविन्द शर्मा
(2) जैन रास साहित्य : 15 वीं शती तक	श्री अनन्तकुमार रेगाटिया
(3) प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास में सामाजिक चेतना	प्रो० अनरसिंह लोढ़ा
(4) उपन्यासकार जैनेन्द्र	श्री एस० एस० शेलकापी
(5) मीर काव्य परंपरा एवं गुजरात का अज्ञात कवि मीर मुराद	श्री चन्द्रकान्त मेहता

गुजरात विश्वविद्यालय से अब तक प्रो० रमाकांत शर्मा और प्रो० ए० एस० शुक्ल पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

विभागीय शोध परियोजना और प्रकाशन : डा० नागर की देख-रेख में गुजरात के सुप्रसिद्ध पुष्टिमार्गी कवि दयाराम के, ब्रज भाषा ग्रंथों के संग्रह एवं संपादन का कार्य हो रहा है।

इसके अतिरिक्त डा० नागर द्वारा संपादित "गुजरात के गौरव ग्रंथ" नामक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है तथा "दयाराम सतसई" और "गुजरात के संतों की हिंदी वाणी" प्रेस में हैं।

अंतस्संकाय शोध सेमिनार :

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर की ओर से 13 अगस्त से 17 अगस्त तक एक सेमिनार आयोजित किया गया। हिंदी, अंग्रेजी, शिक्षा, सामाजिक-विज्ञान आदि विभिन्न विषयों के शोध छात्रों को शोध प्रक्रिया से अवगत कराना इसका उद्देश्य था। सेमिनार में विभिन्न विश्वविद्यालयों से संबद्ध लगभग पच्चीस विद्वानों ने अपने निबंध पढ़े। सेमिनार का विस्तृत विवरण शीघ्र ही पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित होने वाला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के उपकुलपति प्रो० नंद दुलारे वाजपेयी (हाल ही में दिवंगत) ने सिंडिकेट के निर्णय की घोषणा करते हुए बताया कि अब डिग्री परीक्षाओं के लिए अंग्रेजी अनिवार्य विषय के रूप में नहीं रहेगी ।

जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर की कार्य-समिति ने पूरे बी०ए० पाठ्यक्रम में अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय बनाने का निर्णय किया है ।

बनारस विश्वविद्यालय कोर्ट ने स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं में हिंदी को माध्यम बनाने तथा अपने प्रशासन का काम-काज हिंदी में करने का निर्णय किया है

उपकुलपति श्री आर० के० नेहरू की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परिषद ने निर्णय किया है कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय में चालू सत्र से अंग्रेजी अनिवार्य विषय नहीं रहेगी ।

बिहार के विश्वविद्यालय आयोग तथा बिहार राष्ट्रभाषा परिषद के सदस्यों की संयुक्त बैठक में निर्णय किया गया है कि राज्य में विश्वविद्यालय की शिक्षा के सभी स्तरों पर हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए । इस कार्यक्रम के निरीक्षण और समन्वय के लिए राज्य के उपमुख्य मंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर की अध्यक्षता में 21 सदस्यों की एक केन्द्रीय समिति गठित की गई है जिसमें प्रमुख विद्वान, विशेषज्ञ तथा उपकुलपति शामिल हैं ।

अनिवार्य अथवा वैकल्पिक माध्यम के रूप में हिंदी या क्षेत्रीय भाषा

इस समय देश के अधिकांश विश्वविद्यालयों में एक या एक से अधिक पाठ्यक्रमों के लिए शिक्षा के माध्यम या वैकल्पिक माध्यम के रूप में हिंदी या किसी क्षेत्रीय भाषा की व्यवस्था है । इन विश्वविद्यालयों के नाम हैं : आगरा, इलाहाबाद, अन्नमलै, बनारस, भागलपुर, बिहार, बर्दवान, दिल्ली, गोरखपुर, गुजरात, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, जबलपुर, जादवपुर, जोधपुर, कर्नाटक, लखनऊ, मद्रास एम० एस० युनिवर्सिटी (बड़ौदा), मैसूर, मगध, नागपुर, उत्तर बंगाल, उस्मानिया, पंजाब, पंजाबी युनिवर्सिटी, पटना, पूना, रवीन्द्र भारती, राजस्थान, उदयपुर, रांची, सरदार पटेल युनिवर्सिटी, सागर, शिवाजी, इन्दौर, जीवाजी, रवि शंकर, एस० एन० डी० टी०, वाराणसेय संस्कृत विद्यापीठ, विक्रम और विश्वभारती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

रूस में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन

भारत और रूस के संबंध संभवत: दो हजार वर्ष पुराने हैं। उज़्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान और तुर्कमानिया में की गई खुदाई में उपलब्ध अभिलेख इसके प्रमाण हैं। पिछले पांच सौ वर्षों से भारत और रूस के सांस्कृतिक संबंध लगातार बढ़ते गए हैं। रूसी विद्वान भारत में आते रहे हैं और भारतीय संस्कृति, साहित्य और विभिन्न भाषाओं का अध्ययन करते रहे हैं। रूसी भाषा भारोपीय भाषा परिवार में नहीं मानी जाती, किन्तु संस्कृत-ईरानी भाषा वर्ग से उसका घनिष्ट संबंध है। वह संस्कृत के बहुत समीप है। उदाहरण के लिए कुछ रूसी शब्द देखिए: वोद (उदक), द्वोर (द्वा त्रि, चतिरि (चतुर), दा, वाम्, ग्रीवा, एस्त (अस्ति), सोखा (सुखा) आदि।

सोवियत रूस में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार का आरंभ अक्टूबर 1917 से समझना चाहिए जब वहां राष्ट्रनेता लेनिन के आदेश से महान् रूसी साहित्यकार गोर्की के नेतृत्व में प्राच्य विद्या विभाग की स्थापना हुई। इसी विभाग के अंतर्गत भारत-विद्या (इंडोलाजी) का भी अध्ययन प्रारंभ हुआ। इस प्रकार भारतीय संस्कृति, दर्शन, शास्त्र, साहित्य और भाषाओं का विधिवत् अध्ययन प्रारंभ हुआ।

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद सोवियत संघ में आधुनिक भारतीय भाषाओं और साहित्य के प्रति विशेष अभिरुचि जागृत हुई। भारतीय भाषाओं के प्रख्यात साहित्यकारों की कृतियों का रूसी में अनुवाद प्रारंभ हुआ। संस्कृत, पाली, हिन्दी, उर्दू आदि भारतीय भाषाओं के प्रसिद्ध रूसी विद्वान् वारान्निकोव ने प्रेमसागर और रामचरित-मानस का रूसी में अनुवाद किया जो बहुत ही लोकप्रिय हुआ।

हिंदी लेखकों में मुंशी प्रेमचन्द रूस में बहुत लोकप्रिय हैं। उनकी 16 रचनाएं अब तक रूसी में प्रकाशित हो चुकी हैं। हिंदी के अन्य लेखकों में कामता प्रसाद गुरु, किशोरी दास वाजपेयी, सुमित्रानंदन पंत, निराला, बच्चन, दिनकर, यशपाल, जैनेन्द्र, डा० राम कुमार वर्मा, इलाचंद्र जोशी, वृंदावन लाल वर्मा, अमृतलाल नागर, रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, नागार्जुन, धर्मवीर भारतीय, राजेन्द्र यादव आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनकी रचनाएं रूसी में अनूदित हो चुकी हैं।

(क्रमश:)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृ०सं०	मूल्य
रामनारायण बेनीप्रसाद, इलाहाबाद :				
युद्ध के साधन और साध्य	मेजर आर० सी०	सैन्य विज्ञान	461	8-00
रूप रश्मि	डा० गजानन शर्मा	नाटक	150	3-00
सूरज नया पुरानी धरती	डा० श्याम नन्दन	नाटक	60	2-00
भारत में सामुदायिक विकास	विजय प्रताप सिंह	अर्थशास्त्र	429	10-00
राज्य सिद्धान्त	वी० सी० श्रीवास्तव	राजनीति	552	8-00
साहित्य सदन, चिरगांव, झांसी :				
जवाहर भाई	राय कृष्ण दास	जीवन-चरित्र	119	11-00
रणजीत प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, 4872, चांदनी चौक, दिल्ली-6 :				
कालिदास नमामि	भगवतशरण उपाध्याय	निबन्ध संग्रह	160	7-50
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-7 :				
उपन्यासकार भगवती प्रसाद वाजपेयी	डा० ललित शुक्ल	आलोचना	168	6-00
मुकदमा-ए-शेर-ओ-शायरी	हंसराज रहबर सुरेश चन्द्र गुप्त ख्वाजा बदी उज्जमा	अनुवाद	172	7-50
बूंद नेह की दीप हृदय का	महेन्द्र भटनागर	कविता संग्रह	104	5-00
नरेन्द्र शर्मा और उनका काव्य	लक्ष्मी नारायण शर्मा	आलोचनात्मक निबन्ध	142	6-00
कला और नारी	डा० सावित्री सिन्हा	,,	222	8-00
वैदिक व्याकरण	डा० रामगोपाल	संस्कृत व्याकरण	467	15-00
[illegible] प्रकाशन, कलकत्ता :				
दूसरी व्याख्या	शरद देवड़ा	कथा प्रयोग	131	3-00
कलकत्ता कथा यात्रा	,,	बंगला कहानियां	296	10-00
विवर	,,	उपन्यास	147	6-00
एक आलोचक की नोट बुक	,,	आलोचनात्मक निबन्ध	128	4-50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोक समाचार

आधुनिक हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ समीक्षक तथा विक्रम विश्वविद्यालय के उपकुलपति आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी तथा प्रसिद्ध समालोचक श्री शांति प्रिय द्विवेदी के आकस्मिक निधन पर 'हिन्दी समाचार जगत' शोक प्रगट करता है।

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के दो महत्वपूर्ण प्रकाशन

भाषा (त्रैमासिक)

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की समस्याओं से संबंधित प्रश्नों पर विचारों के आदान-प्रदान का एक मात्र मंच। समय-समय पर प्रकाशित विशेषांक पत्रिका के अतिरिक्त आकर्षण हैं।

मूल्य : एक प्रति : 2-00 रुपये। वार्षिक 7-50 रुपये।

हिंदी कूरियर

विश्व की अनेक भाषाओं में प्रकाशित यूनेस्को कूरियर का हिंदी संस्करण जिसमें शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र की अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों पर महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की भावना से प्रेरित यह पत्र शिक्षण संस्थाओं तथा पुस्तकालयों आदि के लिए अमूल्य है।

मूल्य : एक प्रति : एक रुपया। वार्षिक : 10-50 रुपये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
078084
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्त्सेफ
   अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use)
   लेखक : ए० एफ० यौफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या : 125 मूल्य : 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry)
   ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु० हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : श्री० कुद्रयावत्सेव
   अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले० डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ : 183 मूल्य : 4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर
   अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं० : 268 मूल्य : 8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा
    अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले० वी० फेडिंस्की अनु० पवनकुमार जैन पृष्ठ : 122 मूल्य : 2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स
    अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses)
    ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य : 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर
    अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ : 142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक : परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12-12-67

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2

अंक 2

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

सत्यमेव जयते

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817166

जय हिंदी : जय नागरी

हिन्दी समाचार जगत

वर्ष 2 अक्तूबर 1967 अंक 2

0 भाषा-संगम (उत्तरप्रदेश में दक्षिणी भाषाएं पढ़ने में विशेष रुचि)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा)

0 हिन्दी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

मुझे उस अंग्रेजी की जरूरत नहीं जो मुझे मेरे भाइयों से बेगाना करे, मेरे 98 प्रतिशत देशवासियों को अपनी ही जन्मभूमि में विदेशी बना दे और स्वयं एक विशिष्ट शोषक वर्ग की समृद्धि की निशानी बनी रहे। मैं उस अंग्रेजी का स्वागत करता हूं जो मुझे विश्व का परिचय देती और मेरे देश की भाषाओं की सामर्थ्य बढ़ाने में सहायक होती है।

- शिक्षा मंत्री, डा० त्रिगुण सेन

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 15।16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा संगम

उत्तर प्रदेश में दक्षिणी भाषाएं पढ़ने में विशेष उत्साह :

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के सचिव श्री आंजनेय शर्मा ने एक वक्तव्य में कहा कि उत्तर प्रदेश में दक्षिणी भाषाओं के प्रचार के लिए बड़ा उत्साह है और राज्य सरकार भी उसमें खूब दिलचस्पी ले रही है।

उन्होंने कहा कि उत्तरप्रदेश सरकार ने लखनऊ, इलाहाबाद, कानपुर, अलीगढ़, वाराणसी, बरेली, मेरठ, फांसी तथा गोरखपुर केन्द्रों में दक्षिण की दो-दो भाषाएं सिखाने के लिए अनेक केन्द्रों की स्थापना की है। इस समय कुल सात केन्द्रों में तमिल, सात केन्द्रों में तेलुगु तथा चार-पांच केन्द्रों में कन्नड़ की कक्षाएं चल रही हैं। हर एक भाषा के लिए अलग-अलग विद्यार्थी भर्ती किये जाते हैं। दो साल की पढ़ाई के बाद उत्तरप्रदेश सरकार की तरफ से डिप्लोमा परीक्षा ली जाती है और उत्तीर्ण विद्यार्थियों को डिप्लोमा दिया जाता है।

कक्षाएं शाम को चलती हैं। बी०ए०-पास शिक्षकों को 150 रु० और मैट्रिक-पास शिक्षकों को 100 रु० मासिक पारिश्रमिक दिया जाता है। एम०ए० पास अध्यापकों को 250-550 तक वेतन-क्रम मंजूर हुआ है। आन्ध्रप्रदेश सरकार ने तीन अध्यापक उत्तरप्रदेश भेजे हैं। उत्तरप्रदेश सरकार के अधीन रहकर वे तेलुगु कक्षा का संचालन कर रहे हैं। डिप्लोमा परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पहले साल 200 रु० और दूसरे साल 250 रु० नकद पुरस्कार दिया जाता है। सब से ज्यादा अंक पाने वाले पांच विद्यार्थियों को सरकारी खर्च से दक्षिण की यात्रा पर भेजा जाता है और वहां जनता के साथ सम्पर्क की सुविधा प्रदान की जाती है। अभी तक लगभग 650 विद्यार्थियों ने इस योजना से लाभ उठाया है। इससे प्रोत्साहित होकर उत्तर प्रदेश सरकार तथा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ने मिलकर भविष्य में इस कार्य को एक अभियान के रूप में चलाने का निश्चय किया है। उत्तरप्रदेश सरकार ने अपने बजट में इस कार्य के लिए करीब दो लाख रु० गुंजायश रखी है। आशा है, यह कार्य उत्तरप्रदेश में ही नहीं, अन्य हिन्दी भाषी प्रान्तों में भी वेग से चल सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएं :

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा : एक परिचय

सन् 1918 से 1936 तक हिन्दी प्रचार का आंदोलन दक्षिण भारत तक ही सीमित था । इस आंदोलन के प्रति जनसाधारण में जो उत्साह दिखाई दिया उससे प्रेरणा पाकर महात्मा गांधी और दूसरे नेताओं ने अन्य प्रदेशों में हिंदी प्रचार की आवश्यकता अनुभव की । सन् 1936 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नागपुर अधिवेशन में, जिस के अध्यक्ष श्रद्धेय राजेन्द्र बाबू थे, दक्षिणेतर अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिंदी प्रचार का काम आरंभ करने का प्रस्ताव पास हुआ । इस प्रस्ताव के अनुसार हिंदी प्रचार समिति वर्धा की स्थापना हुई, जिसका नाम बाद में हिंदी साहित्य सम्मेलन के 27वें अधिवेशन के एक निर्णय के अनुसार 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' रखा गया । समिति के संस्थापक सदस्यों में महात्मा गांधी, डा0 राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, जमना लाल बजाज, आचार्य नरेन्द्रदेव, काका कालेलकर, बाबा राघवदास, शंकरराव देव, माखन लाल चतुर्वेदी, वियोगी हरि, हरिहर शर्मा, ब्रिजलाल बियाणी, नर्मदा सिंह, श्रीनाथ सिंह और लोक सुंदरी रमन आदि देश के मूर्धन्य नेता और साहित्यकार थे ।

समिति के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए प्रारंभ में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अनुभवी कार्यकर्ता श्री मो0 सत्यनारायण और पं0 हरिहर शर्मा को दक्षिण भारत से वर्धा बुलाया गया । स्व0 श्री जमनालाल बजाज के प्रयत्नों से समिति को सेठ पद्मपत सिंघानिया से 75 हजार रुपये हिंदी प्रचार के लिए सहायता स्वरूप मिले जिससे समिति की बहुत-सी आर्थिक कठिनाइयां दूर हो गईं । समिति के उपाध्यक्ष श्री काका कालेलकर ने भारत के विभिन्न प्रदेशों में प्रचारार्थ दौरा किया और जगह-जगह हिंदी प्रचार समितियां गठित कीं । इन प्रयत्नों के फलस्वरूप दो-तीन वर्षों में ही हिन्दी प्रचार का कार्य गुजरात, बम्बई, महाराष्ट्र, उड़ीसा, असम, बंगाल, सिंध आदि हिंदीतर प्रदेशों में सुचारु रूप से चलने लगा । इस समय असम, बंगाल, मणिपुर, उत्कल, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, बम्बई, बिहार, नागपुर, दिल्ली,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मराठवाडा, कर्नाटक, हैदराबाद, काश्मीर, गोवा, बेलगांव और पंजाब में प्रांतीय समितियां कार्य कर रही हैं।

इसके अतिरिक्त विदेशों में इस समय लंका, बर्मा, अफ्रीका, श्याम, जावा, सुमात्रा, मारिशस, अदन, सूडान, इंग्लैंड तथा जापान आदि देशों में समिति के केन्द्र हैं तथा राष्ट्रभाषा के हितैच्छु वहां हिंदी प्रचार का काम कर रहे हैं। इन केन्द्रों से प्रतिवर्ष हजारों विद्यार्थी समिति की परीक्षाओं में बैठते हैं। विदेशों में हिंदी सीखने के लिए सबसे अधिक उत्साह दक्षिण अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीका में दिखाई पड़ता है।

परीक्षाएं :

समिति 1937 से विभिन्न परीक्षाओं का संचालन करती आ रही है। इस समय विभिन्न प्रचार केन्द्रों से जिन परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी तैयार किए जाते हैं उनके नाम हैं – राष्ट्रभाषा प्राथमिक, राष्ट्रभाषा प्रारंभिक, राष्ट्रभाषा प्रवेश, राष्ट्रभाषा परिचय, राष्ट्रभाषा कोविद, राष्ट्रभाषा रत्न, राष्ट्रभाषा आचार्य, राष्ट्रभाषा अध्यापन कोविद, राष्ट्रभाषा अध्यापन विशारद, राष्ट्रभाषा महाजनी प्रवेश और राष्ट्रभाषा बातचीत। इन परीक्षाओं में प्रतिवर्ष हजारों विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं। अब तक लगभग 42 लाख परीक्षार्थी इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो चुके हैं। समिति की परीक्षाओं को सर्वत्र आदर प्राप्त है। केन्द्रीय सरकार के विभिन्न विभागों, राज्य सरकारों और विश्वविद्यालयों ने समिति की परीक्षाओं को मान्यता प्रदान की है।

मान्यता :

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने समिति की राष्ट्रभाषा परिचय, राष्ट्रभाषा कोविद तथा राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षाओं को क्रमशः मैट्रिक, इण्टर तथा बी० ए० की हिंदी योग्यताओं के समकक्ष मान्यता प्रदान की है।

विभिन्न राज्य सरकारों ने भी अपने यहां कार्यालयों तथा शिक्षण संस्थाओं में सेवा नियुक्ति के लिए इन परीक्षाओं को मान्य किया है। इनका विवरण अगले अंक में दिया जायगा।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

भारत सरकार में

गृह मंत्रालय : सर्वोच्च हिंदी-समिति गठित

राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए केंद्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा किए जा रहे कार्यों में तालमेल कायम करने के लिए सरकार ने एक सर्वोच्च -स्तरीय हिंदी समिति बनाने की घोषणा की है। प्रधान-मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी इस समिति की अध्यक्षा होंगी।

उप प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई, गृहमंत्री श्री यशवंतराव चव्हाण, शिक्षामंत्री डा० त्रिगुण सेन, सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री के० के० शाह और विधि मंत्री श्री पी० गोविन्द मेनन के अतिरिक्त संसत्सदस्य श्री गंगाशरण सिंह सेठ गोविन्ददास, श्री जी सुब्रह्मण्यम, श्री प्रकाशवीर शास्त्री, श्री उमाशंकर दीक्षित और श्री नाथ पै सदस्य नामित किए गए हैं।

भारत सरकार के हिंदी सलाहकार श्री रामधारी सिंह `दिनकर` समिति के सदस्य -सचिव होंगे। समिति का सचिवालय नई दिल्ली में होगा।

शिक्षा मंत्रालय : वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली

शिक्षामंत्री डा० त्रिगुणसेन ने राज्यों के शिक्षा मंत्रियों की उपस्थिति में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के केंद्रीय सलाहकार बोर्ड की चौथी बैठक के अवसर पर सात शब्दावलियों का विधिवत् विमोचन किया। इनमें विज्ञान, इंजीनियरी, कृषि, आयुर्विज्ञान और मानविकी के विभिन्न 48 विषयों से संबंधित अंग्रेजी तकनीकी शब्दों के हिंदी पर्याय दिए गए हैं।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग अब तक 12 शब्दावलियां प्रकाशित कर चुका है। इनमें स्नातक -स्तर के लगभग सभी विषयों के तकनीकी शब्द आ गए हैं। इनकी सहायता से अब हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में विश्वविद्यालय-स्तर की पाठ्य-पुस्तकें तैयार की जा सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अवसर पर विज्ञान भवन में हिंदी और भारतीय भाषाओं में उपलब्ध विश्वविद्यालय-स्तर की पुस्तकों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन मद्रास के शिक्षा-मंत्री ने किया। इसमें स्नातक-स्तर की लगभग चार हजार पुस्तकों को भाषावार और विषयवार प्रदर्शित किया गया था।

क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य निर्माण के लिए विपुल धनराशि

अंग्रेजी के स्थान पर क्षेत्रीय भाषाओं को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने की दृष्टि से इन भाषाओं में साहित्य-निर्माण के कार्यक्रम के लिए भारत सरकार ने 18 करोड़ रु० स्वीकृत किए हैं।

11 सितम्बर को उपकुलपति-सम्मेलन में केंद्रीय शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन ने कहा कि यह सोचना सरासर गलत है कि क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग के लिए राज्य सरकारों का समर्थन पाने के लिए यह धनराशि दी जा रही है।

इस अवसर पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने भारतीय भाषाओं में कालेज स्तर की पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन किया। मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० ए० एल० मुदलियार ने प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कहा : मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि उपकुलपतियों के सम्मेलन के अवसर पर कालेज स्तर की 4000 पुस्तकों की यह प्रदर्शनी आयोजित की गई है। मैं स्वयं एक लेखक हूं। मेरी सलाह है कि प्रत्येक भारतीय लेखक को अपनी अंग्रेजी पुस्तकों का अनुवाद अपनी भाषा में स्वयं ही करना चाहिए।

केंद्रीय कानूनों का हिंदी अनुवाद:

हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में विधि साहित्य का अनुवाद करने के प्रश्न पर विचार करने के लिए आयोजित, राज्यों के विधि-मंत्रियों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए उप प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने कहा कि सभी केंद्रीय कानूनों का हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद पांच वर्ष में पूरा हो जाना चाहिए। न्यायालयों में भारतीय भाषाओं के प्रयोग पर बल देते हुए उन्होंने कहा : यदि भारत का प्रशासन जनता की सरकारों से, जनता द्वारा, जनता के लिए संचालित है तो प्रशासन की भाषा भी जनता की भाषा ही होनी चाहिए।

निश्चित अवधि में यह अनुवाद कार्य पूरा करने के लिए राजभाषा विधायी आयोग में प्रत्येक भाषा के लिए एक सदस्य तथा अन्य सहायक अधिकारियों की नियुक्ति करने की व्यवस्था की जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी में : हिंदी दिवस का आयोजन

संविधान सभा ने सन् 1949 में 14 सितम्बर को हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया था । यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक निर्णय था । अत: यह दिन प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

राजधानी में संसदीय हिंदी परिषद्, दिल्ली प्रादेशिक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा आदि सात संस्थाओं के सम्मिलित तत्वावधान में गत 14 सितम्बर को संसद भवन के केंद्रीय कक्ष में हिंदी-दिवस समारोह का आयोजन किया गया । केंद्रीय शिक्षा मंत्री डा0 त्रिगुण सेन ने समारोह का उद्घाटन करते हुए कहा: जो कमल की प्रत्येक पंखुड़ी एक ही कमल का अंग होती है उसी तरह भारत की सभी भाषाएं राष्ट्रीय सम्पत्ति हैं । भारतीय संस्कृति और परंपरा की आत्मा सभी भाषाओं में समान रूप से विद्यमान है । यदि इस ध्येय और भावना से हम भाषाएं सीखेंगे तो भाषा-विवाद अपने आप ही समाप्त हो जाएगा ।

डा0 सेन ने सभी भारतीय भाषाओं के प्रति आत्मीयता की भावना पर बल देते हुए कहा: हिंदी वालों को देश में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए देश की अन्य भाषाओं को सीखना चाहिए । भाषाओं में पारस्परिक आदान-प्रदान जितना अधिक होगा वे उतनी ही समृद्ध और भाव-अभिव्यक्ति में समर्थ होंगी । शिक्षा मंत्री ने इस बात पर भी बल दिया कि हिंदी में मौलिक ग्रंथों का प्रणयन होना चाहिए जिससे अन्य भाषा-भाषी उसकी ओर आकर्षित हों ।

राज्य सभा के सदस्य और हिंदी के सुविख्यात कवि डा0 हरिवंशराय बच्चन ने अपने भाषण में कहा: हिंदी एक भाषा ही नहीं है अपितु यह देश की महिमा, गरिमा और एकता का एक सुन्दर सपना भी है । इस सपने को पहले हिंदी वालों ने नहीं अपितु अहिंदी भाषियों ने देखा था । स्वामी दयानन्द, शारदाचरण मित्र और महात्मा गांधी में से कोई भी हिंदी भाषी नहीं था । अन्य वक्ताओं में डा0 रामधारी सिंह "दिनकर", भदन्त आनन्द कौसल्यायन और [illegible] चौधरी के नाम उल्लेखनीय हैं । समारोह की अध्यक्षता श्रीमती (डा0) सरोजिनी महिषी ने की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी फिल्म को राष्ट्रपति का स्वर्णपदक

हिंदी फिल्म 'तीसरी कसम' को 1966 की सर्वश्रेष्ठ फिल्म घोषित किया गया है। इसे राष्ट्रपति का स्वर्णपदक प्रदान किया जाएगा। फिल्म के निर्माता श्री एस० के० शैलेन्द्र को 20 हजार रुपए का (करमोत्तर) नकद पुरस्कार और इसके निर्देशक श्री बी० भट्टाचार्य को 10 हजार रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। चिल्ड्रन्स फिल्म सोसाइटी की रंगीन बाल-फिल्म 'जैसे को तैसा' को प्रधानमंत्री का स्वर्णपदक प्रदान किया जाएगा। हिंदी फिल्म 'अनुपमा' को क्षेत्रीय पुरस्कार के लिए चुना गया है।

हिंदी भारत की आत्मा है।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के कार्याध्यक्ष डा० टी० अमीरुद्दीन अहमद ने दिनांक 7-8-67 को अपने सम्मानार्थ विट्ठलभाई पटेल भवन में आयोजित समारोह में भाषण करते हुए कहा: हिंदी भारतवर्ष की आत्मा है तथा इसका किसी संप्रदाय अथवा दल विशेष से कोई संबंध नहीं है।

गांवों में पुस्तक प्रचार योजना

गांवों में पुस्तकों को लोकप्रिय बनाने और ग्रामीण जनता की पठन-रुचि का सर्वेक्षण करने के उद्देश्य को सामने रखते हुए 'यूनेस्को' ने हिंदी भाषी क्षेत्रों के पांच प्रमुख नगरों (जयपुर, वाराणसी, दिल्ली, इन्दौर और इलाहाबाद) के निकटवर्ती छः - छः गांवों में परीक्षणात्मक केंद्र खोलने की योजना बनाई है, जिसका संचालन अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ कर रहा है।

दिल्ली क्षेत्र में ये केंद्र अलीपुर, बादली, प्रह्लादपुर, नंगल ठाकरान, बवाना और नांगलोई में एक मास के लिए खोले जाएंगे।

हिंदी व्रत लेने की अपील

राजधानी के विभिन्न हिंदी प्रेमी संगठनों एवं व्यक्तियों ने एक अपील में जनता से आग्रह किया है कि वह अपना काम-काज हिंदी में करने का व्रत लें।

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद ने कार्यालयों में हिंदी में काम-काज के लिए पत्र-व्यवहार, टिप्पणी-लेखन आदि अपने प्रकाशन निःशुल्क देने की व्यवस्था की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रादेशिक अंचल में :

केन्द्रीय राज्य शिक्षा मंत्री का साहित्यिक दौरा

सितम्बर मास में राज्य शिक्षा मंत्री प्रो० शेर सिंह ने देश के विभिन्न भागों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने वाली हिन्दी सेवी संस्थाओं द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार के साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए रोहतक, बम्बई, हैदराबाद, मद्रास, तिरुवनन्तपुरम्, कोच्चिन और कलकत्ता की यात्रा की। प्रमुख आयोजक संस्थाओं के नाम हैं : हरियाणा हिंदी साहित्य परिषद (रोहतक) फेडरेशन आफ पब्लिशर्स एण्ड बुकसेलर्स एसोसिएशन्स इन इण्डिया और केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद (बम्बई), आर्य प्रतिनिधि सभा, मारवाड़ी हिंदी विद्यालय, हिंदी महाविद्यालय और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (हैदराबाद), पश्चिम बंगाल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, कलकत्ता हरियाणा छात्र परिषद, (कलकत्ता), केरल हिंदी प्रचार सभा (तिरुवनन्तपुरम्), दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम् और एरणाकुलम् । मंत्री महोदय ने केरल विश्वविद्यालय हिंदी संघ का उद्घाटन किया । महाराजा कालेज एरणाकुलम् के हिंदी शिक्षकों और छात्रों की ओर से उनका सम्मान-समारोह आयोजित किया गया । मंत्री महोदय की केरल यात्रा में केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो० चन्द्रहासन उनके साथ रहे ।

मैसूर : कांग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज की अपील :

वेल्लोर के कालेज में छात्रों की सभा में भाषण करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष श्री कामराज ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को हिंदी सीखने का प्रयत्न करना चाहिए। उन्होंने आश्वासन दिया कि हिंदी किसी पर लादी नहीं जाएगी ।

मैसूर, केरल व आन्ध्र द्वारा हिंदी सम्पर्क भाषा स्वीकृत :

मैसूर के मुख्य मंत्री श्री निजलिंगप्पा ने बंगलोर में कहा कि मैसूर, केरल तथा आंध्र प्रदेश ने हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है । मैसूर के हाई स्कूलों में हिंदी अनिवार्य विषय है । उनके कथनानुसार मद्रास में हजारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि हिंदी सीख रहे हैं । आन्ध्र में हिंदी की शिक्षा के मामले में मद्रास पीछे नहीं है । उन्होंने संवाददाताओं को बताया कि हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो सारे देश की सम्पर्क भाषा बन सकती है । हिंदी भाषी लोगों को चाहिए कि वे दक्षिण की एक भाषा सीखें । ये भाषाएं भी हिंदी की तरह समृद्ध हैं इससे राष्ट्र की एकता में सहायता मिलेगी । हिंदी में तकनीकी शब्दावली तैयार करते समय अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी लिया जाना चाहिए ।

मैसूर रियासत हिन्दी प्रचार समिति के दीक्षान्त अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए उपराष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने कहा : हिंदी अभी नहीं तो कुछ समय बाद देश की सम्पर्क भाषा अवश्य हो जायगी । हिंदी को देश भर में द्रुत गति से फैलाना चाहिए ।

<u>महाराष्ट्र</u> : <u>विद्वानों से भारतीय भाषाओं में ग्रंथ लिखने की अपील</u> :

वैदिक विद्वान महामहोपाध्याय पं० सिद्धेश्वर शास्त्री के सम्मान में "गत 75 वर्षों में भारतीय विद्या के क्षेत्र में किए गए अनुसंधानों की समीक्षा " शीर्षक ग्रंथ का औपचारिक विमोचन करते हुए, राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने बुद्धिजीवियों को सम्बोधित करते हुए कहा : आपको अपने ग्रंथ लिखने के लिए भारतीय भाषाओं का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए ताकि आपका ज्ञान भारत की जनता तक पहुंच सके ।

<u>शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो</u> :

गृह मंत्री श्री यशवन्तराव चव्हाण ने कोंकण एजुकेशन सोसाइटी के के० जी० सोमैया कालेज आफ आर्ट्स एण्ड साइंस के शिलान्यास समारोह में कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं को विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम होना चाहिए । उन्होंने कहा कि शिक्षा की भाषा और आम बोलचाल की भाषा एक होनी चाहिए । भारत के पिछड़ेपन का मुख्य कारण शिक्षा की भाषा व बोलचाल की भाषा का भिन्न-भिन्न होना ही है । बच्चों को सभी स्तरों पर उसकी मातृभाषा में शिक्षा मिलनी चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल : हिंदी सेवा संघ (सिलीगुड़ी) पुस्तकालय का उद्घाटन :

गत 14 सितम्बर को श्री अरुण कुमार मैत्र, विधायक ने हिंदी सेवा संघ द्वारा स्थापित पुस्तकालय का उद्घाटन करते हुए कहा कि हिंदी ही सारे देश में सम्पर्क भाषा का स्थान ग्रहण कर सकती है और भावनात्मक एकता को सुदृढ़ बना सकती है। उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं के विकास पर भी बल दिया। इस अवसर पर एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया और एक विज्ञप्ति द्वारा हिंदी को अधिकाधिक व्यवहार में लाने के लिए अपील की गई।

उत्तर प्रदेश : वित्त मंत्री श्री रामस्वरूप वर्मा ने सीतापुर की एक सार्वजनिक सभा में कहा कि जिस वित्त विभाग के बारे में यह कहा जाता था कि उसका काम हिंदी में करना कठिन होगा वहां के सारे कार्य 8 अप्रैल से हिंदी में आरम्भ कर दिए गए थे और अब तक कोई कठिनाई नहीं हुई है।

न्यायालयों में हिंदी ही सम्पर्क भाषा हो सकती है :

केन्द्रीय उप विधि-मंत्री श्री डी0 आर0 चव्हाण ने इलाहाबाद में कहा कि उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय में सम्पर्क भाषा का होना नितान्त आवश्यक है। यह सम्पर्क भाषा केवल हिंदी ही हो सकती है। मद्रास को छोड़ सभी राज्यों के विधि मन्त्रियों ने यह बात मान ली है। इसलिए आज नहीं तो कल हमें हिंदी को अपनाना ही होगा।

पंजाब : प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त हिंदी माध्यम रहे :

शिक्षा के माध्यम के संबंध में शिक्षा मंत्री श्री हरिद्वारी लाल ने कहा कि विश्वविद्यालय स्तर पर केवल प्रादेशिक भाषाओं को ही शिक्षा का माध्यम नहीं बनाना चाहिए। अपितु जिन राज्यों की भाषा हिंदी के अलावा कोई और है, वहां प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त शिक्षा का माध्यम हिंदी भी होनी चाहिए।

राजस्थान : पूर्ण हिंदीकरण की दिशा में एक और कदम :

मुख्य सचिव श्री के0पी0यू0 [illegible] ने एक परिपत्र द्वारा सभी विभागाध्यक्षों को आदेश दिए हैं कि नियुक्ति, पदोन्नति, वेतनवृद्धि और सेवानिवृत्ति आदि से संबंधित सभी प्रशासनिक आदेश तथा [illegible] हिंदी में जारी होंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी पर्याय टेलीफोन सेवा

राजस्थान सरकार के सचिवालय में काम कर रहे किसी अधिकारी को कोई टिप्पणी लिखते समय यदि हिंदी का उपयुक्त शब्द न मिले तो वह एक निर्धारित नंबर पर फोन करेगा और उसे अंग्रेजी शब्द का हिंदी पर्याय तत्काल मिल जाएगा।

इस टेलीफोन सेवा का शुभारंभ जयपुर में गत 14 सितंबर को हो चुका है।

मध्य प्रदेश : मध्यप्रदेश साहित्य परिषद द्वारा उत्तम पुस्तकों पर पुरस्कार

मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद ने 1965 के पुरस्कारों के लिए आमंत्रित पुस्तकों पर 6 अखिल भारतीय तथा 10 प्रादेशिक पुरस्कारों की घोषणा की है।

अखिल भारतीय पुरस्कारों में श्री कृष्ण किशोर श्रीवास्तव को उनकी पुस्तक आदमी के टुकड़े पर 2500 रु0 तथा अन्य 4 को 1500-1500 रु0 के पुरस्कार मिले हैं। परिषद ने 1966 के 12 अखिल भारतीय तथा 18 प्रादेशिक पुरस्कारों के लिए पुस्तकें आमंत्रित करने का भी निश्चय किया है।

परिषद ने यह भी निश्चय किया कि भविष्य में विविध विषयों पर प्रकाशित उत्कृष्ट ग्रंथों का मूल्यांकन करके विशिष्ट ग्रंथों के ऐसे लेखकों को भी पुरस्कृत किया जाए जिनकी रचनाएं अपने क्षेत्र में विशेष महत्व रखती हों।

गोवा : हिंदी अनिवार्य हो

अखिल गोवा प्रधानाध्यापक संघ ने हिंदी का शिक्षण प्रारंभिक कक्षाओं से ही अनिवार्य कर देने की सिफारिश की है। संघ के एक प्रवक्ता ने बताया कि इस ढंग का कदम उठाने से देश में हिंदी का शीघ्रता से विस्तार होगा।

उड़ीसा : दक्षिण वाले हिंदी को संपर्क भाषा बनाने की मांग करेंगे

उड़ीसा के उप मुख्य मंत्री श्री पवित्र मोहन प्रधान ने संवाददाताओं से कहा कि केवल हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा हो सकती है। दक्षिण के लोग हिंदी सीखने के बारे में गंभीरता से प्रयत्नशील हैं। मेरा विचार है कि पांच वर्ष के बाद वे स्वयं यह मांग करेंगे कि देश की संपर्क भाषा हिंदी ही होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उड़ीसा में विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी से पूर्णतः उड़िया होने में सात वर्ष लगेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*विश्वविद्यालयों में

हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं का प्रवेश

विश्वविद्यालयों में शिक्षा के माध्यम के प्रश्न को लेकर पिछले कुछ सप्ताहों में काफी विचार-विमर्श हुआ है। समाचार जगत के पिछले अंक में भी बताया जा चुका है कि कुछ विश्वविद्यालयों ने इस विषय में अपनी नीति घोषित कर दी है।

बिहार राज्य विश्वविद्यालय आयोग और बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ने एक सम्मिलित निर्णय द्वारा विश्वविद्यालयीन शिक्षा के समस्त स्तरों पर हिंदी को माध्यम बनाने का निश्चय किया है।

आगरा विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद ने सिफ़ारिश की है कि बी०एससी० और एम०एससी० पाठ्यक्रमों में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी को भी शिक्षा का माध्यम बनाया जाए।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में चालू सत्र से अंग्रेजी अनिवार्य विषय के रूप में नहीं रहेगी।

बनारस विश्वविद्यालय के कोर्ट ने कार्यकारी परिषद को निर्देश दिया है कि स्नातक तथा स्नातकोत्तर शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी को अपनाने का काम पांच वर्षों में पूरा कर लिया जाए।

बंगाल के कुछ विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों तथा राज्य के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष ने एक बैठक में यह निर्णय किया है कि 1968 से सभी स्तरों पर परीक्षा के प्रश्नपत्र बंगला में भी दिए जाएं और परीक्षार्थियों को बंगला में प्रश्नों के उत्तर देने की छूट दी जाए।

जीवाजी विश्वविद्यालय ने बी०ए० पाठ्यक्रम के तीनों भागों में अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय बनाने का निर्णय किया है।

पटना विश्वविद्यालय में उन छात्रों को भी प्रवेश देने का निर्णय किया गया है जो मैट्रिक की परीक्षा में अंग्रेजी में अनुत्तीर्ण हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रांची विश्वविद्यालय ने अंग्रेजी की अनिवार्यता को हटा कर उसे वैकल्पिक विषय बना दिया है ।

बिहार विश्वविद्यालय के सिंडीकेट ने भी इस वर्ष से डिग्री परीक्षा के लिए अंग्रेजी की अनिवार्यता को हटाने का निर्णय किया है ।

उपकुलपतियों का सम्मेलन : इस मास में आयोजित उपकुलपति सम्मेलन में लिए गए निर्णय प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की दिशा में सबसे महत्वपूर्ण कदम है । इससे पहले इस विषय पर अनेक दृष्टियों से विचार किया गया था किंतु विश्वविद्यालयीन शिक्षा से प्रत्यक्षत: संबद्ध व्यक्तियों द्वारा इस प्रश्न पर सम्मिलित रूप से विचार-विमर्श इस सम्मेलन में ही हुआ । तीन दिन के गंभीर विचार-विनिमय के बाद सम्मेलन ने एक मत से यह राय व्यक्त की कि प्रादेशिक भाषाओं को स्नातक स्तर तक की शिक्षा का माध्यम सुविधानुसार 5 से 10 वर्षों की अवधि में बनाया जा सकता है ।

सम्मेलन ने यह मत प्रकट किया है कि प्रादेशिक भाषाओं को माध्यम बनाने का कार्यक्रम अलग-अलग विश्वविद्यालयों में अलग-अलग विषयों में और एक ही विश्वविद्यालय की अलग-अलग संस्थाओं में अलग-अलग ढंग से चलाना पड़ेगा। हर स्थान पर इस लक्ष्य को ध्यान में रखना पड़ेगा कि इस परिवर्तन से शिक्षा का स्तर ऊंचा ही उठे । परिवर्तन की गति और पद्धति का निर्णय विश्वविद्यालयों पर छोड़ दिया गया है ।

सम्मेलन ने एक मत से विश्वास प्रकट किया कि यदि शिक्षा के माध्यम में परिवर्तन सही ढंग से किया जाए तो ऊंची शिक्षा की उन्नति और शिक्षा के भारतीयकरण में सहायता मिलेगी । इसलिए परिवर्तन कार्यक्रम निरंतर और सुनियोजित होना चाहिए ।

सम्मेलन ने इस बात को स्वीकार किया कि प्रादेशिक भाषाओं का विकास और संवर्धन ऊंची शिक्षा के विस्तार और राष्ट्रीय संस्कृति के प्रसार के लिए नितांत आवश्यक है । शिक्षा के प्रसार, रचनात्मक प्रवृत्तियों के विकास तथा राष्ट्रीय एकता दोनों के लिए देशी भाषाओं में शिक्षा देना आवश्यक है । ऐसी शिक्षा से ही जनसाधारण की आकांक्षाएं पूरी हो सकेंगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

रूस में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन :

(गतांक से आगे)

सोवियत संघ के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन की व्यवस्था है। इंस्टीट्यूट आफ ईस्टर्न लैंग्वेजेज़, मास्को स्टेट युनिवर्सिटी, लेनिनग्राड स्टेट युनिवर्सिटी, ताशकंद स्टेट युनिवर्सिटी, इंस्टीट्यूट आफ पीपुल्स आफ एशिया, एकेडेमी आफ साइन्सेज़, मास्को, अज़रबैजान युनिवर्सिटी आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इसके अलावा, मास्को, लेनिनग्राड, ताशकंद के कुछ स्कूलों में दूसरी कक्षा से ग्यारहवीं कक्षा तक हिंदी पढ़ाई जाती है।

हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के प्रख्यात लेखकों की रचनाओं के रूसी अनुवाद भी होरहे हैं। जनवरी 1964 तक टैगोर की 124 रचनाओं का रूस की 22 भाषाओं में अनुवाद हो चुका था और इनकी 41 लाख से अधिक प्रतियां प्रकाशित हो चुकी थीं। अन्य लेखकों में शरत् चंद्र चटर्जी, नरेंद्रनाथ रे, भवानी भट्टाचार्य, वल्लतोल, सुब्रह्मण्य भारती, शिवशंकर पिल्लई, गुरुज़ादा अप्पाराव, मुल्कराज आनंद, मुहम्मद इकबाल, नज़रुल इस्लाम, ख्वाजा अहमद अब्बास, अली सरदार जाफरी, कृष्णचंदर, अमृताप्रीतम आदि की रचनाओं का रूसी अनुवाद किया गया है। महात्मा गांधी की 'आत्म कथा', श्री नेहरू लिखित 'भारत की खोज' डा० राजेन्द्र प्रसाद की आत्मकथा तथा डा० राधाकृष्णन रचित 'भारतीय दर्शन' आदि पुस्तकें भी अनुदित हुई हैं। शिवदान सिंह चौहान लिखित 'हिंदी के अस्सी वर्ष', 'एहतशाम हुसैन लिखित 'उर्दू साहित्य का इतिहास, गोपाल हालदार लिखित 'बंगला साहित्य का इतिहास' आदि पुस्तकें उल्लेखनीय हैं। रूसी-हिन्दी, रूसी-उर्दू कोशों के अलावा, रूसी-बंगाली, रूसी-तमिल, रूसी-मराठी आदि कोश भी प्रकाशित हो चुके हैं।

सोवियत संघ में हिंदी और अन्य भारतीय साहित्य और भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन, शोध और प्रकाशन की ओर दिनोंदिन रूचि बढ़ती जा रही है। भारतीय साहित्य की मांग वहां इतनी अधिक बढ़ गई है कि उसे पूरा करना कठिन हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

अपरा प्रकाशन, कलकत्ता :

कालेज स्ट्रीट के नये मसीहा	शरद देवड़ा	कथा	99	4-00
सातवें दशक की हिंदी कहानियां	,,	,,	311	10-00

साहित्य निकेतन, कानपुर :

आत्महत्या और वासना के अपराध	परिपूर्णानन्द वर्मा	समाजशास्त्र	261	6-00
मुद्रा, बैंकिंग विदेशी विनिमय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार	निगम, सहाय	अर्थशास्त्र	452	8-00
हिन्दी दशरूपक	अनु० गोविन्द त्रिगुणायत	नाट्यशास्त्र	422	7-50
भारतीय संस्कृति के मूल तत्व	पाण्डे व जोशी	भारतीय सं संस्कृति	147	4-50
महाकवि कालिदास और उनका अभिज्ञान शाकुंतल	कृष्णकान्त त्रिपाठी	आलोचना	165	2-75
समाजशास्त्र की भूमिका	परिपूर्णानन्द वर्मा	समाजशास्त्र	182	4-50
भारतीय सहकारिता आन्दोलन	अनन्तराम निगम	अर्थशास्त्र	336	6-50
प्रभात कुमार मुखर्जी की कहानियां	अनु० मदन लाल जैन	कहानीसंग्रह	208	6-50
छोटे छोटे गीत	अशोक रंजन सक्सेना	बच्चों के गीत	21	0-65
राकेट की कहानी	श्यामनारायण कपूर	विज्ञान विवरण	50	1-50
सदाचार	शशि कुमार जैन	बाल-साहित्य	23	0-80
अन्तरिक्ष यात्रा की कहानी	श्यामनारायण कपूर	,,	67	2-00

कुमाऊंनी साहित्य प्रकाशन, चौक, बरेली :

पर्वतीय नारी	दीवानसिंह मकूनी	लोकगीत	50	1-00

भारतीय ज्ञानपीठ,प्रकाशन, 9 अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता :

वाग्धारा	वासुदेवशरण अग्रवाल	लेख संग्रह	212	4-00
उस्तादाना कमाल	अयोध्याप्रसाद गोयलीय	,,	227	4-00
हिन्दी शब्द रचना	माई दयाल जैन	व्याकरण	306	6-00
अग्नि बीज	गोविन्द चन्द्र पाण्डे	कविता-संग्रह	118	3-50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए लें० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेज़ी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – ले० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 अंक 3

2-1-68

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817|66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 नवंबर 1967 अंक 3

0 भाषा संगम (देवनागरी लिपि संगोष्ठी)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा)

0 हिन्दी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

कुछ लोग कहते हैं कि हिंदी विकसित भाषा नहीं है, इससे हमारा काम नहीं चल सकता। यह बात ठीक नहीं है। हिंदी भाषा और अन्य प्रादेशिक भाषाएं हमारा काम चलाने के लिए काफी समृद्ध हैं। लेकिन मैं इस बात पर ज़ोर दूंगा कि कोई भाषा अगर समृद्ध नहीं है तो हमें उसका इस्तेमाल अधिक से अधिक करना चाहिए। इससे वह समृद्ध अवश्य होगी। कोई व्यक्ति जमीन पर बैठ कर तैरना नहीं सीख सकता। बिना प्रयोग के कोई भाषा समृद्ध नहीं होती।

-- उप प्रधान मंत्री, श्री मोरारजी देसाई

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 15।16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

0 भाषा संगम

देवनागरी लिपि संगोष्ठी

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय), राष्ट्रीय संग्रहालय और पुरातत्व विभाग के सम्मिलित प्रयास से 20 और 21 अक्तूबर को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में देवनागरी लिपि पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिस में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लगभग 40 विद्वानों और स्थानीय भाषाविदों ने भाग लिया । संगोष्ठी का विचारणीय विषय यह था कि भावनात्मक एकता के ध्येय से तथा यांत्रिक सुविधा की दृष्टि से परिवर्धित देवनागरी का अधिकाधिक प्रयोग कैसे किया जा सकता है ।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने कहा कि देवनागरी को अतिरिक्त लिपि के रूप में अपनाना भावी पीढ़ी के लिए कठिन नहीं होगा । समय की आवश्यकता के अनुसार मातृभाषा के साथ उसे हिंदी पढ़नी ही होगी । फिर भी इस काम को इस प्रकार आगे बढ़ाना चाहिए कि अनावश्यक विरोध न हो । इस अवसर पर केन्द्रीय विधि मंत्री श्री पी० गोविन्द मेनन तथा केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री प्रो० शेर सिंह ने यह आशा व्यक्त की कि अतिरिक्त लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाने से विभिन्न भारतीय भाषाओं में सम्पर्क बढ़ेगा और देश की भावनात्मक एकता को बल मिलेगा ।

संगोष्ठी ने दो दिन के विचार-विमर्श के बाद निम्नलिखित सिफारिशें की हैं:

(1) समस्त भारतीय भाषाओं के गौरव-ग्रंथों (क्लासिक्स) को परिवर्धित देवनागरी में प्रकाशित किया जाए ।

(2) समस्त भारत के ज़िला और मंडल-पुस्तकालयों में एक "नागरी शैल्फ" की व्यवस्था की जाए जिस में परिवर्धित देवनागरी में प्रकाशित समस्त भारतीय भाषाओं की चुनी हुई पुस्तकें रखी जाएं ।

(3) परिवर्धित देवनागरी का अंततोगत्वा जो रूप निश्चित हो, उसे लोकप्रिय बनाने के लिए भारतीय भाषाओं की वयस्कोपयोगी पुस्तकों को द्विभाषी रूप में देवनागरी लिप्यन्तरण के साथ प्रकाशित किया जाए ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(4) इस योजना द्वारा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से निम्नलिखित साहित्य प्रकाशित किया जाए :

(क) लोक कथाएं (ख) महाकाव्यों की कहानियां (ग) सामान्य विज्ञान की पुस्तकें (घ) जीवनियां (ङ) यात्रावृत्त और (च) खेल-कूद का साहित्य आदि-आदि

(5) परिवर्धित देवनागरी में सुझाए गए संकेत चिह्नों के डिज़ाइन इस प्रकार तैयार किए जाएं कि `टाइप-सोर्ट्स` और मैट्रिक्स की संख्या बढ़ाए बिना हाथ या मशीन के कम्पोजिंग में अधिक से अधिक सुविधा हो ।

भाषा, लिपि, टाइपोग्राफी, टंकण और मुद्रण के विशेषज्ञों की एक समिति बनाई जाए और उसे निम्नलिखित काम सौंपा जाए :-

(क) क्षेत्रीय भाषाओं की विशिष्ट ध्वनियों के लिए परिवर्धित देवनागरी में जो चिह्न रखे जायें उनके डिज़ाइन निश्चित करना,

(ख) नए चिन्हों के उपयोग की कठिनाइयों का अध्ययन करना और आधुनिक मुद्रण प्रक्रियाओं को ध्यान में रख कर कम से कम टाइप सोर्ट्स निश्चित करना,

(ग) कम्पोजिंग मशीन और टाइपराइटर के लिए कुंजीपटल तैयार करना ।

गोष्ठी में आए अतिथियों के स्वागत में 21 अक्तूबर शाम को दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से एक आयोजन किया गया । इसमें प्रो0 शेर सिहं, श्री गंगाशरण सिहं और श्री महावीर त्यागी के अतिरिक्त अनेक स्थानीय विद्वान सम्मिलित हुए ।

<u>भारतीय भाषाएं और एक लिपि</u> :

भारतीय साहित्य परिषद के तत्वावधान में भारतीय भाषाएं और एक लिपि विषय पर दिसंबर के दूसरे सप्ताह में राजधानी में एक गोष्ठी का आयोजन किया जाएगा । इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के लगभग 60 विद्वान भाग लेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

(गतांक से आगे)

विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा समिति की परीक्षाओं को दी गई मान्यता

बम्बई : 'राष्ट्रभाषा कोविद' - उत्तीर्ण बम्बई-सरकार की 'हिंदी शिक्षक सनद', (एच0एस0एस0) (जूनियर) तथा 'राष्ट्रभाषा-रत्न' उत्तीर्ण (सीनियर) परीक्षा में बैठ सकते हैं।

असम : "परिचय" - उत्तीर्ण, असम में ट्रेनिंग लेकर सीधे हाई स्कूल में शिक्षक बन सकते हैं। कोविद-उत्तीर्ण किसी प्रकार की ट्रेनिंग लिए बिना शिक्षा-विभाग द्वारा स्वीकृत वेतन पर असम में हिंदी शिक्षक बन सकते हैं।

बंगाल : कलकत्ता विश्वविद्यालय के ऐसे परीक्षार्थी जो हिंदी के अतिरिक्त अन्य विषयों में बी0 ए0 हैं, "राष्ट्रभाषा-कोविद" पास करने पर हिन्दी लेकर एम0ए0 कर सकते हैं।

उत्कल : उत्कल में "राष्ट्रभाषा-रत्न" परीक्षा को सरकार द्वारा मान्य संस्कृत की "आचार्य" परीक्षा के समकक्ष माना गया है। "राष्ट्रभाषा-रत्न" उत्तीर्ण परीक्षार्थी का वेतन-क्रम उत्कल सरकार ने 70 रु0 से 140 रु0 तक स्वीकृत किया है।

राजस्थान : सरकारी कर्मचारियों की नियुक्ति अथवा स्थायित्व के लिए राजस्थान सरकार ने जहां हिंदी की योग्यता निर्धारित की है, वहां समिति की "कोविद" परीक्षा मान्य की है।

"राष्ट्रभाषा-कोविद" तथा "राष्ट्रभाषा-रत्न" उत्तीर्ण राजपूताना विश्वविद्यालय की क्रमशः हाई स्कूल तथा इण्टरमीजिएट परीक्षाओं में केवल अंग्रेजी विषय लेकर सम्मिलित हो सकते हैं। '(यह सुविधा केवल राजस्थान की सीमा में रहने वालों के लिए है।')

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति की 'कोविद' तथा 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षाएं राजपूताना विश्वविद्यालय की 'साहित्य-विनोद' तथा 'साहित्य-विशारद' परीक्षा के समकक्ष मान्य हैं ।

मध्य प्रदेश : सरकारी कर्मचारियों की किसी पद पर नियुक्ति अथवा स्थायित्व के लिए मध्य प्रदेश सरकार ने जहाँ हिंदी की योग्यता निर्धारित की है, वहाँ समिति की 'परिचय' परीक्षा मान्य है ।

पंजाब : सरकारी कर्मचारियों की किसी पद पर नियुक्ति या स्थायित्व के लिए पंजाब सरकार ने जहाँ हिंदी की योग्यता निर्धारित की है, वहाँ समिति की 'कोविद' परीक्षा मान्य है ।

पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा 'कोविद' तथा 'राष्ट्रभाषा-रत्न' परीक्षाएं समिति की 'रत्न' तथा 'भूषण' परीक्षाओं के समकक्ष मान्य हैं ।

काश्मीर : जम्मू और काश्मीर विश्वविद्यालय ने समिति की 'कोविद' और 'राष्ट्रभाषा -रत्न' परीक्षाओं को उक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित 'रत्न' तथा 'भूषण' परीक्षा के समकक्ष माना है ।

मैसूर : मैसूर सरकार ने समिति की 'प्रवेश' परीक्षा को सरकारी कर्मचारियों के लिए विभागीय परीक्षा के रूप में मान्यता दी है ।

उत्तरप्रदेश : आगरा विश्वविद्यालय की क० मु० हिन्दी भाषा-विज्ञान विद्यापीठ द्वारा संचालित डिप० लिट० वर्ग में इण्टर तथा कोविद-उत्तीर्ण हिन्दीतर परीक्षार्थी सम्मिलित हो सकते हैं ।

संस्थाएं : 'राष्ट्रभाषा कोविद' तथा 'राष्ट्रभाषा-रत्न-उत्तीर्ण' हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की क्रमशः 'विशारद' तथा 'साहित्य-रत्न' परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकते हैं ।

एस० एन० डी० टी० महिला विद्यापीठ (बम्बई) की बी० टी० परीक्षा में 'कोविद' उत्तीर्ण को हिंदी बिषय लेने की आवश्यकता नहीं रहती ।

(उक्त विवरण समिति के रजत जयन्ती ग्रंथ से लिया गया है ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिन्दी

* भारत सरकार में

शिक्षा के माध्यम में अवस्थाबद्ध परिवर्तन आवश्यक

अंग्रेजी की पढ़ाई की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने अंग्रेजी के प्रसिद्ध विद्वान-अध्यापकों का जो दल संगठित किया था उसने सिफ़ारिश की है कि अंग्रेजी के स्थान पर क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए कार्यक्रम बनाया जाय । रिपोर्ट में कहा गया है कि स्कूलों में शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएं हों तो विश्वविद्यालय स्तर पर अंग्रेजी को माध्यम बनाए रखने से शिक्षा की हानि हो सकती है । विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के क्षेत्रीय संचलन की असुविधा को दूर करने के लिए विद्यार्थियों को अंग्रेजी और हिंदी का विस्तृत अध्ययन कराना चाहिए ताकि वे उन भाषाओं में दिए गए व्याख्यानों को समझ सकें । रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि अंग्रेजी में अपने विचारों को अभिव्यक्त करना तथा अंग्रेजी के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त करना अब हमारे विद्यार्थियों की पहुंच से बाहर हो गया है । उच्च शिक्षा के लिए क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम अविलंब बना देना ही एकमात्र अवलंब है । यह आशंका निराधार है कि क्षेत्रीय भाषाओं के शिक्षा का माध्यम बन जाने से पृथक्तावादी प्रवृत्ति को बल मिलेगा ।

अध्ययन-दल की यह रिपोर्ट प्रो0 वी0 के0 गोकाक प्रिंसिपल सेंट्रल इंस्टीच्यूट आफ इंगलिश हैदराबाद, श्री ए0 ए0 टी0 बेरी, प्रो0 सी0 एस0 भंडारी, श्रीमती एम0 चोक्सी, श्री ए0 आर0 दाउद और ब्रिटिश काउंसिल आफ इंडिया के शिक्षा अधिकारी श्री जे0 एस0 उरे द्वारा तैयार की गई है ।

हिन्दी शिक्षण के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम

अहिन्दी भाषी लोगों को पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा हिन्दी पढ़ाने की एक योजना केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) द्वारा पहली जनवरी 1968 से प्रारम्भ करने का प्रस्ताव है । 15 वर्ष से अधिक अवस्था वाले अहिन्दी भाषी भारतीय तथा विदेशी इससे लाभ उठा सकेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले वर्ष केवल एक (प्रारंभिक) द्विवर्षीय पाठ्यक्रम चालू किया जाएगा ।
अगला द्विवर्षीय पाठ्यक्रम आगामी वर्षों में चालू किया जाएगा । शिक्षण का
माध्यम फिलहाल अंग्रेजी रहेगी । विद्यार्थियों से नाममात्र शिक्षण शुल्क केवल 15
रुपए प्रतिवर्ष (विदेशों के विद्यार्थियों से 10 डालर या उसके बराबर) लिया
जाएगा ।

हर पखवारे में विद्यार्थियों को क्रमिक और संतुलित पाठ भेजे जाएंगे ।
उन्हें नियमित रूप से अपना लिखित कार्य जांच, मार्गदर्शन और आवश्यक हिदायतों
के लिए निदेशालय को भेजना होगा । विद्यार्थियों को उनके अध्ययन में सहायता देने
के लिए बाद में "व्यक्तिगत सम्पर्क प्रोग्राम" की व्यवस्था भी की जाएगी । देश
और विदेशों में विभिन्न स्थानों पर परीक्षाओं की व्यवस्था रहेगी ।

विस्तृत जानकारी तथा प्रवेश के लिए आवेदन-पत्र निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी
निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 15/16, नेताजी सुभाष मार्ग,
दिल्ली-6 से प्राप्त किए जा सकते हैं ।

विधि मंत्रालय से "निर्णय पत्रिका" का प्रकाशन

केन्द्रीय विधि मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक 21-10-67
को विधि मंत्री श्री पी० गोविन्द मेनन की अध्यक्षता में हुई । उसमें निर्णय किया
गया कि "निर्णय पत्रिका" नाम की दो पत्रिकाएं प्रकाशित की जाएं जिनमें क्रमशः
उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय हिंदी में प्रकाशित हों ।

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में प्रादेशिक भाषाओं का उपयोग

गृह मंत्रालय और संघ लोक सेवा आयोग के प्राधिकारियों की सम्मिलित
बैठक में हुए विचार-विनिमय से संकेत मिलता है कि भारत सरकार के उपर्युक्त निर्णय
को लागू करने का काम 1969 से प्रारंभ हो जाएगा । शुरू में उम्मीदवारों को
मानविकी विषयों में किसी एक प्रादेशिक भाषा को चुनने की सुविधा दी जाएगी ।
कालांतर में सभी विषयों की परीक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषाएं होंगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में :

हिंदी व्यवहार मास का आयोजन : दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से एक अक्तूबर, 1967 से दीपावली तक हिंदी व्यवहार मास मनाया गया । इस अवसर पर सम्मेलन ने प्रमुख स्थानों पर अनुरोध पट्ट लगा कर जनता से अपील की कि वह सारा काम काज हिंदी में ही करें ।

लेखकों की परिचय पुस्तक का प्रकाशन: साहित्य अकादमी भारतीय लेखकों की परिचय पुस्तक (हू ज हू) प्रकाशित कर रही है । इससे पूर्व सन् 1951 में अकादमी ने एक परिचय-पुस्तक प्रकाशित की थी जिसमें पांच हजार भारतीय लेखकों का परिचय दिया गया था ।

गुजराती साहित्य परिषद का अधिवेशन

गुजराती साहित्य परिषद का तीन दिवसीय अधिवेशन 8 से 10 अक्तूबर तक संपन्न हुआ । अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने कहा : अंग्रेजी हमेशा के लिए शिक्षा का माध्यम नहीं बनी रह सकती है । उसका स्थान लेने की प्रक्रिया तुरंत शुरू होनी चाहिए ।

इसी अवसर पर काका कालेलकर ने कहा कि चतुर अंग्रेजी भक्तों की यह चाल है कि राजमुकुट हिंदी के मस्तक पर रख दिया किंतु राजदण्ड अंग्रेजी के हाथ में थमाया । इस स्थिति का शीघ्र ही अंत होना चाहिए ।

गुजरात विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री उमाशंकर जोशी की अध्यक्षता में आयोजित परिषद के इस 24 वें अधिवेशन में एक हजार से अधिक प्रतिनिधि सम्मिलित हुए ।

राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन :

नेशनल बुक ट्रस्ट आफ इण्डिया ने दिल्ली में 27 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 1967 तक द्वितीय राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आयोजन करने का निश्चय किया है । इस मेले में अंग्रेजी व विभिन्न भारतीय भाषाओं की दस हजार चुनी हुई पुस्तकें प्रदर्शित की जाएंगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय आर्य साहित्य परिषद् दक्षिणी दिल्ली का शिक्षा सम्मेलन :

गत मास भारतीय आर्य साहित्य परिषद द्वारा आयोजित शिक्षा-सम्मेलन में शिक्षा राज्य मंत्री प्रो० शेर सिंह ने कहा कि शिक्षा मंत्रालय की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग स्नातक स्तर तक की पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कर चुका है। सभी लेखकों को चाहिए कि वे इससे लाभ उठाएं। हिंदी में इस समय 2500 पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध हैं।

शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं - विचार गोष्ठी

गांधी राउंड टेबिल द्वारा आयोजित उपर्युक्त विचार गोष्ठी में काका कालेलकर ने कहा कि भारतीय भाषाएं भारतीय एकता में बाधक नहीं, साधक हैं। इन्हीं के माध्यम से आजादी की भावना देश भर में व्याप्त हुई। विचार गोष्ठी के प्रमुख वक्ता श्री अज्ञेय और श्री सज्जाद जहीर ने मातृभाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने का समर्थन किया।

क्षेत्रीय भाषाओं से राष्ट्रीयता का विकास :

श्री राम कामर्स कालेज में हिंदी साहित्य सभा का उद्घाटन करते हुए खाद्य और कृषि मंत्री श्री जगजीवनराम ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग से राष्ट्रीयता, भारतीय संस्कृति और भारतीय साहित्य सभी का विकास होगा।

तमिल सीखने की सुविधा

दिल्ली तमिल संगम द्वारा तमिल भाषा सिखाने के लिए जो विशेष कक्षाएं चलाई जा रही हैं उन से 50 छात्रों ने लाभ उठाया है। इनमें 19 विदेशी भी हैं। संगम विद्यार्थियों के लिए सस्ती पुस्तकों की व्यवस्था भी करता है।

रूसी विद्यार्थी भारतीय भाषाएं पढ़ेंगे :

भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए रूस से नौ विद्यार्थी भारत आए हैं। भारत सरकार ने इन विद्यार्थियों को 1967-68 के भारत-रूस सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रवृत्तियां दी हैं। आशा है इस कार्यक्रम के अंतर्गत 18 और रूसी विद्यार्थी विभिन्न भारतीय भाषाओं का अध्ययन करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

गुजरात : उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने गुजरात विद्यापीठ में कार्यकर्ताओं के समक्ष भाषण देते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों में पढ़ाई का माध्यम केवल क्षेत्रीय भाषाएं ही हो सकती हैं।

महाराष्ट्र : गृह मंत्रालय के हिंदी सलाहकार डा० रामधारी सिंह दिनकर ने बम्बई में हिंदी शिक्षण योजना के सम्पर्क अधिकारियों के समक्ष भाषण देते हुए कहा कि जब तक देश का प्रशासन बहुसंख्यकों की भाषा में नहीं चलाया जाता तब तक हम स्वराज्य को पूर्ण स्वराज्य नहीं कह सकते।

उत्तर-प्रदेश : दून स्कूल के बत्तीसवें स्थापना दिवस के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए उप प्रधान मंत्री श्री मोरार जी देसाई ने कहा कि पब्लिक स्कूलों को शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी को छोड़ कर हिंदी को तत्काल अपना लेना चाहिए और महंगी शिक्षा पद्धति को समाप्त कर देना चाहिए।

बिहार : केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री भगवत झा आज़ाद ने संथालपरगना (बिहार) में एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए कहा कि एशिया में सबसे अधिक औद्योगिक प्रगति जापान ने की है। वहां अंग्रेजी को बिल्कुल स्थान नहीं है। यह तर्क निराधार है कि अंग्रेजी के बिना उद्योग और विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति धीमी पड़ जायगी।

आन्ध्र प्रदेश : आंध्र प्रदेश हिन्दी सम्मेलन हैदराबाद के उद्घाटन समारोह में आंध्र के राजस्व मंत्री श्री वी० बी० राजू ने और शिक्षा मंत्री श्री टी० वी० राघुलू ने यह विश्वास प्रकट किया है कि देश की सभी भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि अपनाने से भाषा विवाद स्वतः समाप्त हो जाएगा।

मध्य प्रदेश : 21 अक्तूबर 1967 को जबलपुर में समाचार भारती की दूर मुद्रक सेवा का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के राज्यपाल श्री हुकम सिंह ने कहा कि भारतीय भाषाओं को जन-जीवन के अतिरिक्त राजकाज में समुचित स्थान मिलना चाहिए। समाचारों की निष्पक्षता, ईमानदारी और जनता के प्रति निष्ठा बनाए रखने के लिए व्यक्ति को अपनी भाषा में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

नागपुर विश्वविद्यालय का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग:

नागपुर विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना सन् 1959 में हुई। डा0 कमला कान्त पाठक विभाग के अध्यक्ष और श्री रामेश्वरदास शर्मा प्राध्यापक नियुक्त हुए। सन् 1963 तक स्नातकोत्तर कक्षाओं का अध्यापन कार्य संबद्ध कालेजों के प्राध्यापकों के सहयोग से होता रहा। सन् 1963 व 1964 में डा0 रामचन्द्र मिश्र और डा0 इन्द्रपाल सिंह के प्राध्यापक नियुक्त होने पर स्नातकोत्तर विभाग स्वावलम्बी हो गया। इस समय स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में विभागाध्यक्ष के अतिरिक्त तीन प्राध्यापक हैं।

अब तक 125 छात्र विश्वविद्यालय से एम0 ए0 की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं। इनमें हिंदी भाषियों के अतिरिक्त मराठी, गुजराती, बंगला, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, सिंधी आदि के छात्र भी बड़ी संख्या में हैं।

शोध कार्य -

अब तक निम्नलिखित शोध-छात्र पी0 एच0 डी0 की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं :-

1- डा0 ओंकारनाथ शर्मा — हिंदी निबंध साहित्य (प्रकाशित)
2- डा0 चन्द्रकुमार अग्रवाल — छत्तीसगढ़ का लोक-साहित्य
3- डा0 रामनारायण सोनी — छायावादी काव्य का दार्शनिक तथा सांस्कृतिक पक्ष

निम्नलिखित विषयों पर शोध कार्य हो रहा है :

1- सरयूप्रसाद मिश्र — आधुनिक हिंदी काव्य की मानव विषयक धारणा का विकास
2- परमलाल गुप्त — आधुनिक हिंदी काव्य का विकास
4- घनश्याम व्यास — हिंदी और मराठी की आधुनिक समीक्षा पद्धतियां।
3- मदनमोहन शर्मा — हिंदी और मराठी के एकांकी नाटक।
5- श्रीमती प्रबोधिनी कुलकर्णी — हिंदी और मराठी का राष्ट्रवादी काव्य
6- ल0 द0 नवरे — विदर्भ क्षेत्रीय कोरकू बोली का लोक-साहित्य
7- कु0 सरला भट्ट — हिंदी साहित्य की गद्य - विधाओं का विकास।
8- श्रीमती नलिनी सुधाकर — प्रेमचन्द्रोत्तर उपन्यास-साहित्य का वस्तु तथा शिल्पगत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9- महेशदत्त अवस्थी	भक्तिकाव्य की आत्म-निवेदन विषयक प्रवृत्ति
10-कु0 सुलेखा दास गुप्त	छायावादोत्तर हिंदी कविता के विचार तत्व और रचना
11- रजनीकान्त मिश्र	आधुनिक हिंदी काव्य का सांस्कृतिक पक्ष ।
12- दुर्गाशंकर मिश्र	हिंदी का गांधीवादी नाट्य साहित्य और सेठ गोविंददास।
13- महादेव कद्रू	प्रेम चन्दोत्तर कथा साहित्य और यशपाल ।
14- तेजराम गुप्त	तुलसीदास की काव्यकला, भक्ति-साधना और दर्शन ।
15- पटनायक	व्यक्तिवादी हिंदी काव्य और कवि बच्चन ।
16- मोहनलाल धींगरा	हिंदी उपन्यास के राष्ट्रीय और सांस्कृतिक उपकरण ।
17- रतन पहाड़ी	हिंदी-मराठी की स्वच्छन्दतावादी कविता ।
18- रामभूषणलाल वर्मा	हिंदी साहित्य की व्यक्तिवादी प्रवृत्तियाँ और जैनेन्द्रकुमार
19- जयनारायण पाण्डेय	हिंदी की स्वच्छन्दतावादी धारा और उदयशंकर भट्ट ।
20- रूपटकर	हिंदी नाट्य साहित्य के राष्ट्रीय सांस्कृतिक उपकरण ।
21- भगत सिंह गौतम	लक्ष्मीनारायण मिश्र का व्यक्तित्व और कृतित्व ।

इस सत्र में 7 छात्रों ने पी-एच0 डी0 में प्रवेश के लिए आवेदन पत्र भेजे हैं।

विभाग के चारों अध्यापक अपनी रुचि के अनुसार अनुसंधान कार्य में प्रवृत्त है। विभागाध्यक्ष डा0 पाठक हिंदी के आधुनिक रचनात्मक और आलोचनात्मक साहित्य के सापेक्षित संबंधों पर, प्राध्यापक श्री शर्मा प्रगतिशील साहित्य पर तथा डा0 सिंह गोस्वामी तुलसीदास के संबंध में अनुसंधान कर रहे हैं। डा0 मिश्र ने संत नामदेव और हिंदी पद-साहित्य तथा गुरु-ग्रंथ साहिब का सिरस्कार संत काव्य विषय पर कार्य किया है।

विभाग ने विदर्भ क्षेत्र में व्यवहृत हिंदी बोली के भाषा-शास्त्रीय अनुशीलन की एक शोध-योजना बनाई है। यह विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विचाराधीन है। विभाग की साहित्य परिषद के तत्वावधान में छात्रों के लाभ के लिए समय-समय पर भाषण मालाओं तथा विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

मलेशिया में एशियाई भाषा सम्मेलन

गत 29 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक क्वालालंपुर (मलेशिया) में मलय विश्वविद्यालय और मलेशिया प्राच्यविद्या सभा के तत्वावधान में एशियाई भाषाओं के विकास से संबंधित समस्याओं पर विचार करने के लिए एक विशेष सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें भारत, जापान, पाकिस्तान, दक्षिण वियतनाम, आदि देशों को भी भाग लेने का निमंत्रण दिया गया था। भारत की ओर से तीन निबन्ध भेजे गए। डा० कत्रे ने भारतीय भाषाओं के आधुनिकीकरण की समस्याओं पर, डा० गोपाल शर्मा ने भारतीयसंघ भाषा के विकास की प्रक्रिया पर, तथा डा० पट्टनायक ने भारत की भाषाओं के विकास की गतिविधि पर निबंध प्रस्तुत किए। डा० गोपाल शर्मा ने भारत के प्रतिनिधि के रूप में सम्मेलन में भाग लिया।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए मलेशिया के प्रधानमंत्री तुंकु अब्दुल रहमान ने उपनिवेशवाद की समाप्ति के पश्चात् मलय की विकास-दिशा पर प्रकाश डाला और बताया कि 1 सितम्बर से सभी कार्यों के लिए मलेशिया की भाषा मलय बना दी गई है। इसके विकास को परिपुष्ट करने के लिए क्वालालंपुर में 'दीवान बहासा दान पुस्तका' - (भाषा और पुस्तक संस्थान) की स्थापना की गई है जिसने लगभग 27 हजार पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया है और सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

सम्मेलन के प्रथम सत्र के अध्यक्ष डा० गोपाल शर्मा ने विदेशी सत्ता के अन्त के बाद भारत की भाषाओं के क्रमिक विकास का आलेख प्रस्तुत करते हुए संघ भाषा हिन्दी के विकास-यत्नों का वर्णन भाषा विज्ञान, समाज, राजनीति, विकास योजनाओं, शैक्षिक प्रगति और टैक्नोलोजी की आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में किया।

अन्य सत्रों में, अमरीकी भाषा-शिक्षा विद् डा० विटरमैन, दक्षिण वियतनाम के भाषाविज्ञान के प्राध्यापक डा० हुन्त्री, फिलिपीन की डा० एरियोला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा इन्दोनेशिया के डा० हरिमूर्ति की अध्यक्षता में क्रमशः भाषा के मानकीकरण, व्याकरण सम्बन्धी सुधार, समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान और भाषा, पारिभाषिक शब्दावली आदि विषयों पर परिचर्चा हुई। मलय विश्वविद्यालय के भाषा विभाग और मलय प्राच्य सम्मेलन के अध्यक्ष डा० एलिज़वाना ने भी समय-समय पर अपने प्रामाणिक विचार व्यक्त किए।

भारतीय प्रतिनिधि डा० गोपाल शर्मा और मलय विभाग के अध्यक्ष डा० एलिज़वाना द्वारा प्रस्तावित निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किए गए :-

यूनेस्को से अनुरोध किया जाए कि वह यूरोपीय भाषाओं के विकास और मानकीकरण के लिए बनाई गई विश्व मानक संस्था, कमेटी 37 के समान एशियाई भाषाओं के लिए भी एक कमेटी बनाए। साथ ही एशिया की राष्ट्रीय सरकारों के सहयोग से एक एशियाई भाषा, संस्कृति, साहित्य विकास संस्थान की स्थापना की जाए ताकि एशिया के विकासशील देशों में इन क्षेत्रों में परस्पर आदान-प्रदान और सहयोग बढ़ सके। इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए :-

अ) विज्ञान चिकित्सा आदि आधुनिक विषय के ग्रंथ प्रणेताओं को यूनेस्को की ओर से पुरस्कार प्रदान किए जाएं।

आ) एशिया के विज्ञान विषयक लेखकों के ग्रंथों का एक पुस्तक-बैंक बनाया जाए और इसकी पुस्तकों को विभिन्न एशियाई भाषाओं में अनूदित और प्रकाशित किया जाए। इसके लिए पर्याप्त धन की व्यवस्था की जाए।

इ) एशिया के चिन्तकों, दार्शनिकों, विज्ञानियों के विचारों को प्रस्तुत करने वाला एक विश्वकोश बनाया जाए जिसमें समस्त विश्व के वैचारिक विकास में इनके योगदान पर बल देने का यत्न किया जाए।

ई) एशिया की विभिन्न राष्ट्र-भाषाओं को आधार बनाकर द्विभाषी, बहुभाषी कोश बनाएं जाएं ताकि इन की विकास प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन कर विकास-दिशाएं निर्धारित की जा सकें और इनकी विकास-गति और प्रक्रिया के अध्ययन से परस्पर लाभ उठाया जा सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन पुस्तक	लेखक	विषय	पृ०सं०	मूल्य
कला प्रकाशन, सें0 1/229 रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 :				
कलई के पर्तें	प्रमोद चन्द्र शुक्ल	उपन्यास	112	3-50
अध कचरे	सुदर्शन चोपड़ा	उपन्यास	147	3-50
हिन्द पाकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, जी0टी0 रोड, शाहदरा :				
उन्नति के उपाय	ए0पी0 परेरा		112	1-00
1966 की डायरी	सं0 प्रकाश पंडित	कविताएँ	109	1-00
हांगकांग की हसीना	कृश्न चन्दर	उपन्यास	103	1-00
काका के प्रहसन	काका हाथरसी	प्रहसन	117	1-00
मधुपुरी	राहुल सांकृत्यायन	कहानी संग्रह	108	1-00
सौन्दर्य श्रृंगार	सावित्री देवी वर्मा		111	1-00
अपने पराये	गुरुदत्त	उपन्यास	201	2-00
दादा कामरेड	यशपाल	उपन्यास	203	2-00
अँधेरे बन्द कमरे	मोहन राकेश	उपन्यास	236	2-00
राजपाल एण्ड संस, दिल्ली :				
रोमांचकारी वैज्ञानिक यात्राएं	रेमण्ड होल्डन	यात्रा विवरण	139	2-50
एक किरण चांदनी की	करतार सिंह दुग्गल	कहानी संग्रह	175	3-50
संस्कृत नाटकों के हिंदी अनुवाद	डा0 देवेन्द्र कुमार	शोध प्रबन्ध	295	13-00
प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचार	डा0 राधाकृष्णन्	दर्शन	426	15-00
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 9 अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता :				
काठ का सपना	ग0मा0 मुक्तिबोध	कहानी संग्रह	170	3-50
वाग्धारा	डा0 वासुदेव शरण अग्रवाल	निबंध संग्रह	212	4-00
एक और नचिकेता	जी0 शंकर कुरुप रूपान्तर नारायण पिल्लै	कविता संकलन	78	3-00
अतिक्रमण	,,	काव्य	373	8-00
कांच के खिलौने	विलियम्स टेनीसी अनु0 अभितांग	दो रंगमंचीय नाटक	219	2-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनेस्को कूरियर (हिन्दी)

यूनेस्को का मासिक पत्र 'यूनेस्को कूरियर' दस भाषाओं में (अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश, रूसी, जर्मन, जापानी, इतालवी, अरबी, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होता है। प्रतिमास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इस में अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार, लेख, चित्र आदि प्रस्तुत किये जाते हैं। इसकी गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली यह प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यन्त उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़ कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं के लिए वार्षिक चंदा (11 अंक) रु० 9-50 पै० है और अन्य ग्राहकों के लिए रु० 10-50 पै०।

भाषा (त्रैमासिक):

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की समस्याओं पर विचारों के आदान-प्रदान का एक मात्र मंच। समय-समय पर प्रकाशित विशेषांक पत्रिका के अतिरिक्त आकर्षण है।

मूल्य एक प्रति : 2-00 रुपये। वार्षिक 7-50 रुपये।

ग्राहक बनने के लिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, 15/16 नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 को अपना पूरा नाम तथा पता सूचित करें और अग्रिम वार्षिक चंदा भेजें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल कांगड़ी ... ालय
हरिद्वार
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए लें० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास लें० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – लें० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा
महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

5

हिंदी समाचार जगत

6-2-67

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817।66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 जनवरी 1967 अंक 5

- भाषा-संगम (भारतीय भाषा समिति)
- स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (नागरी प्रचारिणी सभा)
- हिंदी
  - * भारत सरकार में
  - * राजधानी में
  - * प्रादेशिक अंचल में
  - * विश्वविद्यालयों में
  - * विदेशों में (हिंदी पठन-पाठन की व्यवस्था)
- नए प्रकाशन

पाठकों से - -

नव वर्ष की मंगल कामनाओं के साथ, हिन्दी समाचार जगत का जनवरी 1967 का अंक प्रस्तुत है। इसमें पाठकों के सुझाव पर हिंदी के नए प्रकाशनों की जानकारी का स्तंभ भी जोड़ा गया है।

- संपादक

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 15।13, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सम्पन्न हुआ । अधिवेशन का उद्घाटन विदेश मंत्री श्री एम0 सी0 चागला ने किया । उप शिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन ने अधिवेशन की अध्यक्षता की । उप शिक्षा मंत्री के स्वागत भाषण और विदेश मंत्री के उद्घाटन भाषण के बाद संयुक्त शिक्षा सलाहकार डा0 परमेश्वर दीन शुक्ल ने विदेश मंत्री को धन्यवाद दिया । तत्पश्चात् कार्य सूची पर विचार किया गया जिनमें से प्रमुख विषय नीचे दिए जा रहे हैं :-

1- भारतीय भाषाओं के केन्द्रीय और राज्य संस्थानों की स्थापना

चौदह आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के लिए चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में पांच करोड़ 85 लाख रुपए के खर्च की परिकल्पना की गई है । इसमें से एक करोड़ रुपया केन्द्रीय क्षेत्र से और बाकी रुपया राज्य क्षेत्र से खर्च होगा । आधुनिक भारतीय भाषाओं और हिंदी का एक केन्द्रीय संस्थान अनुमानत: 50 लाख रुपए की लागत से खोला जाएगा जिसमें सब भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान होगा । एक भाषा की कृतियों का दूसरी भाषा में अनुवाद भी इस संस्थान की देख-रेख में होगा । इसके अतिरिक्त यह संस्थान विभिन्न विश्वविद्यालयों के भाषा विभागों, शोध-संस्थानों, भाषा संगमों और ऐसी ही अन्य संस्थाओं के कार्य में समन्वय स्थापित करेगा तथा अनुसंधान और अध्यापन के प्रशिक्षण की व्यवस्था करेगा ।

केन्द्रीय भाषा संस्थान के अतिरिक्त विभिन्न राज्यों में भी भाषा संस्थानों की स्थापना होगी । इस कार्य के लिए फिलहाल ढाई करोड़ रुपया परिकल्पित किया गया है । आधुनिक भारतीय भाषाओं का सम्यक् विकास करना इन संस्थानों का प्रमुख उद्देश्य होगा ताकि ये भाषाएं तेजी से समृद्ध हों और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सकें । इन संस्थानों के प्रमुख कार्य तथा अन्य विवरण अगले अंक में दिया जाएगा ।

(क्रमश:)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी - एक परिचय

काशी की नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना संवत् 1950 वि0 में तीन उत्साही छात्रों ने मिलकर की थी । आरंभ में इसका उद्देश्य मुख्यत: वक्तृत्व शक्ति को परिमार्जित और उन्नत करना था । बहुत दिनों तक इसी उद्देश्य की सिद्धि के निमित्त इसने कार्य किया । परन्तु शीघ्र ही इसकी दृष्टि हिंदी भाषा और साहित्य से संबद्ध उन विषयों की ओर आकृष्ट हुई जिन पर तब तक कोई कार्य नहीं हुआ था । इस प्रकार सभा के उद्देश्यों की व्यापकता उत्तरोत्तर विस्तृत होती गई और एक के बाद एक विशेष उपादेय और गंभीर विषय सभा के कार्यक्षेत्र के भीतर आते गए । धर्म, संप्रदाय, राजनीति आदि इतर विषयों से सर्वथा असंपृक्त रहती हुई यह सभा एकमात्र सारस्वत उद्देश्यों की सिद्धि अब तक मनोयोग पूर्वक करती आई है और उसी का यह परिणाम है कि आज इसकी गणना अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त उच्च कोटि की संस्थाओं में की जाती है ।

सभा की प्रवृत्तियां संप्रति जिन जिन दिशाओं में उन्मुख हैं उनमें से मुख्य इस प्रकार हैं :-

आर्यभाषा पुस्तकालय : सभा का यह पुस्तकालय हिंदी पुस्तकों का देश में सबसे बड़ा पुस्तकालय है । हिंदी के प्राय: समस्त प्रकाशित ग्रंथ, मुख्यत: आरंभिक प्रकाशन, एक मात्र इसी पुस्तकालय में सुलभ हैं । इसके हस्तलिखित विभाग में दस हजार से अधिक उल्लेखनीय हस्तलेख हैं । हिंदी साहित्य का उच्चस्तरीय अध्ययन और शोध, बिना इस पुस्तकालय की सहायता लिए, शक्य ही नहीं ।

हस्तलिखित ग्रंथों की खोज : संवत् 1957 से यह सभा हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का कार्य कर रही है । वैतनिक अन्वेषक नगर-नगर और गांव-गांव के प्रत्येक घर में जा जाकर हस्तलेखों का पता लगाते हैं, उनका परिचय अंकित करते हैं और जो ग्रंथ मिल सकते हैं उन्हें सभा के लिये प्राप्त करने का भी उद्योग करते हैं । इस प्रकार अब तक सैकड़ों अज्ञात लेखकों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवियों तथा ज्ञात कवियों आदि के सैकड़ों अज्ञात ग्रंथों का पता चला है । इसी खोज के फलस्वरूप हिंदी साहित्य का क्रमबद्ध और व्यवस्थित इतिहास प्रस्तुत हो सका है । यह खोज कार्य अभी तक जारी है ।

<u>प्रकाशन</u> : भिन्न भिन्न विषयों के उत्तमोत्तम ग्रंथों का प्रकाशन भी सभा का एक प्रमुख उद्देश्य है । अब तक सभा ने 600 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं जिनमें कतिपय प्रमुख पुस्तकें ये हैं :-

(1) हिंदी शब्दसागर (2) हिंदी वैज्ञानिक शब्दावली (3) हिंदी व्याकरण
(4) पृथ्वीराज रासो (5) हिंदी साहित्य का इतिहास (6) तुलसी ग्रंथावली
(7) सूरसागर (8) द्विवेदी अभिनंदन ग्रंथ

<u>नागरी प्रचारिणी पत्रिका</u> : शोध विषयक यह त्रैमासिक प्रकाशन सभा का मुखपत्र है । हिंदी में निर्विधान निकलती रहने वाली यह सबसे पुरानी पत्रिका है । हिंदी ही नहीं भारतीय भाषाओं भर में अपने ढंग की यह एकमात्र पत्रिका है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

<u>अन्यान्य सामयिक प्रकाशन</u> : नागरी प्रचारिणी पत्रिका के अतिरिक्त

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यज्ञान निकेतन : पश्चिमोत्तर अंचल में प्रचार कार्य को संचालित करते रहने के उद्देश्य से सुप्रसिद्ध हिंदी सेवी स्व० परिव्राजक स्वामी सत्यदेव जी ने अपना हरद्वार स्थित उक्त आश्रम इस सभा को दान कर दिया है जिसे केन्द्र बनाकर उक्त अंचल में प्रचार कार्य हो रहा है।

संकेतलिपि विद्यालय : हिंदी में संकेतलिपि (शार्टहैंड) का निर्माण और प्रशिक्षण इसी सभा के प्रयत्न से आरंभ हुआ था जिसके आद्य अभ्यासियों में स्व० श्री लाल बहादुर जी शास्त्री, मान० श्री त्रिभुवन नारायण सिंह एवं श्री अलगूराय जी शास्त्री जैसे महानुभाव थे।

नागरी मुद्रण : अपने प्रकाशनों की निरंतर बढ़ती हुई मांग को समय से पूरा करते रहने के लिए सन् 1953 से इस सभा ने अपना निजी मुद्रणालय चालू कर लिया। अब सभा के समस्त प्रकाशन यहीं छपते हैं। संप्रति इसमें एक ट्रेडिल मशीन और एक डबल डिमाई आकार की फ्लैट बेड मशीन है। सभी प्रकार के आवश्यक हिंदी और अंग्रेजी टाइप भी हैं। इससे संबद्ध एक दफ्तरी खाना भी है जिसमें पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं की जिल्दबंदी होती है।

स्व० आचार्य महावीर प्रसाद जी द्विवेदी ने अपने बहुमूल्य और अलभ्य ग्रंथों का संग्रह इस सभा के पुस्तकालय को प्रदान करने की कृपा की थी। उसी के साथ उन्होंने अपने संपादनकाल की 'सरस्वती' की संपादित पांडुलिपियां भी प्रदान कर दीं। ये पांडुलिपियां ऐतिहासिक महत्व की हैं। इनमें स्व० राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, स्व० श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी, स्व० पं० श्यामबिहारी मिश्र, पं० अंबिका प्रसाद वाजपेयी, पं० जनार्दन झा, श्री देवीप्रसाद 'पूर्ण' आदि हिंदी के दिग्गजों के हस्ताक्षरों के दर्शन और आचार्यवर की संपादनकला की झांकी मिलती है।

संप्रति सभा हिंदी विश्वकोश के संपादन प्रकाशन और अपने हिंदी के संशोधन परिवर्धन में दत्तचित्त है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० हिन्दी

* भारत सरकार में

– आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों में हिन्दी की प्रगति

आकाशवाणी के रायपुर, भोपाल, इन्दौर, नागपुर आदि केन्द्रों में हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर आवश्यकतानुसार हिन्दी में दिए जाते हैं। चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के अवकाश संबंधी मामलों में फाइल पर टिप्पणी हिन्दी में लिखी जाती है और स्वीकृति के ज्ञापन पत्र हिन्दी में जारी किए जाते हैं।

इन्दौर केन्द्र में अक्तूबर तथा नवम्बर मास में 3141 पत्र हिन्दी में प्राप्त हुए। इनमें से 1048 पत्रों के उत्तर हिन्दी में, 274 के हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में और शेष पत्रों के उत्तर श्रोताओं के कार्यक्रम में माइक्रोफोन द्वारा दिए गए।

करसियांग (दार्जिलिंग) केन्द्र में हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत ग्यारह कर्मचारियों ने प्राज्ञ परीक्षा पास की है। इस समय चौदह कर्मचारी प्राज्ञ और प्रवीण कक्षाओं में अध्ययन कर रहे हैं।

– दिल्ली केन्द्र द्वारा हिन्दी में प्रसारण

सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री राज बहादुर ने 6 दिसंबर को राज्य सभा में बताया कि आकाशवाणी का दिल्ली केन्द्र महीने भर में औसतन 349 घंटे 17 मिनट हिन्दी में प्रसारण करता है। अन्य भाषाओं के प्रसारणों का समय इस प्रकार है : अंग्रेजी 95 घंटे 31 मिनट, उर्दू 49 घंटे 31 मिनट, पंजाबी 33 घंटे 44 मिनट और बाकी भाषाएं 71 घंटे 55 मिनट।

– कृषि विपणन निदेशालय, नागपुर

निदेशालय के हिन्दी एकक के अतिरिक्त सांख्यिकीय अनुभाग ने भी नवंबर 1966 से कार्यालयीन काम-काज हिन्दी में प्रारंभ कर दिया है।

– केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, मद्रास क्षेत्र, मद्रास

कार्यालय में कुल 60 कर्मचारी हैं जिनमें से 20 कर्मचारी हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं, 13 कर्मचारी प्रशिक्षण ले रहे हैं और 6 को प्रशिक्षण से छूट दी गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- राष्ट्रीय बचत संगठन, उत्तर प्रदेश क्षेत्रीय कार्यालय

सरकारी कामकाज यथासंभव हिन्दी में ही किया जाता है। संगठन की प्रत्येक सभा में भाषण हिन्दी में ही दिए जाते हैं। अधिकांश प्रचार पुस्तकें हिन्दी में ही प्रकाशित होती हैं। हिन्दी पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाता है। अधिकारियों से चर्चा अधिकतर हिन्दी में ही होती है।

- सम्पदा निदेशालय, नई दिल्ली

हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत अब तक 114 कर्मचारी प्राज्ञ परीक्षा पास कर चुके हैं। निदेशालय के लगभग 140 फार्मों का हिन्दी अनुवाद अंतिम रूप से तैयार किया जा चुका है और इनमें लगभग 40 फार्म द्विभाषी रूप में छप चुके हैं। बहुत से फार्मों की साइक्लोस्टाइल प्रतियां उपलब्ध हैं। 250 रु0 से कम मासिक वेतन पाने वाले कर्मचारियों से संबंधित प्रतीक्षा-सूचियां (वेटिंग लिस्ट) हिन्दी में निकाली जाती हैं। निदेशालय में एक वाचनालय खोला गया है। हिन्दी में प्राप्त पत्रों के उत्तर यथासंभव हिन्दी में ही दिए जाते हैं।

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद (सम्पदा निदेशालय शाखा) द्वारा आयोजित हिन्दी टिप्पण और मसौदा-लेखन प्रतियोगिता में 21 कर्मचारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता की तीन महीने की अवधि में प्रतियोगियों ने सरकारी काम-काज में लगभग दस हजार हिन्दी टिप्पणियां व मसौदे लिखे।

- शिक्षा मंत्रालय

हिन्दी पुस्तक प्रतियोगिता की अंतिम तिथि बढ़ी

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के हिन्दी लेखकों द्वारा लिखी पुस्तकों की प्रतियोगिता की अंतिम तिथि बढ़ा कर 15 जनवरी 1967 कर दी है।

- अखिल भारतीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता

शिक्षा मंत्रालय की ओर से आयोजित इस प्रतियोगिता में लगभग 70 प्रतियोगियों ने भाग लिया। समारोह का उद्घाटन शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त शिक्षा सलाहकार डा0 परमेश्वर दीन शुक्ल ने किया। उप शिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन ने 24 प्रतियोगी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी और अंग्रेजी

केन्द्रीय स्कूल संगठन के 20 स्कूलों में अगले वर्ष से अंग्रेजी के साथ ही हिन्दी माध्यम से भी शिक्षा दी जायेगी। इस समय देश में कुल 163 केन्द्रीय स्कूल हैं, अगले वर्ष 21 स्कूल और खुलेंगे।

अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के उदीयमान हिन्दी लेखकों का प्रशिक्षण

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के उदीयमान हिन्दी लेखकों को कविता, कहानी और एकांकी आदि लिखने का गहन प्रशिक्षण देने के लिए जनवरी 1967 में एक कार्य शिविर आयोजित करने का निश्चय किया है। इस शिविर में लगभग 25 लेखकों को दस दिन तक प्रशिक्षण दिया जायेगा। विस्तृत जानकारी के लिए निदेशालय के निदेशक से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

- ट्रेड मार्क्स रजिस्ट्री, बंबई में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग

कार्यालय के कर्मचारी हिन्दी शिक्षण कक्षाओं में प्रशिक्षण ले रहे हैं, आशा है शीघ्र ही सभी कर्मचारी आवश्यक प्रशिक्षण पूरा कर चुकेंगे। कार्यालय में बहुत से काम हिन्दी में होने लगे हैं। हाजिरी-रजिस्टर हिन्दी में रखे जाते हैं। छुट्टी की अर्जियां अधिकतर हिन्दी में दी जाती हैं। हिन्दी जानने वाले अधिकारियों से हिन्दी में ही हस्ताक्षर करने की प्रार्थना की गई है।

- भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद

हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों को हिन्दी सिखाने के लिए सन् 1962 से एक केन्द्र चल रहा है। प्राज्ञ, प्रवीण और प्रबोध में क्रमश: 25, 27 और 21 कर्मचारी प्रशिक्षण ले चुके हैं। इस समय जून 1967 की प्राज्ञ परीक्षा में बैठने के लिए 35 कर्मचारी प्रशिक्षण ले रहे हैं।

- केरल : त्रिवेन्द्रम में हिन्दी अध्यापन कालेज की स्थापना

भारत सरकार ने त्रिवेन्द्रम में हिन्दी अध्यापन के लिए एक कालेज खोलने का अनुमोदन दे दिया है। कालेज अगले वर्ष प्रारंभ हो जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

- राष्ट्रभाषा की प्रगति में सेठ गोविन्द दास का महान योग

राष्ट्रपति भवन के अशोक कक्ष में 8 दिसंबर को हिन्दी भवन की ओर से वयोवृद्ध साहित्यकार तथा वरिष्ठ संसद सदस्य सेठ गोविन्ददास का अभिनंदन किया गया। उप राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन तथा वरिष्ठ नेता श्री मोरार जी देसाई के अतिरिक्त, अनेक स्थानीय साहित्यिक उपस्थित थे जिन्होंने सेठ जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सम्यक् प्रकाश डाला।

- सरकारी काम-काज में हिन्दी को प्रोत्साहन

स्वराष्ट्रमंत्री श्री चव्हाण ने 30 नवंबर को हिन्दी प्रचार संस्थाओं के एक शिष्टमंडल को आश्वासन दिया कि सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए शीघ्र ही कोई ठोस कार्यक्रम निर्धारित किया जाएगा।

- 'चिरंजीत के पांच प्रहसन' का विमोचन

उप राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने 25 दिसम्बर 1966 को हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री चिरंजीत की नई पुस्तक 'चिरंजीत के पांच प्रहसन' का विमोचन किया।

- साहित्य संगम में विचार-गोष्ठी :

स्थानीय साहित्यिक संस्था 'साहित्य-संगम' के तत्वावधान में तारीख 25-12-66 को श्री मधुकर शास्त्री की अध्यक्षता में एक विचार गोष्ठी संपन्न हुई जिसमें अनेक स्थानीय विद्वानों ने भाग लिया। परिचर्चा का विषय था - 'आधुनिक साहित्यकार का समाज के प्रति उत्तरदायित्व'।

- केरल के महान हिन्दी सेवक के सम्मान में मिलन गोष्ठी

आचार्य-प्रवर प्रो० चन्द्रहासन के सम्मान में स्थानीय हिन्दी भवन की ओर से 17 दिसंबर को डा० हरिवंशराय बच्चन की अध्यक्षता में एक मिलन-गोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें डा० रामधारी सिंह दिनकर, संसद सदस्य श्री गंगा शरण सिंह, डा० गोपाल शर्मा आदि ने प्रो० चन्द्रहासन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में :

आंध्र प्रदेश में हिन्दी का प्रचार-प्रसार - एक विहंगम दृष्टि

आंध्र प्रदेश के साथ हिंदी का संबंध पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही जोड़ा जा सकता है जब वहां दक्खिनी हिंदी का रूप विकसित होने लगा था। कुछ विद्वान तो इसी कारण आंध्र प्रदेश को आधुनिक हिंदी की जन्म भूमि तक मानते हैं।

संभवत: इसी निकट संबंध के कारण आंध्र प्रदेश के लोगों का हिंदी के प्रति हमेशा ही आकर्षण रहा है। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में देशव्यापी सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय चेतना ने हिंदी को जब सामान्य सम्पर्क भाषा का दायित्व उठाने के लिए चुना तो आंध्र प्रदेश ने बड़े उत्साह से उसका स्वागत किया। 1918 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की स्थापना के साथ-साथ आंध्र-प्रदेश में हिंदी के प्रचार में गति आई। 1937 में विद्यालयों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन को सरकार ने मान्यता प्रदान की। 1937 से 1949 तक की अवधि में हिंदी का प्रचार नगरों और कस्बों से आगे गांवों तक फैल गया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिंदी के प्रचार-प्रसार में और भी वृद्धि हुई। इस समय आंध्र प्रदेश में न केवल हिंदी का अध्ययन व्यापक रूप से हो रहा है अपितु आंध्र प्रदेश के अनेक मेधावी लेखक मौलिक लेखन तथा शोध एवं अनुवाद द्वारा हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि भी कर रहे हैं। स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में सर्वत्र ही महान योगदान दिया है। आंध्र प्रदेश में ये संस्थाएं पीछे नहीं रही हैं। इन संस्थाओं में प्रमुख है, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद, जिसकी परीक्षाओं में औसतन् 41823 विद्यार्थी प्रतिवर्ष सम्मिलित होते हैं।

स्कूल स्तर पर हिंदी का शिक्षण :

स्कूल स्तर हिन्दी का शिक्षण चतुर्थ दशक में ही प्रारंभ हो गया था। 1965-66 से पहले तेलंगाना में चौथी कक्षा से और शेष आंध्र प्रदेश में छठी कक्षा से हिंदी दूसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जाती थी। अब समस्त राज्य में समान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा प्रणाली लागू की गई है जिसके अनुसार हिंदी समस्त आंध्र प्रदेश में पांचवी कक्षा से अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है, यहां तक कि एस० एस० एल० सी० तथा एच० एस० सी० की परीक्षाओं के लिए भी हिन्दी एक अनिवार्य विषय है। विभिन्न कक्षाओं में अनिवार्य विषय के रूप में हिंदी के शिक्षण के लिए प्रति सप्ताह घंटे इस प्रकार नियत किए गए हैं :-

कक्षा	आंध्र (हाई स्कूल)	तेलंगाना (हाई स्कूल)	तेलंगाना (हायर सेकंडरी स्कूल)
पांचवी	4	4	
छठी	4	4	
सातवीं	4	4	
आठवीं	2	5	
नवीं	2	4	6
दसवीं	2	4	5
ग्यारहवीं	2	4	5
बारहवीं	3	-	5

31-3-64 तक के सर्वेक्षण के अनुसार आंध्र प्रदेश में विभिन्न प्रकार के स्कूलों की संख्या 42732 थी जिनमें से 41681 स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जाती थी। शेष 1051 स्कूल विशिष्ट शिक्षा के स्कूल थे अत: वहां हिंदी नहीं पढ़ाई जाती थी। उपर्युक्त स्कूलों में विभिन्न कक्षाओं में हिंदी पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या कुल मिला कर 4426083 थी। अनेक स्कूलों में हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम है। ऐसे स्कूलों की संख्या 40 है। इनमें से अधिकांश तेलंगाना क्षेत्र में स्थित हैं।

(क्रमश:)

-0-

- दिल्ली : दिल्ली प्रशासन में हिंदी निदेशालय की स्थापना का सुझाव

गृह मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के अंतर्गत नियुक्त स्थायी समिति ने दिल्ली प्रशासन में हिंदी निदेशालय खोलने की सिफारिश की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- राजस्थान : संस्कृत शिक्षण में द्वितीय

राज्य में 15000 छात्र संस्कृत पढ़ते हैं जिनमें दो हजार लड़कियां हैं और करीब 1500 अनुसूचित जातियों के छात्र हैं।

संस्कृत की 120 शैक्षणिक संस्थाएं हैं। अधिकांश गैर-सरकारी हैं और उन्हें सरकार से अनुदान मिलता है। संस्कृत के पठन-पाठन और शिक्षण में उत्तर प्रदेश के बाद राजस्थान का दूसरा स्थान है।

राज्य शिक्षा संस्थान में हिंदी प्रकोष्ठ

प्रारंभिक तथा माध्यमिक स्तर पर हिंदी शिक्षण को प्रकृष्ट बनाने तथा मौलिक प्रयोगों और अनुसंधान को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से राज्य शिक्षा संस्थान, उदयपुर के अंतर्गत हिंदी प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है।

राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ : शोधकार्य

समिति का उद्देश्य राजस्थान की अप्रकाशित ज्ञान राशि का उद्घाटन करना, उसका प्रकाशन करना एवं साहित्य की श्रीवृद्धि करना है। समिति की ओर से 'वरदा' नामक त्रैमासिक शोध पत्रिका नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है। 'राजस्थानी लोक लहरी' नाम से लोक साहित्य के तीन संकलन प्रकाशित हो चुके हैं।

- हरियाणा : राजभाषा हिन्दी का सभी स्तरों पर प्रयोग

शिक्षा-मंत्री श्री निहाल सिंह ने पटियाला में पंजाब हिंदी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्ष पद से घोषणा की कि हरियाणा सरकार शीघ्र ही सभी स्तरों पर हिंदी को प्रशासन की भाषा बना रही है। विधान सभा की कार्रवाई भी हिंदी में ही होगी और त्रिभाषा सूत्र लागू रहेगा।

- चंडीगढ़ : हिन्दी साहित्य के विकास के लिए संस्थान की स्थापना

स्थानीय साहित्यकारों और हिंदी प्रेमियों ने हिंदी साहित्य के विकासार्थ एक संस्था स्थापित करने का निश्चय किया है। डा० [illegible] भी संगठन समिति के संयोजक नियुक्त किए गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

- आन्ध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग : एक परिचय

आन्ध्र विश्वविद्यालय का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग अभी शैशवावस्था में है। इसकी स्थापना सन् 1965 में ही हुई है, हालांकि इससे पहले भी बी० काम० पाठ्यक्रम में हिंदी का पठन-पाठन एक अनिवार्य विषय के रूप में होता रहा है। इस समय विभाग के प्राध्यापक प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी और डा० के० राजशेषगिरी राव के मार्गदर्शन में 12 छात्र एम० ए० पूर्वार्द्ध में और 11 छात्र एम० ए० उत्तरार्द्ध में हिन्दी का उच्च अध्ययन कर रहे हैं। सभी छात्र अहिंदी भाषी हैं। इसी वर्ष पहला छात्र-दल हिंदी में एम० ए० पास करेगा।

अध्यापन के अतिरिक्त, विभाग के अंतर्गत शोधकार्य की भी व्यवस्था है। इस समय दो छात्र पी-एच० डी० के लिए शोध-कार्य कर रहे हैं। विभाग के प्राध्यापकों और छात्रों के शोध-निबंध आन्ध्र साहित्य अकादमी हैदराबाद की पत्रिका 'पद्माकर' और सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशित होते रहते हैं। प्रो० रेड्डी ने हिंदी और तेलुगु तथा दक्षिण भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन पर हिंदी में पुस्तकें लिखी हैं और डा० राव ने आन्ध्र के लोक गीतों पर हिंदी में शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है।

छात्रों को हिंदी में सर्जनात्मक और शोध कार्य के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से विभाग के अंतर्गत विविध साहित्यिक कार्यक्रम होते रहते हैं। अगले सत्र में हिंदी और दक्षिणी भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदान से एक संगोष्ठी आयोजित करने का विचार है। एम० ए० पूर्वार्द्ध के दो छात्रों को भारत सरकार की ओर से छात्रवृत्तियां मिल रही हैं।

विश्वविद्यालय की ओर से हिन्दी के शिक्षण और प्रसार के लिए जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है वह है - अंशकालिक हिन्दी डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संचालन। सामान्य रूप से सभी छात्रों को हिंदी की शिक्षा देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक: वी० मेजेन्त्सेफ
   अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use)
   लेखक: ए० एफ० यौफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry)
   ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु० हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : वी० कुद्रयावत्सेव
   अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले० डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ: 183 मूल्य: 4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर
   अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०: 268 मूल्य: 8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा
    अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले० वी० फेडिंस्की अनु० पवनकुमार जैन पृष्ठ: 122 मूल्य: 2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स
    अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses)
    ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर
    अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ: 142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8** और **31, थिएटर कम्युनिकेशन्स् बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817।66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 फरवरी 1967 अंक 6

0 भाषा-संगम (भारतीय भाषा समिति)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

हिन्दी शिक्षकों और प्रचारकों की आवश्यकता

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ऐसे योग्य हिन्दी शिक्षकों/प्रचारकों की एक सूची तैयार कर रहा है जो विदेशों में विदेशी भाषाओं के माध्यम से हिन्दी पढ़ाने का कार्य कर सकें। उपयुक्त एवं इच्छुक शिक्षक/प्रचारक कृपया अपनी योग्यता और अनुभवों का विवरण निदेशक, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, 15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-6 को भेजें।

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा-संगम

भारतीय भाषा समिति - एक परिचय

(गतांक से आगे)

(1) आधुनिक भारतीय भाषाओं में शोध और अनुसंधान करना,

(2) क्षेत्रीय भाषाओं की पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण कार्य में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की एजेंसी के रूप में कार्य कर

(3) क्षेत्रीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तर के विषयों की पुस्तकें तैयार

(4) क्षेत्रीय भाषाओं की आधारभूत शब्दावली और तुलनात्मक व्याकरण तैयार करना,

(5) द्विभाषाविदों और बहुभाषाविदों को प्रशिक्षण देना और कालेजों के शिक्षकों के लिए अनुस्थापन पाठ्यक्रम (ओरिएंटेशन कोर्स) चलाना ता वे भारतीय भाषाओं के माध्यम से अध्यापन कार्य कर सकें,

(6) क्षेत्रीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य को बढ़ावा देना,

(7) अन्य ऐसे कार्यक्रम जो राज्य की भाषा के विकास के लिए उपयोगी हों

2- हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दीतर भाषाओं के शिक्षकों की नियुक्ति

त्रिभाषा सूत्र को सफलता से कार्यान्वित करने के लिए हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दीतर भाषाओं के शिक्षक और अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा के शिक्षक नियुक्त किए जायेंगे। इस कार्य के लिए चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में 95 लाख रुपये की व्यवस्था की गई है।

3- भारतीय भाषाओं के विकास के लिए स्वैच्छिक संस्थाओं को सहायता :

इस योजना के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के संदर्भ ग्रंथों जैसे विश्वकोश, शब्द कोश ग्रंथ सूचियां, साहित्य संकलन, ज्ञान कोश आदि के प्रणयन के लिए, सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा भाषा वैज्ञानिक ग्रंथों के प्रकाशन के लिए, प्राचीन पाण्डुलिपियों के सम्पादन और प्रकाशन के लिए और विभिन्न भाषाओं की स्वयं-शिक्षक पुस्तकें आदि तैयार करने के लिए आर्थिक सहायता दी जाएगी। साहित्यिक सम्मेलनों, कार्य शिविरों तथा पुस्तक प्रदर्शनियों के लिए भी सहायता देने की व्यवस्था है। एक भाषा की पुस्तकों को अन्य भाषा की लिपि में प्रकाशन को भी प्रोत्साहन दिया जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त योजनाओं के अतिरिक्त, आधुनिक भारतीय भाषाओं की कुछ सामान्य योजनाओं पर भी विचार किया गया जो आगे दी जा रही हैं :-

केन्द्रीय योजनाएं

(क) विभिन्न भारतीय भाषाओं के द्विभाषी कोशों का प्रणयन ।

(ख) भारत का भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण, भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान ।

(ग) हिन्दी पुस्तकों का क्षेत्रीय लिपियों में और क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकों का देवनागरी में प्रकाशन ।

(घ) राज्यों को मुफ्त वितरण के लिए पुस्तकों की खरीद ।

राज्य योजनाएं

(क) विभिन्न भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक व्याकरण तैयार करना ।

(ख) विभिन्न भारतीय भाषाओं के मानक ग्रंथों का प्रणयन, अनुवाद और प्रकाशन ।

(ग) आधुनिक भारतीय भाषाओं में विश्वकोश तैयार करना ।

(घ) अध्ययन शिविरों और (ङ) प्रदर्शनियों का आयोजन ।

(च) आधुनिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां ।

(छ) वैज्ञानिक पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कार ।

(ज) जरूरतमंद लेखकों और विद्वानों को वित्तीय सहायता ।

उक्त योजनाओं के अतिरिक्त, भारतीय भाषाओं और उनके साहित्य के विकास के लिए योजनाएं बनाने के हेतु चार क्षेत्रीय समितियां बनाने पर भी विचार किया गया । भारतीय भाषाओं में पुस्तकों के प्रकाशन को प्रोत्साहन देने, विभिन्न भाषाओं के शिक्षण को लोकप्रिय बनाने और क्षेत्रीय भाषाओं के विकास के लिए किए गए कार्य की प्रगति की समीक्षा का काम भी इन्हीं समितियों को सौंपा जाएगा ।

ऊपर दी गई सभी योजनाएं अभी भारत सरकार के विचाराधीन हैं । आशा है शीघ्र ही, अनुमोदन मिलने पर, इनका कार्यान्वय प्रारंभ हो जाएगा ।

(समाप्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

-0-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास - संक्षिप्त परिचय

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना 1918 में महात्मा गांधी की प्रेरणा से हुई थी। सभा का लक्ष्य तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ भाषी क्षेत्रों में हिंदी का प्रचार करना है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए इस प्रयास का समारंभ स्व० डा० सी० पी० रामास्वामी अय्यर की अध्यक्षता में स्व० डा० एनी बेसेंट ने किया था। हिंदी की सर्वप्रथम कक्षा महात्मा गांधी के सुपुत्र स्व० देवदास गांधी ने प्रारंभ की थी। उनकी सहायता के लिए स्वामी सत्यदेव परिव्राजक और पंडित हृषिकेश शर्मा दक्षिण में आए थे। इसके बाद उत्तर के अनेक उत्साही कार्यकर्ता दक्षिण में हिंदी प्रचार के काम में लगे। इनमें पं० रघुवर दयालु मिश्र, पं० अवध नंदन, प्रताप नारायण वाजपेयी, पं० देवदूत विद्यार्थी, पं० रामानंद शर्मा, ब्रजनंदन शर्मा, राम भरोसे श्रीवास्तव और नागेश्वर मिश्र के नाम उल्लेखनीय हैं।

दूसरी ओर दक्षिण भारत से उत्साही कार्यकर्ताओं के दल उत्तर भारत में हिंदी प्रचार का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेजे गए थे। इन लोगों में पं० हरिहर शर्मा, श्री क० म० शिवराम, श्री शिवन शास्त्री और श्री सुब्बाराव प्रमुख हैं। इसके बाद तो दक्षिण भारत से हज़ारों की संख्या में युवक और युवतियां इस काम में जुट गई। इन उत्साही कार्यकर्ताओं ने अनेक बाधाओं और कठिनाइयों को सहते हुए धन, यश अथवा पद की कामना से दूर रहकर निष्काम भावना से हिंदी के प्रचार को राष्ट्र का पुण्य कार्य मान कर आगे बढ़ाया। आज यह संस्था देश की महान हिंदी सेवी संस्था है। 1964 में केन्द्रीय सरकार ने इसे राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित कर दिया है। इस समय सभा के लगभग 6000 प्रचार केन्द्रों में लगभग 9300 प्रशिक्षित प्रचारक हिंदी कक्षाएं चला रहे हैं। अब तक लाखों की संख्या में दक्षिण भारत के लोग हिंदी का ज्ञान अर्जित कर चुके हैं। इस का श्रेय सभा के इन्हीं उत्साही प्रचारकों तथा कार्यकर्ताओं को है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा की सफलता का एक कारण यह भी है कि इसे देश के उच्च कोटि के नेताओं तथा कर्मठ कार्यकर्ताओं का हमेशा सहयोग मिलता रहा है । सभा के अध्यक्ष पद को अब तक स्व० बापू, स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद, स्व० श्री लाल बहादुर शास्त्री और श्रीमती इंदिरा गांधी ने विभूषित किया है । सभा के उपाध्यक्षों में सर्वश्री सी० राजगोपालाचार्य, स्व० पट्टाभिसीतारामय्या, स्व० के० नागेश्वर राव पन्तुलु, एस० निजलिंगप्पा, स्व० एस. सत्यमूर्ति, स्व० एन. वी. राघवन्, रामनाथ गोयनका आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । इस समय सभा के उपाध्यक्ष डा० बी० रामकृष्णाराव और श्री एस० निजलिंगप्पा और प्रबंध निधिपालक श्री के० वेंकट स्वामी नायुडु हैं । अन्य पदाधिकारियों में पं० हरिहर शर्मा सर्वश्री मो० सत्यनारायण, एस० आर० शास्त्री एस० महालिंगम, प्रो० ना० नागप्पा, प्रो० चन्द्रहासन, स्व० दामोदरन् उण्णि, प्रो० पी०के० केशवन नायर, श्री पी० के० नारायण नायर आदि अनेक व्यक्तियों के नाम उल्लेखनीय हैं ।

<u>सभा की शाखाएं</u> :- सभा की चार प्रांतीय शाखाएं हैदराबाद, धारवाड़, तिरुच्चिरापल्ली और एरणाकुलम में स्थापित हैं जो क्रमश: आंध्र प्रदेश, मैसूर, तमिलनाड और केरल राज्यों में हिंदी प्रचार कार्य कर रही हैं । सभा का एक शाखा कार्यालय दिल्ली में भी है । मद्रास नगर में सभा ने नगर कार्यालय भी स्थापित किया है ।

<u>सभा के प्रमुख विभाग</u> :- सभा के विभिन्न कार्यकलापों को सुव्यवस्थित रूप से चलने के लिए सभा के कई विभाग हैं । इन में प्रधान मंत्री कार्यालय, अर्थ विभाग, परीक्षा विभाग, शिक्षा विभाग, साहित्य विभाग, पत्रिका विभाग, पुस्तक बिक्री विभाग, प्रेस विभाग, नगर कार्यालय, स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग आदि प्रमुख हैं ।

<u>हिंदी प्रचार प्रेस</u> :- सभा के प्रेस में हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, मराठी, संस्कृत और अंग्रेजी की उत्तम छपाई का प्रबंध है । प्रेस की एक शाखा हैदराबाद में भी है और प्रांतीय शाखाएं अपने यहां अलग-अलग प्रेस चला रही हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रिकाएं :- सभा के मुख्यालय से दो पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। 'हिंदी प्रचार समाचार' सभा की मुख पत्रिका है। 'दक्षिण भारत' सभा की त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका है जिसमें दक्षिण भारतीय भाषाओं की रचनाओं के हिंदी अनुवाद और उच्च स्तर के मौलिक साहित्यिक लेख प्रकाशित होते हैं। इन पत्रिकाओं के वर्तमान सम्पादक एस0 आर0 शाङ्र्गपाणि हैं।

इनके अतिरिक्त आंध्र शाखा से 'स्रवन्ती', मद्रास शाखा से 'हिंदी पत्रिका' कर्नाटक शाखा से 'भारतवाणी' और केरल शाखा से 'केरल भारती' पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं।

पुस्तकालय :- सभा के हिंदी पुस्तकालय में भिन्न-भिन्न विषयों पर 23310 ग्रंथ हैं। हिंदी की लगभग सभी पत्रिकाएं पुस्तकालय में आती हैं।

शिक्षा विभाग :- योग्य हिंदी अध्यापकों और प्रचारकों को तैयार करने के लिए सभा के शिक्षा विभाग के मार्गदर्शन में हिंदी प्रचारक विद्यालय नामक प्रशिक्षण विद्यालय तथा प्रवीण विद्यालय चलाए जाते हैं। मद्रास में एक महिला प्रशिक्षण विद्यालय भी चलाया जाता है। इन विद्यालयों से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों को 'हिंदी प्रचारक' प्रमाणपत्र दिया जाता है। इन विद्यालयों को सरकारी मान्यता प्राप्त है। इस समय मद्रास, तिरुच्चि, मदुरै, तिरुवनंतपुरम, एरणाकुलम, कोल्लम, कोषिक्कोड, विजयवाडा, चित्तूर, नेल्लूरी, बंगलूर और हुबली में हिंदी प्रचारक विद्यालय चल रहे हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों पर स्थित 31 प्रवीण विद्यालय चल रहे हैं।

परीक्षा विभाग :- प्रचार कार्य को सुसंगठित तथा शिक्षण को क्रमबद्ध और स्थायी बनाने के उद्देश्य से सभा क्रमबद्ध परीक्षाओं का आयोजन करती है। 'प्राथमिक', 'मध्यमा' और 'राष्ट्रभाषा' प्रारंभिक परीक्षाएं तथा प्रवेशिका 'विशारद' और 'प्रवीण' उच्च परीक्षाएं हैं और 'हिंदी प्रचारक' प्रशिक्षण परीक्षा है। इन परीक्षाओं में प्रति वर्ष औसतन 138450 विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं। 1961 से 1966 की अवधि में आंध्र, तमिल, केरल तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैसूर और मद्रास से क्रमश: 247051, 127444, 150666, 257876 और 47685 विद्यार्थी विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित हुए ।

स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग :- हिंदी साहित्य की उच्चतम शिक्षा को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से सभा की ओर से 1964 में एक स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग खोला गया है । इस विभाग की व्यवस्था, स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान परिषद एवं बोर्ड आफ स्टडीज़ के सुझावों के अनुसार, कुलपति और कुल सचिव करते हैं । अध्यापन कार्य के लिए विद्वान प्राध्यापक नियुक्त है । पीएच0 डी0 की उपाधि के लिए शोध कार्य करने की सुविधा एवं मार्गदर्शन भी इस विभाग द्वारा दिया जाता है ।

साहित्य विभाग :- विभाग द्वारा अब तक लगभग 350 पुस्तकें तैयार की जा चुकी हैं । हिंदी के माध्यम से अपने-आप दक्षिण भारतीय भाषाएं सीखने के लिए तथा दक्षिण भारतीय भाषाओं के माध्यम से स्वयं हिंदी सीखने के लिए `स्वयं शिक्षक' और शब्दकोश प्रकाशित किए गए हैं ।

हिंदी टाइप तथा आशुलिपि (शार्टहैंड) :- सन् 1949 से मद्रास में हिंदी टाइपिंग के वर्ग चलाए जा रहे हैं । इनमें प्रारंभिक उच्च और हाइस्पीड परीक्षाएं ली जाती हैं । मद्रास, त्रिरुच्चि, मदुरै, हैदराबाद, तूत्तुक्कुडी, विजयवाड़ा, एरणाकुलम, कोषिक्कोड, तिरुवनंतपुरम आदि केन्द्रों में भी हिंदी टाइपिंग के वर्ग चलाए जाते हैं ।

कला विभाग :- इस विभाग के अंतर्गत कला भारती नामक समिति द्वारा हिंदी के नाटक समय-समय पर प्रस्तुत किए जाते हैं ।

सरकारी अनुदान :- सभा के विभिन्न कार्य-कलापों पर प्रति वर्ष लगभग 13,35,000 रुपये खर्च होते हैं । इसकी आंशिक पूर्ति के लिए सरकार अनुदान देती है । 1965-66 के लिए यह अनुदान राशि 70,979 रुपये थी ।

= = 0 0 = =

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिन्दी

* भारत सरकार में

+ शिक्षा मंत्रालय : हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनियों का आयोजन

मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा गत 25 दिसंबर से 7 जनवरी के बीच अहिन्दी भाषी प्रदेशों में तीन प्रदर्शनियां आयोजित की गई जिनमें 32 विभिन्न विषयों की लगभग डेढ हजार पुस्तकें प्रदर्शित की गई।

पहली द्विदिवसीय प्रदर्शनी कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बंगलौर के तत्वावधान में आयोजित की गई। मैसूर राज्य के संयुक्त शिक्षा निदेशक श्री के० रामचन्द्र राव ने प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कहा - मैं पुस्तकों की संख्या, स्तर और साज-सज्जा से बहुत प्रभावित हुआ हूं। हमारी पुस्तकों का स्तर किसी भी विकसित देश के आधुनिक प्रकाशनों के स्तर से किसी प्रकार नीचा नहीं है। राज्य के रेशम-उत्पादन उपमंत्री ने कहा : मुझे प्रसन्नता हुई कि राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का विकास द्रुतगति से हो रहा है।

दूसरी प्रदर्शनी दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (तमिलनाड) तिरुच्चि द्वारा आयोजित हिन्दी प्रचारक सम्मेलन एवं संगोष्ठी के अवसर पर की गई। केन्द्रीय उपशिक्षा मंत्री श्री भक्त दर्शन ने अपने भाषण में पुस्तक-प्रदर्शनियों के महत्व का निरूपण करते हुए अधिकांश प्रदर्शित पुस्तकें सभा को दान में देने की घोषणा की। संसद सदस्य श्री जी० रामचन्द्रन् ने कहा : प्रदर्शनी देखकर इस बात का भली भांति पता चलता है कि भारत की महान सम्पर्क भाषा (हिन्दी) का विकास कितनी तीव्र गति से हो रहा है।

तीसरी प्रदर्शनी साहित्य प्रवर्तक कोआपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड, कोट्टायम (केरल) के तत्वावधान में आयोजित की गई। इसका उद्घाटन महात्मा गांधी कालेज त्रिवेन्द्रम के प्रिंसिपल श्री पी० मन्मथन ने किया।

इससे पहले हैदराबाद में भी एक प्रदर्शनी हो चुकी है। शीघ्र ही पूर्वांचल के राज्यों में भी प्रदर्शनियां आयोजित करने की योजना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

... हिन्दी में भी प्रकाशित होगी

यूनेस्को की पत्रिका 'करियर' हिन्दी और तमिल में शीघ्र ही प्रकाशित होगी। पत्रिका के हिन्दी और तमिल संस्करणों के प्रकाशन की देखभाल के लिए श्री रमेश थापर की अध्यक्षता में एक सलाहकार समिति बनाने का विचार किया गया है।

+ सूचना और प्रसारण मंत्रालय :

मंत्रालय के प्रकाशन विभाग ने भारतीय लिपियों पर एक पुस्तक प्रकाशित की है। इसमें भारतीय लिपियों के विकास पर दुर्लभ चार्ट दिये गये हैं।

पुस्तक में बताया गया है कि सभी भारतीय लिपियों का जन्म प्राचीन ब्राह्मी लिपि से हुआ है। इससे भारत की आधारभूत एकता प्रकट होती है।

पुस्तक में फारसी-अरबी और रोमन लिपियों के विकास पर भी दो लेख हैं। इन लिपियों के विकास पर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है।

इस ग्रंथ में सुप्रसिद्ध विद्वानों के आकाशवाणी से प्रसारित सात भाषण हैं। विद्वानों के नाम हैं : डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या, डा० वी० एस० अग्रवाल, डा० महेश्वर नियोग, प्रो० टी० पी० मीनाक्षीसुन्दरम, डा० के० वी० राव, प्रो० एस० मुजीब और प्रो० वी० के० गोकाक।

आकाशवाणी, त्रिवेन्द्रम

लैटर-हैड हिन्दी व अंग्रेजी में मुद्रित हुए हैं। नाम पट्टिकाएं हिन्दी और अंग्रेजी में बनाई गई हैं। हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत 15 कर्मचारी प्राज्ञ और प्रवीण परीक्षाएं पास कर चुके हैं। इस समय "प्रबोध" में 4 कर्मचारी प्रशिक्षण ले रहे हैं। पुस्तकालय में भी हिन्दी पुस्तकें बढ़ाने की व्यवस्था की जा रही है।

आकाशवाणी, विजयवाड़ा

हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत 27 कर्मचारी (प्रबोध में 13, प्रवीण में 6 और प्राज्ञ में 8) प्रशिक्षण ले रहे हैं। 12 कर्मचारी हिन्दी प्राज्ञ परीक्षा पास कर चुके हैं।

आकाशवाणी, रायपुर

हिन्दी में 187 पत्र गत दिसंबर में प्राप्त हुए। तीन का उत्तर लिखित रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हिन्दी में ही दिया गया । शेष पत्रों के उत्तर श्रोताओं के कार्यक्रम में माइक्रोफोन द्वारा दिए गए । केन्द्र में कार्यक्रम सम्बन्धी विचार विमर्श हिन्दी में ही होता है । हिन्दी में प्राप्त पत्रों के संबंध में हिन्दी में ही टिप्पणी लिखी जाती है । ग्रामीण अनुभाग और श्रोताओं से प्राप्त पत्रों से सम्बन्धित कार्यक्रम और सभी मामले तथा देहाती रेडियो गोष्ठी, आकाशवाणी कार्यक्रम सूची आदि से सम्बन्धित रिपोर्ट हिन्दी में ही तैयार की जाती है ।

आकाशवाणी, नागपुर :

हिन्दी में 63 पत्र प्राप्त हुए । 42 पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए । शेष के उत्तर श्रोताओं के कार्यक्रम में माइक्रोफ़ोन पर दिए गए ।

193 निर्धारित फार्मों में से दो फार्मों का हिन्दी अनुवाद तैयार किया गया । उन्हें हिन्दी और अंग्रेजी में मुद्रित भी कराया गया ।

आकाशवाणी, इन्दौर

2582 पत्र हिन्दी में प्राप्त हुए जिनमें से 621 पत्रों के उत्तर हिन्दी में लिखित रूप में भेजे गए । शेष पत्रों के उत्तर श्रोताओं के कार्यक्रम में माइक्रोफ़ोन पर दिए गए।

+ निर्माण तथा आवास मंत्रालय : प्रकाशन शाखा, दिल्ली :

हिन्दी में प्राप्त सभी पत्र हिन्दी में ही डायरी किए जाते हैं तथा उनके उत्तर भी हिन्दी में ही भेजे जाते हैं । इसके अलावा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों से सम्बन्धित सभी पत्र व्यवहार हिन्दी में अथवा अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी में अनुवाद सहित किया जाता है । कार्यालय में नाम और संकेत पट्टिकाएं हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में बनाई गई हैं ।

+ श्रम एवं नियोजन मंत्रालय : प्रादेशिक श्रम आयुक्त कार्यालय, जबलपुर

हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाते हैं, फाइल पर टिप्पण और आलेखन भी हिन्दी में करना प्रारम्भ कर दिया गया है ।

केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

दिसंबर 1966 में 21 कार्यालय आदेश हिन्दी में, अंग्रेजी प्रतिलिपि सहित, जारी किए गए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

- समाचार भारती का उद्घाटन

भारतीय भाषाओं की प्रमुख समाचार समिति 'समाचार भारती' का औपचारिक उद्घाटन स्वराष्ट्र मंत्री श्री चव्हाण ने 12 जनवरी को किया । समिति का मुख्य उद्देश्य देश की भाषाओं के समाचार पत्रों को क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय महत्व के सभी प्रमुख समाचार उनकी अपनी भाषा में उपलब्ध कराना है ।

-- भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिए नई परिषद का गठन

राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिए भारतीय साहित्य परिषद नामक एक संस्था स्थापित की गई है । अध्यक्ष श्री बांके बिहारी भटनागर ने आशा प्रकट की कि यह संस्था सभी भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए एक संयुक्त मंच का रूप धारण करेगी । परिषद की दरियागंज शाखा ने 14 जनवरी को प्रभाकर माचवे की अध्यक्षता में सर्व भाषा कवि सम्मेलन का आयोजन किया ।

- राजधानी के प्रसिद्ध पत्रकार का अभिनंदन

राजस्थान के राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षता में तारीख 9 जनवरी को श्री बांके बिहारी भटनागर का अभिनन्दन किया गया । डा० सम्पूर्णानन्द ने भाषा के नाम पर बढ़ रही विघटनात्मक प्रवृत्तियों की निंदा करते हुए पत्रकारों को उनके प्रतिरोध के लिए सजग रहने का आह्वान किया । श्री किशोरी दास वाजपेयी, डा० दिनकर, डा० नगेन्द्र, श्री अक्षय कुमार जैन, डा० विजयेन्द्र स्नातक और डा० बच्चन प्रमुख वक्ता थे ।

-- गणराज्य दिवस पर लाल किले में कवि सम्मेलन

गणराज्य दिवस के पुनीत पर्व पर प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में 23 जनवरी को लाल किले में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें देश के लगभग 40 कवियों ने अपनी कविताएं सुनाईं । सम्मेलन का उद्घाटन डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने और अध्यक्षता निगमायुक्त श्री राठी ने की । सम्मेलन द्वारा आयोजित हिन्दी नामपट्ट प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों के संबंध में इसी पत्रिका के विश्वविद्यालय स्तंभ के अंतर्गत संक्षिप्त जानकारी निकट भविष्य में दी जायगी ।

राजकीय स्तर पर हिन्दी का प्रचार-प्रसार :

राजकीय स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार का काम सक्रिय रूप से 1958 में शुरू हुआ जब वहां के शिक्षा निदेशालय में हिंदी शिक्षा अधिकारी के पद का निर्माण किया गया । 1964-65 में हिंदी शिक्षा अधिकारी के पद को स्थायी बना दिया गया है । इस समय इस पद पर श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी नियुक्त हैं जो लोक शिक्षा निदेशक, आंध्र प्रदेश, हैदराबाद के अधीन काम कर रहे हैं । हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास संबंधी योजनाओं के अंतर्गत राज्य के हिंदी विभाग की देखरेख में इस समय निम्नलिखित कार्य हो रहे हैं :-

1- स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की परीक्षाओं को राज्य सरकार की मान्यता प्रदान करना ।
2- संगोष्ठियां (सेमीनार) आयोजित करना ।
3- सलाहकार समिति की बैठकों का आयोजन करना ।
4- हिंदी के प्रचार-प्रसार में संलग्न स्वैच्छिक संस्थाओं को अनुदान स्वीकार करना ।
5- स्वैच्छिक संस्थाओं को राज्य सरकार की मान्यता प्रदान करना ।

1966-67 में विभिन्न संस्थाओं को अनुदान देने के लिए बजट में 241872 रु० की व्यवस्था की गई है । इस खर्च के अलावा राज्य सरकार को लगभग तीस लाख रुपया अब तक नियुक्त 'हिंदी पंडितों' की सेवाओं को जारी रखने पर खर्च करना पड़ेगा क्योंकि भारत सरकार 1966-67 से पहले नियुक्त हिंदी पंडितों के लिए सहायता नहीं देगी । इस समय राज्य सरकार पंद्रह हिंदी संस्थाओं को हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनुदान दे रही है ।

क्रमशः

कहानी, निबंध और भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (तमिलनाडु), तिरुच्चि, केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत योजना के अंतर्गत कहानी, निबंध और भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित कर रही है । विस्तृत जानकारी के लिए सभा के मंत्री से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

+ केरल : सारे देश में उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो

केरल सरकार ने सुझाव दिया है कि राष्ट्रीय एकता के हित में हिन्दी को सम्पूर्ण भारत के विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम बनाया जाए। अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं के महत्व को कम किए बिना ही ऐसा किया जाना चाहिए। यथासंभव अधिक से अधिक स्थानों में हिंदी के माध्यम से पढ़ाई शुरू कर देनी चाहिए।

+ उत्तर प्रदेश : साहित्यकार सम्मेलन सम्पन्न

कानपुर के डी० ए० वी० कालेज के सभा भवन में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मेलन बेल्जियम निवासी हिन्दी के विद्वान् फादर डा० कामिल बुल्के की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें विभिन्न भाषाओं के लगभग 85 प्रतिनिधि विद्वानों ने भाग लिया। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ने कहा : निहित स्वार्थ वर्ग ने हिन्दी का संबंध राजनीति से जोड़ दिया है। हिंदी को राजनीति से बिल्कुल अलग रखना चाहिए। डा० कामिल बुल्के ने कहा : हमें इस बात की घोषणा करनी चाहिए कि साहित्य के क्षेत्र में सभी भारतीय भाषाओं को समान अधिकार प्राप्त है। उनमें कोई भी भाषा किसी दूसरी भाषा की अपेक्षा अधिक भारतीय नहीं है और भारत के साहित्यकार बराबरी के स्तर पर एक-दूसरे से मिल सकते हैं।

- हिंदी भवन की स्थापना :

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रेमियों की मांग पर कानपुर विश्वविद्यालय के निकट एक हिन्दी भवन स्थापित करने का निश्चय किया गया है। इस भवन पर ढाई लाख रुपया व्यय होने की सम्भावना है। उत्तर प्रदेश में यह तीसरा हिन्दी भवन होगा। इससे पहले दो भवन वाराणसी और इलाहाबाद में निर्मित हो चुके हैं।

+ मध्य प्रदेश : हिन्दी अनुसंधान प्रयोगशालाएं

विश्वविद्यालय और कालेज के हिन्दी शिक्षकों के संगठन भारतीय हिन्दी परिषद का वार्षिक सम्मेलन दिनांक 27-29 दिसम्बर 1967 को उज्जैन में सम्पन्न हुआ। परिषद ने केन्द्रीय सरकार से सिफारिश की कि हिन्दी भाषा प्रयोगशालाएं कायम की जाएं जिससे अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहन मिल सके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

+ गुजरात : हिन्दी का अध्ययन अनिवार्य हो

राज्य सरकार ने शिक्षा आयोग की हिन्दी अध्ययन विषयक सिफारिश से असहमति प्रकट करते हुए सुझाव दिया है कि हिन्दी के अध्ययन को राष्ट्रभाषा की प्रतिष्ठा के आधार पर एक अनिवार्य आवश्यकता के रूप में मान्य किया जाना चाहिए। गुजरात में स्कूल स्तर पर हिन्दी के अध्ययन का कभी कोई विरोध नहीं किया गया।

+ राजस्थान : राजस्थान के सभी सरकारी विभागों में हिन्दी में काम

अन्तरप्रान्तीय कुमार साहित्य परिषद् जोधपुर द्वारा आयोजित एक समारोह में राज्य के भाषा विभागीय निदेशक श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट ने बताया कि राज्य के सभी विभागों में सरकारी काम-काज हिन्दी में होने लगा है। केन्द्रीय सरकार से हिन्दी में शत-प्रतिशत पत्रव्यवहार करने वाला यह एक मात्र हिन्दी भाषी राज्य है।

+ बिहार : राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में पत्रकारों का योगदान

बिहार राज्य हिन्दी पत्र संवाददाता संघ के छोटा नागपुर प्रमण्डल की प्रथम वार्षिक गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय डाकतार मंत्री श्री सत्यनारायण सिंह ने कहा : हिन्दी पत्रकार राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में बहुत योग दे सकते हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में हिन्दी शीघ्र ही अंग्रेजी का स्थान ले लेगी।

+ दिल्ली : हिन्दी सलाहकार मण्डल का पुनर्गठन

दिल्ली प्रशासन के कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की दृष्टि से प्रशासन के हिन्दी सलाहकार मण्डल को पुनर्गठित किया गया है। डा० युद्धवीर सिंह इस के अध्यक्ष हैं और डा० नगेन्द्र, श्री अक्षय कुमार जैन आदि सदस्य

- दिल्ली नगर निगम के हिन्दी व उर्दू फार्मों की छपाई

निगम ने सभी प्रकार के फार्म हिन्दी और उर्दू में छपवा दिए हैं।

+ हरियाणा : 'संत-सिपाही' महाकाव्य का प्रणयन

गुरु गोविन्द सिंह जी की त्रिशताब्दी के अवसर पर 'गुरु गोबिन्द सिंह प्रतिष्ठान' ने 'संत-सिपाही' महाकाव्य प्रकाशित किया है। हिसार गवर्नमेंट कालेज के ... इसके लेखक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग-संक्षिप्त परिचय

कर्नाटक में स्कूल तथा कालेज स्तर पर हिंदी का पठन-पाठन काफी समय से हो रहा है किन्तु स्नातकोत्तर परीक्षा के लिए हिंदी का अध्ययन-अध्यापन 1959 में शुरु हुआ जब कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़ में हिन्दी विभाग की स्थापना हुई। इस समय वहां हिंदी विभाग के अध्यक्ष के रूप में डा० आर० के० मुदलियार काम कर रहे हैं। उनके अतिरिक्त हिंदी विभाग में सर्वश्री एस० वी० भट्ट, एस० रामचंद्र और एस० एम० कप्पीकेरी प्राध्यापक हैं।

अब तक इस विश्वविद्यालय से 55 छात्र हिंदी में एम० ए० कर चुके हैं। इस समय एम० ए० (हिंदी) प्रथम वर्ष में 27 और द्वितीय वर्ष में 30 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। उपर्युक्त सभी विद्यार्थी अहिंदी भाषी हैं।

हिंदी विभाग विद्यार्थियों में शोध-प्रवृति जागृत करने की ओर भी पर्याप्त ध्यान दे रहा है। इस समय हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर 16 छात्र पी० एच० डी० के लिए शोध कार्य कर रहे हैं। इनमें से 13 छात्र डा० मुदलियार की देखरेख में और 3 छात्र डाक्टर वी० एल० कोटमीर के मार्गदर्शन में शोध-कार्य कर रहे हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी विभाग समय-समय पर सेमिनार आदि का आयोजन भी करता है। अहिंदी भाषी छात्रों को हिंदी के उच्च अध्ययन के लिए प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से छात्रवृत्तियां देने के कार्यक्रम के अंतर्गत दो छात्रवृत्तियाँ की व्यवस्था भी की गई है।

राजस्थान विश्वविद्यालय

कबीर दर्शन पर शोध प्रबन्ध

राजस्थान विश्वविद्यालय ने डा० सत्नाम सिंह 'अरुण' को उनके 'कबीर दर्शन' शोध प्रबन्ध पर डी०लिट० की उपाधि से विभूषित किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं0	मूल्य
मीतल प्रकाशन मंदिर, मथुरा				
दृष्टि और दिशा	डा0 चन्द्रभान रावत	निबंध	702	8-00
शकुन प्रकाशन, 3625 नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली				
शान्ति के पुजारी युद्ध के विक्रेता	बाँके बिहारी भटनागर	संस्मरण	136	6-00
वे लड़े हजार साल	शिव सागर मिश्र	भारत-पाक संघर्ष	143	6-00
अस्त्र शस्त्र	जय प्रकाश भारती	शस्त्रास्त्र परिचय	118	3-00
देश प्रेम की कहानियाँ	अक्षय कुमार जैन	कथा-साहित्य	52	1-50
नए परीलोक में	हरिकृष्ण देवसरे	कहानी	47	1-60
हजार हाथ	शक्ति त्रिवेणी	कृषि विज्ञान पर उपन्यास	141	3-00
दलहन की खेती	श्री व्यथित हृदय	कृषि	152	3-00
धरती की भूख	ब्रजलाल उनियाल	कृषि	112	3-00
पैसों का पेड़	कमलेश्वर	बाल नाटक	60	2-00
धरती की दौलत	वेद मित्र	भूगर्भ विज्ञान	76	2-00
सही सिंचाई अधिक उपज	राजेन्द्र कुमार वाजपेयी	कृषि	79	1-50
कल्याणमल एण्ड संस, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर				
नाट्य बेला	गंगाधर शुक्ल	नाटक	112	2-50
प्रेम चुनरिया	श्रीमती रजनी पनिकर	कहानी संग्रह	217	7-50
नई कविता	डा0 वासुदेव नन्दन प्रसाद, श्रीमती कमलेश कुमारी	निबंध	169	6-00
बुनियादी शिक्षा सिद्धांत	सूरज नारायण राव	शिक्षा	170	3-00
एक देवता की कथा	यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र	कहानियाँ	144	3-50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्यासी और सुन्दरी	यादवेन्द्र [चन्द्र] शर्मा	उपन्यास	151	3-50
अग्निपथ	,,	,,	111	2-50
आप बीती	मनोहर प्रभाकर	लेख	85	2-50
लहरों की गोद में	,,	नाटक	92	1-50
राग रंग	,,	नाटक	82	1-50
असमा तथा अन्य संगीत रूपक	,,	संगीत रूपक	123	2-50
त्याग का वैभव	परदेशी	उपन्यास	179	3-50
सन्देह का सिन्दूर	परदेशी	कहानी संग्रह	165	3-00
कल्पना	परदेशी	नाटक	100	2-50
हंसना मना है	श्री विजय निर्बाध	कविताएं	42	0-75
मौत के मुंह में	डा0 सर राम सिंह शर्मा	निबन्ध	134	3-50
नए नगर की कहानी	श्री रावी	उपन्यास	179	3-00

विश्व प्रकाशन मंदिर, दिल्ली-6

धरती की धूप	मामा वरेरकर	उपन्यास	204	5-00
परछाईं	वा0न0 सातोस्कर	उपन्यास	199	5-00

हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद

श्री पालाल वेंकट राजमन्नार के सात एकांकी	अनु0 भीमसेन निर्मल	एकांकी संग्रह	97	2-00

प्रगति प्रकाशन, आगरा-3

गर्जना	डा0 पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'	कविता-संकलन	198	4-50
इन्दिरा प्रियदर्शिनी एक व्यक्तित्व	सं0 रघुवीर सिन्हा	जीवनी	159	4-00
लाल बहादुर शास्त्री जीवन-दर्शन	प्रो0 जितेन्द्र प्रसाद सिंह	,,	128	3-00
सदा बहार [illegible]	[illegible] परदेशी	कविता संकलन	112	3-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्सेफ अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use) लेखक : ए० एफ० यौफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry) ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : बी० कुद्रयावत्सेव अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ:183 मूल्य:4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०:268 मूल्य:8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले०वी० फेडिंस्की अनु०पवनकुमार जैन पृष्ठ:122 मूल्य:2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses) ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ:142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित । संपादक: परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

28-3-67

हिंदी समाचार जगत

गुरुकुल कांगड़ी

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 मार्च 1967 अंक 7

0 भाषा-संगम (भाषा विभाग, पंजाब)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (केंद्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

हिन्दी शिक्षकों और प्रचारकों की आवश्यकता

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ऐसे योग्य हिन्दी शिक्षकों/प्रचारकों की एक सूची तैयार कर रहा है जो विदेशों में विदेशी भाषाओं के माध्यम से हिन्दी पढ़ाने का कार्य कर सकें। उपयुक्त एवं इच्छुक शिक्षक/प्रचारक कृपया अपनी योग्यता और अनुभवों का विवरण निदेशक, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, 15/16, नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-6 को भेजें।

(केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, 15/16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा विभाग (पंजाब) पटियाला ?

प्रादेशिक भाषा के विकास के लिए किए गए प्रयास

पंजाबी भाषा के विकास के लिए राजकीय स्तर पर प्रथम प्रयास संभवतः फरवरी, 1948 में भूतपूर्व पटियाला राज्य द्वारा किया गया, जब पंजाबी भाषा और उसके साहित्य के संवर्द्धन के लिए वहाँ एक पंजाबी अनुभाग की स्थापना की गई थी। सितंबर, 1948 को पेप्सू राज्य के निर्माण के बाद नई सरकार ने इस अनुभाग को अप्रैल, 1949 से पूर्ण विभाग के रूप में बदल दिया। यह विभाग मुख्य मंत्री की देख-रेख में प्रशासन के समस्त स्तरों पर मातृभाषा को लागू करने के उद्देश्य को लेकर काम करने लगा। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पेप्सू सरकार ने निर्णय किया कि रिकार्ड क्लर्क से लेकर मुख्य सचिव तथा मुख्य मंत्री तक सभी कर्मचारी पंजाबी भाषा में ही काम करेंगे। इस प्रयोग में बड़ी सफलता मिली किंतु 1956 में जब राज्यों के पुनर्गठन के फलस्वरूप पेप्सू राज्य पंजाब से मिल गया तो पंजाब के नियम इस विभाग पर लागू करने पड़े और इसका प्रशासन कार्य पुनः अंग्रेजी में होने लगा।

पेप्सू सरकार ने अपने अल्पकालीन शासन में पंजाबी के विकास पर 16,56,610 रुपये खर्च किए और विभाग ने उच्च कोटि के 34 साहित्यिक ग्रंथ प्रकाशित किए; 20 साहित्यकारों को सम्मानित किया; कविता, नाटक, कथा-साहित्य, अनुवाद और साहित्य समालोचना की सर्वोत्कृष्ट पुस्तकों पर हर वर्ष पुरस्कार दिए; साहित्य समालोचना की अग्रणी मासिक पत्रिका "पंजाबी दुनिया" का प्रकाशन किया; शासन कार्य से संबंधित लगभग 20844 पृष्ठों की सामग्री का पंजाबी में अनुवाद किया; शिक्षा और कानून विषयों के लगभग 20,000 शब्दों का निर्माण किया तथा उन्हें अपनाया; पंजाबी-पंजाबी कोश के 20000 और अन्य कोशों के 60000 शब्दों को अंतिम रूप दिया, 2800 टाइपिस्ट और 135 स्टेनो-टाइपिस्ट तैयार किए, 252083 सरकारी कर्मचारियों को पंजाबी की शिक्षा दी और पंजाबी की चार परीक्षाओं का संचालन किया, 93 देहाती पुस्तकालय स्थापित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किए और अनेक कवि दरबार तथा साहित्यिक समारोहों का आयोजन किया। विभाग के इन कार्यों के फलस्वरूप पंजाबी शासन के काम-काज की भाषा बन सकी और लोगों में सांस्कृतिक तथा भावनात्मक एकता की भावना दृढ़ हुई।

पेप्सू और पंजाब के समामेलन के बाद भाषा विभाग की उपलब्धियां

नया विभाग हिंदी और पंजाबी को प्रशासन के काम-काज के योग्य बनाने के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ता गया। पिछले वर्षों में विभाग ने मैनुअल, संहिता, अधिनियम, फार्म आदि प्रशासन-साहित्य के लगभग 60,000 पृष्ठों का पंजाबी तथा हिंदी में अनुवाद किया है। इस अनूदित सामग्री में [illegible]र सुधार समिति की रिपोर्ट, दूसरी पंचवर्षीय योजना, अम्बर चरखा [illegible] समिति की रिपोर्ट, राजभाषा आयोग की रिपोर्ट आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त विभाग ने लगभग 57847 तकनीकी शब्दों का निर्माण किया। 1959 में उसने अंग्रेजी-हिंदी-पंजाबी प्रशासन शब्दावली भी प्रकाशित की।

विभिन्न कोशों के संकलन एवं संपादन का काम भी संतोषजनक ढंग से चलता रहा और इस अवधि में पंजाबी-पंजाबी कोश के 45000, पंजाबी-हिंदी कोश के 62,000, संस्कृत-हिंदी-पंजाबी कोश के 6000 और उर्दू-हिंदी-पंजाबी कोश के 50000 शब्दों को अंतिम रूप दिया गया। कांगड़ी, हरियानवी, पोठोहारी, मालवई और पुवाढ़ी बोलियों के शब्द-कोश तैयार करने का काम भी विभाग ने शुरू किया और इनमें से पुवाढ़ी, पोठोहारी और कांगड़ी बोलियों की शब्दावलियां प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी और पंजाबी की कक्षाएं

सरकारी कर्मचारियों को पंजाबी और हिंदी की पर्याप्त जानकारी देने के लिए 1956 से फरवरी 1960 तक 80 केन्द्रों में (जिला और तहसील के मुख्यालयों तथा चंडीगढ़ और दिल्ली में) कक्षाएं चलाई गईं और इन के लिए 150 अध्यापकों की सेवाएं प्राप्त की गईं। विभाग ने हिंदी और पंजाबी में 8 परीक्षाएं लीं जिनमें क्रमश: 15897 और 23269 सरकारी कर्मचारी उत्तीर्ण हुए।

—क्रमश:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएं

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद — संक्षिप्त परिचय

केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों में हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने, सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग का मार्ग प्रशस्त करने तथा इस दिशा में किए जाने वाले कार्यों में सहयोग देने के लिए 3 मई, 1960 को दिल्ली में परिषद का गठन किया गया था ।

सदस्यता :

केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में काम करने वाला कोई भी कर्मचारी एक रुपया वार्षिक शुल्क देकर परिषद का सदस्य बन सकता है । स्टेट बैंक, जीवन बीमा निगम, खादी ग्रामोद्योग आयोग तथा केन्द्रीय सरकार के अन्तर्गत अन्य स्वायत्त संस्थाओं और निगमों के कर्मचारी भी परिषद के सदस्य बन सकते हैं ।

संगठन :

जिस नगर अथवा कार्यालय में परिषद के 40 सदस्य बन जाते हैं, वहां परिषद् की शाखा का गठन किया जा सकता है । इस समय दिल्ली में प्रायः सभी मंत्रालयों/विभागों आदि में लगभग 50 शाखाएं स्थापित हो चुकी हैं । दिल्ली के अतिरिक्त भारत के लगभग 100 अन्य नगरों में भी परिषद का कार्य चल रहा है, जिनमें से लगभग 65 नगरों में एक सौ से अधिक शाखाएं स्थापित हो चुकी हैं ।

कार्यक्रम :

परिषद् के सभी कार्य रचनात्मक हैं । हिन्दी राजकाज की भाषा बने, उसके प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का व्यावहारिक हल खोजा जा सके और हिन्दी के प्रति सरकारी कर्मचारियों की रुचि स्वाभाविक रूप से बढ़े, इसी दृष्टि से परिषद विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करती है ।

प्रतियोगिताएं

सरकारी कर्मचारियों में हिन्दी का व्यावहारिक ज्ञान और हिन्दी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य करने की क्षमता बढ़ाने की दृष्टि से विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं।

(1) हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता : सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्रों में टाइपिंग कला को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से परिषद द्वारा हर वर्ष अक्तूबर के महीने में इस प्रतियोगिता का अखिल भारतीय स्तर पर आयोजन किया जाता है। पहले यह प्रतियोगिता केवल दिल्ली में ही आयोजित की जाती थी। अब देश के समस्त भागों में इस प्रतियोगिता के केन्द्र होते हैं। सन् 1965 में यह प्रतियोगिता 32 केन्द्रों पर हुई और उसमें पांच सौ प्रतियोगियों ने भाग लिया। इसमें काफी बड़ी संख्या अहिन्दी भाषी व्यक्तियों की थी। इस प्रतियोगिता में परिषद् आठ अखिल भारतीय पुरस्कारों के अतिरिक्त प्रत्येक राज्य तथा केन्द्र में प्रथम आने वाले व्यक्ति को भी पुरस्कार देती है। कुछ राज्य सरकारें भी अपनी ओर से इस प्रतियोगिता के लिए पुरस्कार देती हैं। प्रतियोगिता में 50 शब्द प्रति मिनट से अधिक की गति दिखाने वालों को प्रमाण पत्र दिए जाते हैं। अहिन्दी भाषी व्यक्तियों के लिए यह सीमा 35 शब्द प्रति मिनट रखी गई है। हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता में अब तक की अधिकतम गति 91,00 शब्द प्रति मिनट रही है।

(2) हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिता : हिन्दी आशुलिपि को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से अखिल भारतीय स्तर पर इस प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। पहले दो वर्षों तक यह प्रतियोगिता दिल्ली में ही की जाती थी। अब दिल्ली के अतिरिक्त जयपुर, पटना, भोपाल, लखनऊ, मद्रास, बम्बई और कलकत्ता में भी इसका आयोजन किया जाता है। 100, 120, 150, 180, 200 और 220 शब्द प्रति मिनट के विभिन्न वर्गों में प्रतियोगिता की जाती है। इसमें प्रथम पुरस्कार के रूप में 201 रुपये नकद, पदक और चल वैजयन्ती दी जाती है। अब तक सबसे अधिक गति 200 शब्द प्रति मिनट रही है। द्वितीय पुरस्कार 101 रुपये का है। इसके अतिरिक्त विभिन्न गति वर्गों में भी अनेक पुरस्कार और प्रमाण पत्र आदि देने की व्यवस्था है।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिन्दी

* भारत सरकार में

शिक्षा मंत्रालय

- बाल साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता

शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित बारहवीं बाल साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता में पुरस्कार के लिए 12 पुस्तकों और 2 पाण्डुलिपियों को चुना गया है। पुरस्कार में एक हजार रुपया नकद मिलेगा। हिन्दी की पुस्तकों में 'ऐसे थे चाचा नेहरू' लेखक - श्रीमती स्नेह अग्रवाल और 'बच्चों के लिए ज्ञानि' लेखक - रामजी सिंह को चुना गया है।

- साहित्य अकादमी पुरस्कारों की घोषणा

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन की अध्यक्षता में तारीख 11 फरवरी को साहित्य अकादमी की कार्य समिति की बैठक में विभिन्न भारतीय भाषाओं की ग्यारह पुस्तकें 1966 के साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुनी गईं। हिन्दी में श्री जैनेन्द्र कुमार का लघु उपन्यास "मुक्ति बोध" पुरस्कृत हुआ।

- विज्ञान की पुस्तकों का प्रकाशन

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष डा० विश्वनाथ प्रसाद ने बताया कि अगले दस वर्षों में आयोग विज्ञान तथा विज्ञानेतर विषयों की विश्वविद्यालय स्तर की पुस्तकें प्रकाशित कर लेगा। आयोग द्वारा आधारभूत वैज्ञानिक शब्दावली प्रकाशित कर दी गई है जिससे स्नातक स्तर तक के छात्र सहायता ले सकते हैं।

- हिन्दी लेखक कार्य-शिविर का आयोजन

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के नए हिन्दी लेखकों को लेखन-कला में मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से राजस्थान भाषा विभाग के सहयोग से जयपुर में कार्य शिविर का आयोजन कर रहा है। कार्य शिविर तारीख 27 फरवरी से 8 मार्च 1967 तक चलेगा। भारत सरकार के हिंदी सलाहकार डा० रामधारी सिंह 'दिनकर' शिविर का उद्घाटन करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान भाषा निदेशालय के निदेशक श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट शिविर के निदेशक तथा सर्वश्री डा० रामकुमार वर्मा, विष्णु प्रभाकर, सोहन लाल द्विवेदी, गोपाल कृष्ण कौल और ए० रमेश चौधरी आरिगपूडि आचार्य का पद सुशोभित करेंगे। 25 प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

- हिन्दी शिक्षक अध्ययन - शिविर का आयोजन

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की ओर से हैदराबाद में 1 फरवरी से 10 फरवरी 1967 तक अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ के तत्वावधान में हिन्दी शिक्षक अध्ययन-शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन आंध्र प्रदेश के मुख्य न्यायाधीश श्री जगमोहन रेड्डी ने किया। विभिन्न राज्यों के लगभग 40 शिक्षकों ने शिविर में भाग लिया। शिक्षा मंत्रालय के उप शिक्षा सलाहकार डा० एस० एम० एस० चारी तथा हिन्दी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन ने भी शिक्षकों को सारगर्भित भाषण दिए।

वन अनुसन्धान संस्थान एवं महाविद्यालय, देहरादून

अधिकारियों, शाखाओं, अनुभागों आदि के नामपट हिन्दी में भी लिखे गए हैं। संग्रहालयों में वस्तुओं के नाम हिंदी में भी लिखने की दिशा में प्रगति की जा रही है। प्रायः सभी शाखाओं और अनुभागों में हाज़िरी रजिस्टरों में कर्मचारियों के नाम हिन्दी में लिखे जाते हैं और अधिकांश कर्मचारी हिन्दी में हस्ताक्षर करने लगे हैं।

केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक

28 कार्यालय आदेश हिन्दी में अंग्रेजी प्रतिलिपि के साथ जारी किए गए।

चुनाव आयोग

चुनाव आयोग ने इस बार पहली बार लोक सभा के लिए चुने जाने के प्रमाण पत्रों को अंग्रेजी के साथ हिन्दी में भी जारी करने का निश्चय किया है। विधान सभा परिषद के लिए प्रमाण पत्र अंग्रेजी, हिन्दी या प्रादेशिक भाषा में जारी किए जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

- भारतीय मानक संस्था में हिन्दी

भारतीय मानक संस्था जिसका अंग्रेजी नाम इंडियन स्टैंडर्ड्स इंस्टीट्यूशन है, मूल रूप से एक औद्योगिकी प्रधान तकनीकी संगठन है और इसका कार्य देश में उत्पादित वस्तुओं, औद्योगिक रीतियों, प्रयुक्त परीक्षण पद्धतियों इत्यादि के संबंध में भारतीय मानक निर्धारित करना है । भारतीय मानक एक प्रकार के प्रलेख होते हैं जिनमें किसी वस्तु विशेष के किसी सुनिश्चित किस्म तैयार करने के संबंध में आवश्यक विशिष्टियां तथा उनके परीक्षण और बानगी लेने के लिए पद्धतियां दी जाती हैं ।

भारतीय मानक संस्था में हिन्दी की प्रगति सुचारु रूप से हो रही है । कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी का प्रयोग सीधा तो नहीं पर पूरक रूप में तथा अंग्रेजी के साथ-साथ होता है । हिन्दी अनुवाद और पत्र-व्यवहार की प्रगति भी संतोषजनक है । इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

भारतीय मानकों के हिन्दी अनुवाद :

जिन मानकों का संबंध छोटे उद्योगों या ऐसे उद्योगों से है जिनमें लगे व्यक्ति अंग्रेजी नहीं समझते या कम समझते हैं, उनके लिए हिन्दी अनुवाद तैयार कराए जाते हैं । इसी लिए संस्था में एक हिन्दी अनुवाद समिति और उसी के अधीन एक अनुवाद परीक्षण पैनल स्थापित किया गया है । अब तक संस्था द्वारा 12 भारतीय मानक हिन्दी में प्रकाशित किए जा चुके हैं जिनमें से चार अनाज भरने के विभिन्न प्रकार के भंडार बनाने की रीति संहिताएं हैं और चार बीड़ियों, जरदा-पत्ती, स्याही और इस्पाती तार-नालियों की विशिष्टियों के मानक हैं ।

इसके अलावा संस्था ने इंजीनियरी, औद्योगिकी, विज्ञान तथा उद्योग में प्रचलित मापों तथा मानों के मीटरी परिवर्तन के लिए हिन्दी-अंग्रेजी में एक पुस्तक तैयार की है । हाथ से की जाने वाली मैटल-आर्क वेल्डिंग की भी एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्देश पुस्तक हिन्दी में तैयार की जा चुकी है। इमारती चूने की विशिष्टि और इमारतें बनाने में सम्पन्न विभिन्न कार्यों की मापन पद्धतियों के मानकों के हिन्दी संस्करण तैयार हो रहे हैं।

प्रचार-कार्य : संस्था के कार्य से संबंधित प्रेस विज्ञप्तियां और विज्ञापन हिन्दी में भी दिए जाते हैं। सिनेमा-घरों में हिन्दी में भी स्लाइड दिखाए जाते हैं। संस्था के कार्य और उसके महत्व को प्रदर्शित करने के लिए हिन्दी में वृत्त चित्र भी दिखाए जाते हैं।

हिन्दी शिक्षण :गृह मंत्रालय की हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन संस्था में हिन्दी शिक्षण का कार्य नियमित रूप से चल रहा है। संस्था में 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारी हिन्दी जानते हैं और हिन्दी में कार्य कर सकते हैं।

मानक ज्योति : संस्था के क्लब के अंतर्गत एक पुस्तकालय है जिसमें 80 प्रतिशत से अधिक पुस्तकें हिन्दी की हैं। इसके अतिरिक्त क्लब की ओर से एक वार्षिक पत्रिका 'मानक ज्योति' हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों में प्रकाशित होती है। लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिए अच्छे लेखों पर पुरस्कार भी दिए जाते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि संस्था में हिन्दी के प्रयोग की आधारशिला रखी जा चुकी है और उसका प्रसार दिन प्रति दिन बढ़ता ही जाएगा, ऐसी आशा है।

अमीर खुसरो को श्रद्धांजलि :

दिल्ली प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन जंगपुरा मंडल के तत्वावधान में अमीर खुसरो के उर्स पर सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता डा0 बच्चन ने की। प्रो0 चन्द्रहास, डा0 प्रभाकर माचवे, श्रीमती कमला रत्नम प्रो0 मुजीब आदि ने अमीर खुसरो को श्रद्धांजलि अर्पित की।

टाइपिंग प्रतियोगिता का परिणाम

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी टाइपिंग प्रतियोगिता में राजधानी के श्री चन्द्रदेव पाण्डेय ने 87.1 शब्द प्रति मिनट की गति से प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

आन्ध्र प्रदेश में हिंदी का प्रचार-प्रसार - एक विहंगम दृष्टि

(गतांक से आगे)

हिंदी प्रचार को आगे बढ़ाने के लिए और हिंदी संस्थाओं को प्रोत्साहन देने के लिए राज्य सरकार ने विभिन्न हिंदी संस्थाओं की परीक्षाओं को मान्यता प्रदान की है। माध्यमिक स्कूलों में हिंदी पंडित की नियुक्ति के लिए निम्नलिखित योग्यताओं को मान्यता प्रदान की गई है :-

1- किसी भारतीय विश्वविद्यालय की बी०ए० डिग्री जिस में हिंदी विशेष (वैकल्पिक) विषय हो,

2- उस्मानिया विश्वविद्यालय की बी० ओ० एल० डिग्री (हिंदी),

3- आंध्र विश्वविद्यालय का हिन्दुस्तानी भाषा प्रवीण प्रमाण-पत्र,

4- मद्रास विश्वविद्यालय की विद्वान उपाधि अथवा विद्वान 2(क) जिसमें दो भाषाओं में से एक भाषा हिंदी हो, अथवा विद्वान 2(ख) जिस में हिंदी मुख्य भाषा हो अथवा 'विद्वान' 2(घ) केवल हिंदी में,

5- दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की "प्रवीण",

6- दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास का "विशारद" डिप्लोमा,

7- हिंदी प्रचार सभा, हैदराबाद का हिंदी भूषण अथवा विद्वान डिप्लोमा,

8- हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद की विशारद उपाधि,

9- हिंदी विद्यापीठ, देवघर का साहित्य भूषण डिप्लोमा,

10- हिंदी विद्यापीठ, देवघर का साहित्यालंकार डिप्लोमा,

11- श्री काशी विद्यापीठ बनारस की "शास्त्री" अथवा "हिंदी कोविद उपाधि",

12- अखिल भारतीय हिंदी परिषद आगरा का 'हिंदी पारंगत डिप्लोमा';

13- केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा की "हिंदी शिक्षण प्रवीण" अथवा हिंदी शिक्षण पारंगत अथवा हिंदी शिक्षण निष्णात;

14- राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की "राष्ट्रभाषा रत्न" परीक्षा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापकों को हिंदी शिक्षण की आधुनिक पद्धतियों से अवगत कराने के लिए विभिन्न ज़िलों में हिंदी सेमिनार आयोजित किए जाते हैं।

हिंदी में बातचीत करने की आदत को प्रोत्साहन देने के लिए माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए ज़िला स्तर पर हिंदी में वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं और सब से अच्छे विद्यार्थियों को योग्यता प्रमाण-पत्र के साथ-साथ नकद पुरस्कार वितरित किए जाते हैं।

हिंदी और तेलुगु भाषी लोगों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए तेलुगु से हिंदी और हिंदी से तेलुगु में अनेक सुंदर पुस्तकों के अनुवाद पारिश्रमिक देकर कराए जाते हैं।

अध्ययन-अध्यापन के स्तर को उन्नत करने के साथ-साथ राज्य सरकार भाषा तथा साहित्य के सृजनात्मक पक्ष को प्रोत्साहन दे रही है। राज्य के विभिन्न विद्वानों द्वारा हिंदी और तेलुगु के तुलनात्मक अध्ययन विषयक शोध निबंध तैयार कराए गए।

साहित्यिक पक्ष के साथ-साथ, माध्यमिक स्कूलों में हिंदी के अध्ययन की दृष्टि से हिंदी के भाषा-शास्त्रीय पक्ष की ओर भी राज्य सरकार ध्यान दे रही है। 1958-59 में एक समिति नियुक्त की गई जिसे विभिन्न माध्यमिक कक्षाओं की पाठ्य पुस्तकों के लिए शब्दावली के चयन आदि का काम सौंपा गया। समिति ने पाठ्य पुस्तकों की रचना के लिए मूलभूत शब्दावली तैयार की है।

1965-66 की अवधि में पाठ्य-पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण की योजना के अंतर्गत पाँचवीं, छठी और सातवीं कक्षा में दूसरी भाषा के रूप में हिंदी के अध्ययन के लिए तीन पाठमालाएं भी तैयार की गईं। सरकार ने सहायता प्राप्त स्वैच्छिक संस्थाओं के कार्यों के पर्यवेक्षण के लिए एक सलाहकार समिति बनाई है।

सरकारी कर्मचारियों में हिंदी-शिक्षण को प्रोत्साहन देने के लिए सरकार ने आदेश जारी किए हैं जिनके अंतर्गत सभी कर्मचारियों के लिए दूसरी भाषा के रूप में हिंदी की परीक्षा पास करना अनिवार्य कर दिया गया है। इसके लिए स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएँ कार्यालय के समय के बाद सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी कक्षाएं चला रही हैं। (समाप्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास : हिंदी विद्यार्थी मेला सम्पन्न

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्वीकृत दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की आयोजना के अनुसार गत 5 फरवरी को विरुदनगर में हिंदी विद्यार्थी मेला सम्पन्न हुआ । डा0 राजगोपाल ने मेले का उद्घाटन किया और श्री रा0 गुरुसामी, व्यवस्थापक गांधी निकेतन, कल्लुपट्टी ने अध्यक्षासन ग्रहण किया ।

गुजरात : राजकोट हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना

सौराष्ट्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए गत जनवरी मास में राजकोट हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की गई है । केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की हिन्दी प्रचार-प्रसार विषयक योजनाओं को सौराष्ट्र क्षेत्र में क्रियान्वित करने में सहायता देना, जनता में हिंदी के प्रति प्रेम जागृत करना, हिंदी के पुरातन ग्रंथों की खोज, और संपादन तथा प्रकाशन करना सम्मेलन का प्रमुख कार्य होगा ।

महाराष्ट्र : हिंदी को प्राथमिकता

महामहोपाध्याय श्री डी0वी0 पोद्दार ने नागपुर विश्वविद्यालय का 47 वां दीक्षान्त भाषण देते हुए कहा कि हिंदी सबको एक सूत्र में बांधने वाली शक्ति है और भारतीयों की भावनात्मक एकता का माध्यम है । मराठी, हिंदी और अंग्रेजी भाषाएं इसी क्रम से पढ़ाई जानी चाहिए ।

मध्य प्रदेश : विधि क्षेत्र में हिंदी का प्रचलन

विधि-क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग प्रारंभ करने और बढ़ाने के विषय पर विचार करने के लिए राजभाषा (विधायी) आयोग के सदस्य श्री मुदेश्वर की अध्यक्षता में हिंदी भाषी राज्यों के विधि सचिवों और राजभाषा (विधायी) आयोग के प्रतिनिधियों की बैठक भोपाल में हुई । हिंदी में कानून बनाने, अधिनियमों का हिंदी में अनुवाद करने और समान पारिभाषिक विधि शब्दावली तैयार करने के विषय पर चर्चा हुई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरांत हिंदी व्याख्यान माला का आयोजन

विदर्भ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति नागपुर के तत्वावधान में श्री भिक्षु आनंद कौशल्यायन जी का स्वागत सम्मान तथा भाषण हुआ । विषय था : सिंहल भाषा और उसका साहित्य ।

उत्तर प्रदेश : मुंशी प्रेमचंद स्मारक का उद्घाटन

राजस्थान के राज्यपाल डा० सम्पूर्णानन्द ने लमही में मुंशी प्रेमचन्द के स्मारक का उद्घाटन किया । स्मारक का निर्माण काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने कराया है । समारोह की अध्यक्षता इस्पात व लौह मंत्री श्री त्रिभुवन नारायण सिंह ने की ।

दक्षिण में हिंदी भवन स्थापित करने की योजना

देश में हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल, आगरा ने अनेक स्थानों पर हिंदी भवन स्थापित करने की योजना बनाई है । ये भवन शुरू में दक्षिण भारत के बड़े नगरों में स्थापित किए जायेंगे । इनके साथ पुस्तकालय, वाचनालय तथा रात्रि पाठशालाएं भी होंगी ।

खादी-ग्रामोद्योग कमीशन, लखनऊ में हिंदी की प्रगति

कार्यालय के स्थापना, हिसाब, लेखा, ग्रामोद्योग, खादी, रंगाई-छपाई आदि सभी 17 विभागों में लगभग सारा काम हिंदी में ही होने लगा है । हिंदी की इस प्रगति और प्रोत्साहन का बहुत कुछ श्रेय संचालक श्री रानाडे और सह संचालक श्री अधिकारी को है ।

मैसूर : हिंदी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम का आयोजन

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बंगलोर के तत्वावधान में छः सप्ताह का द्वितीय हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम 11 फरवरी को समाप्त हुआ । बंगलोर की सभी माध्यमिक शालाओं के हिंदी शिक्षकों ने भाग लिया । केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के उप शिक्षा सलाहकार डा० चारी ने समापन समारोह की अध्यक्षता की और केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो० चंद्रहासन ने उद्बोधक भाषण दिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में :

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर :

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर की स्थापना 15 दिसंबर, 1955 को हुई थी । यहां प्रारंभ से ही हिन्दी अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था थी । शुरू में यह विभाग विट्ठल भाई पटेल महाविद्यालय में स्थित था और उसके अध्यक्ष डा0 मोहनानन्द सारस्वत थे । अन्य प्राध्यापकों में डा0 जगदीश चन्द्र जोशी, डा0 योगेन्द्र नाथ उपाध्याय और डा0 अनूप चन्द चतुर्वेदी थे । 1958 में जब यह पूर्ण विकसित विभाग के रूप में काम करने लगा तब विभागाध्यक्ष तथा प्रोफेसर के पद पर प्रो0 मोहन वल्लभ पंत और रीडर के पद पर डा0 रामेश्वर खण्डेलवाल तथा प्राध्यापकों के रूप में डा0 मोहनानंद सारस्वत तथा श्री सुरेश चन्द्र त्रिवेदी की नियुक्तियां हुईं । इस समय विभाग के प्रोफेसर के पद पर डा0 खण्डेलवाल तथा प्राध्यापकों के पद पर सुरेश चन्द्र त्रिवेदी और डा0 महावीर प्रसाद [illegible] काम कर रहे हैं ।

अब तक विभाग से 66 छात्र हिंदी में एम0ए0 कर चुके हैं । इस वर्ष 51 छात्र हिंदी एम0ए0 की तैयारी कर रहे हैं । ये सभी छात्र अहिन्दी भाषी हैं । 12 शोध छात्र हिन्दी में पीएच0 डी0 कर चुके हैं । 15 शोध छात्र इस समय विभिन्न विषयों पर शोध कार्य कर रहे हैं । स्वीकृत शोध-प्रबंधों और पंजीकृत विषयों की सूची नीचे दी जा रही है ।:-

स्वीकृत शोध प्रबंध

1- हिंदी की प्रयोगशील कविता और उसके प्रेरणा-स्रोत - डा0 श्रीराम नागर ।

2- हिंदी गुजराती राष्ट्रीय कविता - एक तुलनात्मक अध्ययन - डा0 ईश्वर लाल देसाई ।

3- स्वामी नारायण संप्रदाय का हिंदी साहित्य - डा0 देवी सहाय गुप्त ।

4- हिंदी साहित्य को कूर्मांचल की देन - डा0 भगत सिंह ।

5- गुजरात के हिंदी कवि दयाराम - डा0 महावीर सिंह चौहान ।

6- सेठ गोविन्द दास - कला एवं कृतित्व - डा0 केसरी नंदन मिश्र ।

7- हिंदी की गद्य शैलिकाएं - डा0 तारा संत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8- सुमित्रानंदन पंत के काव्य में सौंदर्य और दर्शन - डा० पूरन मक्या ।

9- प्रगतिवाद और हिंदी उपन्यास - डा० प्रकाश शर्मा ।

10- हिंदी कहानी साहित्य-विविध संस्थान : डा० रमेश पंड्या ।

11- साधारणीकरण : एक शास्त्रीय अध्ययन : डा० राम लखन शुक्ल ।

12- गुजरात एवं राजस्थान के मध्यकालीन संत कवि : डा० मदन कुमार जानी
(डा० नागर का शोध प्रबंध विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हो चुका है)

पंजीकृत विषय :

1- व्यभिचारी भावों का शास्त्रीय अध्ययन - श्री रघुवीरशरण व्यथित ।

2- हिंदी की ऐतिहासिक कहानियाँ - एक अध्ययन - श्री रविकांत परमार ।

3- हिंदी गुजराती खंड काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन 1885-1947
श्री दिवाकर भट्ट ।।

4- हिंदी और गुजराती की नई कविता - श्री नवीन मेहता ।

5- डा० हरिवंश राय बच्चन - व्यक्तित्व और कृतित्व - श्री रामचंद्र भटनागर ।

6- प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास में आंचलिकता - श्री जगदीश भट्ट ।

7- बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध के हिंदी नाटक - कु० वासंती पटेल ।

8- आधुनिक हिंदी-गुजराती साहित्य समीक्षा - एक तुलनात्मक अध्ययन
श्री रमाभाई पटेल ।

9- हिंदी बाल साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन - मस्तराम कपूर ।

10- ढोला मारू रा दूहा में काव्य सौष्ठव, संस्कृति एवं इतिहास -
श्रीभगवती लाल शर्मा ।

11- वर्तमान हिंदी-गुजराती कविता में सौंदर्य बोध - श्रीमती अरविंद बहन मेहता ।

12- वर्तमान हिंदी गुजराती कविता में प्रकृति - श्री मधुसूदन मेहता ।

13- औचित्य सिद्धांत और हिंदी का रीति काव्य - सुरेश चंद्र त्रिवेदी ।

14- हिंदी गुजराती की लोकोक्तियों और मुहावरों का तुलनात्मक अध्ययन-
श्री रमेश शाह ।

15- हिंदी सर्वनामों का विकास - श्री एस० पी० रावल ।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं०	मूल्य
हिन्दुस्थान समाचार, 6 स, भगतसिंह मार्केट, नई दिल्ली-1				
हिन्दुस्थान वार्षिकी (1966)	सम्पादक विद्यालंकार, गुप्त, शर्मा	सन्दर्भकोश	670	- -
विद्या भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर :				
अभिनव झांकी	डा० गोविन्द चातक	नाटक	116	2-50
यंगमेन एण्ड कम्पनी, नई सड़क, दिल्ली :				
राही और मंज़िल	कुलानन्द भारतीय	उपन्यास	168	4-00
पारिजात प्रकाशन, डाक बंगला रोड, पटना :				
खड्डल हवास	नारायण	उपन्यास	91	3-00
सर्वोदय की ओर	कलभद्र कुमार हूजा	निबन्ध	52	1-50
देहगाथा	राजकमल चौधरी	निबन्ध	94	3-00
कैम्ब्रिज पब्लिशिंग हाउस, कस्तूरी निवास, रैगड़ पुरा, नई दिल्ली-5 :				
विज्ञान की क्रमिक शिक्षा (1 से 4)	डॉ मेन्डोंजा कुमारी वेद गुप्त	विज्ञान	63 72 80 88	2-00 2-00 2-25 2-50
प्रारम्भिक स्कूल गणित भाग 1-2	,,	गणित	40 56	1-50 2-00
ज्ञानपीठ प्राइवेट लि०, पटना :	(बाल साहित्य)			
आओ गाएँ	श्री महेश नारायण भारती पद	कविता	30	0-85
दो साथी	श्याम वदा पाठक	विविध	66	1-60
रंग बिरंगे पंख	श्रीमती शान्ति उपाध्याय	कविता	36	1-00
चन्दा मेरा मामा	,,	,,	36	1-00
हुलहुल	महन्त धराज पुरी	,,	28	0-85

-0-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल ... विद्यालय हरिद्वार

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्सेफ
   अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use)
   लेखक : ए० एफ० योफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या : 125 मूल्य : 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry)
   ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु० हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : बी० कुद्रयावत्सेव
   अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले० डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ : 183 मूल्य : 4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर
   अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं० : 268 मूल्य : 8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा
    अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले० वी० फेडिस्की अनु० पवनकुमार जैन पृष्ठ : 122 मूल्य : 2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स
    अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses)
    ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओमप्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य : 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर
    अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ : 142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8** और **31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक : परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

8

हिंदी समाचार जगत

गुरुकुल कांगड़ी

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817।66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 अप्रैल 1967 अंक 8

0 भाषा-संगम (भाषा विभाग, पंजाब)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद)

0 हिंदी
* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

वे देश शान्ति के सब से शत्रु प्रबल हैं,
जो बहुत बड़े होने पर भी दुर्बल हैं,
हैं जिनके उदर विशाल, बांह छोटी है,
भोथरे दांत, पर, जीभ बहुत मोटी है।
औरों के पाले जो अलज्ज पलते हैं,
अथवा शेरों पर लदे हुए चलते हैं।

-परशुराम की प्रतीक्षा से,

विवरण पृष्ठ - 7 पर

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 15।16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०0 भाषा-संगम

भाषा विभाग (पंजाब) पटियाला :

प्रादेशिक भाषा (पंजाबी) के विकास के लिए किए गए प्रयास

(गतांक से आगे)

जिला मुख्यालयों तथा राजधानी में आशुलिपि और टाइपिंग की कक्षाएं चलाई गईं जिनमें 720 स्टेनोग्राफरों और 3929 टाइपिस्टों ने प्रशिक्षण लिया। सरकारी कर्मचारियों के मार्गदर्शन के लिए पंजाबी तथा हिंदी में 'बोध' तथा 'प्रबोध' नाम की नियम पुस्तकें भी प्रकाशित की गईं।

पिछले दस वर्षों में विभाग ने 84 पुस्तकें प्रकाशित की हैं और साहित्यिक और शोध-ग्रंथों के प्रकाशन के लिए निजी संस्थाओं को 1, 19, 680-00 रु0 का अनुदान दिया है जिससे पंजाबी तथा हिंदी में 39 ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। विभाग ने लेखकों के कई सेमिनार, 221 साहित्य प्रतियोगिताएं तथा 111 कवि-दरबार और सम्मेलन आयोजित किए। पंजाबी तथा हिंदी के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए 78 योग्यता छात्रवृत्तियां प्रदान कीं। सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक तथा वैज्ञानिक कृतियों पर पुरस्कार के रूप में विभाग ने 84, 300 रुपए खर्च किए। सर्वोत्कृष्ट प्रकाशनों के लिए प्रकाशकों को 12, 875 रु0 का और प्रतिभाशाली लेखकों को 66, 125 रु0 का अनुदान दिया। विभाग की चार लोकप्रिय पत्रिकाएं (पंजाबी दुनियां, सप्त सिंधु, जन साहित्य पंजाबी तथा हिंदी) हर मास नियमित रूप से प्रकाशित होती रही हैं और उनके विशेषांक भी निकाले गए हैं। पंजाबी के प्रसार और विकास के लिए 86, 57, 320 रुपए खर्च किए जा चुके हैं।

प्रादेशिक भाषा और उसके साहित्य की अभिवृद्धि के लिए अनेक स्वैच्छिक संस्थाएं भी महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं इनमें (1) पंजाबी साहित्य अकेडमी, लुधियाना (2) पंजाबी लेखक सभा, जालंधर (3) पंजाबी [illegible] बोर्ड, जालंधर (4) साधु आश्रम, होशियारपुर और (5) हिंदी साहित्य सम्मेलन, जालंधर प्रमुख हैं।

इस समय भाषा विभाग में लगभग 225 कर्मचारी हैं। विभाग अपने निदेशक, प्रो0 लाल सिंह के मार्गदर्शन में प्रगति कर रहा है।

(समाप्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद - संक्षिप्त परिचय

(गतांक से आगे)

(3) हिंदी वाक् प्रतियोगिता :- अहिंदी भाषी सरकारी कर्मचारियों को हिंदी में बोलने के लिए प्रोत्साहित करने के हेतु परिषद् हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन करती है। इसमें अच्छे वक्ताओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र दिए जाते हैं। दिल्ली के अतिरिक्त भारत के अन्य नगरों में भी ऐसे आयोजन किए जाते हैं।

(4) हिंदी निबंध प्रतियोगिता :- हिंदी लिखने का अभ्यास कराने के लिए परिषद् अहिन्दी भाषी सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध-प्रतियोगिता का आयोजन कई वर्षों से कर रही है। देश के कोने-कोने में इस प्रतियोगिता के केन्द्र होते हैं। इसमें कई हजार व्यक्ति भाग ले चुके हैं। श्रेष्ठ निबन्ध लेखकों को पुरस्कार दिये जाते हैं।

(5) हिंदी कामकाज प्रतियोगिता :- सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से परिषद की विभिन्न शाखाएं अपने कार्यक्षेत्र में, स्थानीय सुविधाओं के अनुसार, सरकारी फाइलों पर हिंदी में कामकाज करने की प्रतियोगिताएं आयोजित करती हैं।

साहित्य प्रकाशन योजना :

अनेक कर्मचारी हिंदी सीख चुके हैं और सीख रहे हैं। फिर भी उन्हें हिंदी में टिप्पणियां लिखने में झिझक होती है। परिषद् ने सरकारी कर्मचारियों की सुविधा के लिए विभिन्न विभागों / कार्यालयों से सम्बन्धित टिप्पणियों तथा प्रारूपों के कई प्रकाशन निकाले हैं। अब तक परिषद् के निम्नलिखित 16 प्रकाशन निकल चुके हैं :-

1- कार्यालय सहायिका 2- गजट अधिसूचनाओं के नमूने 3- आवेदन प्रारूप 4- रेलवे कार्यालय टिप्पणियां 5- चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों से संबंधित मसौदे 6- कार्यालयों के हिंदी नाम 7- सामान्य प्रशासन : टिप्पणियां तथा [illegible] 8- [illegible] :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारूप 7-

प्रारूप 8- लोक निर्माण : टिप्पणियां तथा प्रारूप 9- राज सम्पत्ति : टिप्पणियां तथा प्रारूप 10- तारों के हिंदी प्रारूप 11- प्रशासनिक शब्दावली 12- तार परियात : टिप्पणियां तथा प्रारूप 13- विभागीय फार्म 14- रेलवे माल वहन 15- देवनागरी में तार 16- स्थापना : टिप्पणियां तथा प्रारूप।

परिषद के विभिन्न प्रकाशनों की अब तक 2,33,100 प्रतियां छप चुकी हैं। 'हिंदी परिचय' की प्रतियों की संख्या इसमें शामिल नहीं है।

रोकड़, रेल यातायात, पूर्ति तथा निपटान आदि से संबंधित प्रकाशनों का कार्य हाथ में है।

हिंदी परिचय :

परिषद् 'हिंदी परिचय' नाम की एक व्यापारिक पत्रिका निकालती है। इसमें नए हिंदी सीखने वालों के लिए सामग्री प्रस्तुत की जाती है। कार्यालयों में लिखने योग्य अच्छे स्तर की हिंदी टिप्पणियां, प्रारूप तथा अन्य प्रकार की सामग्री भी संकलित की जाती है। इसकी उपयोगिता के फलस्वरूप इसकी मांग 50,000 प्रतियों तक पहुंच चुकी है। पाठकों की संख्या अनुमानतः दो लाख है। 'हिंदी परिचय' के कई विशेषांक निकल चुके हैं। इनमें 'केन्द्रीय लोक-निर्माण विभाग में हिंदी', 'दिल्ली प्रशासन में हिंदी', 'राजभाषा विशेषांक', 'रेलवे विशेषांक' और 'डाक तार विशेषांक' उल्लेखनीय हैं। कुछ और विभागों से संबंधित विशेषांक निकालने की योजना है।

शाखाओं की पत्रिकाएं :

परिषद् की कई शाखाएं भी अपनी पत्रिकाएं निकालती हैं। केन्द्रीय लोक-निर्माण विभाग शाखा की 'निर्माण', संभरण एवं निपटान महानिदेशालय शाखा की 'संभरण', खान विभाग शाखा की 'ज्योति', दिल्ली दुग्ध योजना शाखा की 'दुग्धधारा', और उदयपुर शाखा की 'साधना' पत्रिकाओं के नाम उल्लेखनीय हैं।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० हिन्दी

* भारत सरकार में

\- शिक्षा मंत्रालय

केरल विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी छात्रों का स्वागत

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से केरल विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ने वाले एस0 एन0 कालेज, कोल्लम के छात्रों के स्वागत में 31 मार्च, 1967 को भारतीय विज्ञान संस्थान के सभा-भवन में एक गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें प्रो0 शेरसिंह, राज्य मंत्री (शिक्षा) के अलावा डा0 विनकर, डा0 नगेन्द्र, डा0 प्रभाकर माचवे, श्रीमती प्रभात शोभा विद्यालंकृता और बाबू गंगाशरण सिंह, संसद सदस्य शामिल हुए। गोष्ठी का समारंभ करते हुए केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो0 चंद्रहासन ने कहा कि केरल के निवासियों का स्वागत करते हुए मैं कुछ असमंजस में पड़ गया हूं तथापि निदेशक के नाते वे मेरे मेहमान हैं - आप सबके साथ मैं उनका अभिनंदन करता हूं।

राष्ट्रभाषा हिंदी के भावी स्वरूप पर अपने विचार प्रकट करते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि प्रादेशिक भाषाओं के निकट सम्पर्क से हिंदी का जो अखिल भारतीय रूप भविष्य में विकसित होने वाला है उसकी कल्पना आज नहीं की जा सकती, फिर भी यह भलीभांति कहा जा सकता है कि वह रूप हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी लोगों को समान रूप से ग्राह्य होगा। समस्त भारतीय भाषाएं वस्तुत: एक दूसरे के बहुत निकट हैं। लिपि की भिन्नता के कारण उनकी दूरी कुछ अधिक दिखाई देती है। हिंदी का प्रादेशिक भाषाओं से कोई विरोध नहीं है। यदि विरोध ही कहना पड़े तो वह अंग्रेजी से है और वह भी केवल शासकीय क्षेत्र में। बाबू गंगाशरण सिंह ने कहा कि विभिन्न भाषा-भाषी शिक्षकों और विद्यार्थियों का ऐसा संपर्क देश की भावात्मक एकता का सुदृढ़ सूत्र बन सकता है। रोमन लिपि को भारत की सामान्य लिपि बनाने का जो आंदोलन ज़ोर पकड़ रहा है उसके प्रति सतर्क रहना आवश्यक है। प्रादेशिक भाषाओं से हिंदी में अधिकाधिक अनुवाद करने की आवश्यकता पर बल देते हुए डा0 प्रभाकर माचवे ने केरल की सांस्कृतिक देन का विवेचन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० नगेन्द्र ने दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग की ओर से केरल के विद्यार्थियों के प्रति हार्दिक शुभकामना प्रकट की । श्रीमती प्रभात शोभा (धर्मपत्नी प्रो० शेरसिंह) ने केरल के छात्रों का अभिनंदन करते हुए कहा कि हिंदी भाषी लोगों को एक न एक हिंदीतर भाषा अवश्य सीखनी चाहिए । केरल विश्वविद्यालय के प्रो० रामन नायर ने अपने विद्यार्थियों की भाषा विषयक व्यावहारिक कठिनाइयों की चर्चा करते हुए कहा कि ये विद्यार्थी हिंदी भाषा और साहित्य के सैद्धांतिक ज्ञान में उत्तर भारत के किसी भी विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों से कम नहीं है । हां, हिंदी के व्यावहारिक रूप से उनका परिचय अभी पर्याप्त नहीं है जिसके लिए शासन की ओर से उचित व्यवस्था होनी चाहिए ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में दिनकर जी ने 'कवि का मित्र' नामक हास्य-रस की कविता और परशुराम की प्रतीक्षा' के कुछ ओजपूर्ण अंश सुनाए । बाद में श्रोताओं ने सर्वश्री डा० गोपाल शर्मा, सत्यपाल शर्मा, अप्पुकुट्टन, माधव सिंह 'दीपक', सुखवीर किशोर आदि की कविताओं और श्रीमती सुनीता वर्मा, श्री जि०डा० शास्त्री और श्री राजकुमार के संगीत का रसास्वादन किया ।

हिंदी प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत समारोह :

राजकीय हिंदी अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालय, त्रिचूर के प्रशिक्षणार्थियों का एक दल प्रिंसिपल श्रीमती लक्ष्मी कुट्टी अम्मा के नेतृत्व में उत्तर भारत के प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्रों की अध्ययन-यात्रा करते हुए 28-2-67 को दिल्ली पहुंचा । केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से केंद्रीय विधि मंत्री श्री गोविन्द मेनन की अध्यक्षता में प्रशिक्षणार्थियों का स्वागत किया गया ।

अहिंदी भाषी क्षेत्रों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का दौर

केंद्रीय हिंदी निदेशालय की अध्ययन-शिविर तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों की योजना के अंतर्गत गत मार्च में सांस्कृतिक मंडलियों ने एरणाकुलम, हैदराबाद, कलकत्ता, गोहाटी, कटक, जिंदराप, मावेलीकरा, कोझिकोडी, आलप्पुषा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*राजधानी में

नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा विचार गोष्ठी का आयोजन

'विकासशील देशों में अनुवाद की समस्याएं' विषय पर ट्रस्ट की ओर से गत 13 और 14 मार्च को विचार-गोष्ठी और 15 से 24 मार्च तक कार्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का उद्घाटन भूतपूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री श्री फखरुद्दीन अली अहमद के भाषण से हुआ। गोष्ठी के चार अधिवेशन हुए। इनमें अनेक विद्वानों ने अनुवाद के महत्व, उसके पक्षों और समस्याओं पर विचार व्यक्त किए। समापन ट्रस्ट के अध्यक्ष डा० केसकर के भाषण से हुआ।

भारतीय भाषाओं के प्रति संसद सदस्यों का अधिकाधिक अनुराग

चौथी लोकसभा के प्रथम अधिवेशन के प्रथम दिन अधिकांश सदस्यों ने अंग्रेजी के बदले भारतीय भाषाओं में शपथ ग्रहण की। हिंदी में शपथ लेने वालों की संख्या सबसे अधिक (195) थी।

अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ की नई योजना

प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं और पाठकों को लाभान्वित करने के लिए प्रकाशक संघ ने एक योजना बनाई है; इसके अंतर्गत विभिन्न नगरों में पुस्तक प्रदर्शनियां आयोजित की जाएंगी। इनमें नए प्रकाशन क्रयार्थ उपलब्ध होंगे।

साहित्य अकादमी पुरस्कार समारोह

राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् ने भारतीय भाषाओं के साहित्यकारों को 1966 के साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किए और उनसे अपील की कि वे विश्वबंधुत्व के आदर्श तथा राष्ट्रीय आदर्शों के संरक्षण के लिए कार्य करें।

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद : पुरस्कार वितरण

परिषद् द्वारा आयोजित हिंदी टाइपिंग, आशुलिपि, निबंध, टिप्पण तथा व्यवहार प्रतियोगिताओं का पुरस्कार-वितरण समारोह 29 मार्च को श्री गोविन्द नारायण, स्वास्थ्य सचिव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। पुरस्कार वितरण डा० रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

- केरल में हिन्दी का प्रचार-प्रसार - एक विहंगम दृष्टि

केरल में हिन्दी का श्रीगणेश संभवतः उस समय हुआ जब वहां के देवमंदिरों और गोसाईं-मठों में उत्तर भारत के साधु-संतों और तीर्थयात्रियों के सत्कार के लिए दुभाषियों की आवश्यकता हुई। वहां ऐसे भी कर्मचारियों की नियुक्ति की जाती थी जो प्रादेशिक भाषा के अतिरिक्त हिंदी (गोसाईं भाषा) भी जानते थे। इस भाषा का ज्ञान कराने वाली मलयालम में लिखी कुछ प्राचीन पुस्तकें भी मिलती हैं।

तिरुवितांकूर के महाराजा स्वाति तिरुनाल राजवर्मा जी "गर्भ-श्रीमान्" और "स्वाति तिरुनाल" के नाम से विख्यात थे, अनेक भाषाओं के पंडित, संगीतज्ञ और उच्च कोटि के कवि थे। ब्रजभाषा में लिखे उन के अनेक पद सूर आदि भक्त कवियों की रचनाओं के समान मधुर एवं भावपूर्ण हैं।

हिंदी प्रचार आंदोलन : केरल में व्यापक स्तर पर हिंदी-प्रचार का आंदोलन सन् 1922 में प्रारंभ हुआ जब दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की एक शाखा केरल में श्री दामोदरन उण्णि की देख-रेख में स्थापित हुई। उन्होंने न केवल स्थान-स्थान पर हिंदी की कक्षाएं चलाईं अपितु अपने विद्यार्थियों में से प्रचारक भी तैयार किए। 1925 में श्री के० केशवन् नायर और श्री के० आर० शंकरानंद को भी केरल में हिंदी प्रचारक नियुक्त किया गया। 1928 में सभा के प्रचार मंत्री डब्ल्यू० पी० इग्नेशियस के प्रयत्नों से कोचीन रियासत के हाई स्कूलों में हिंदी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाने लगी। 1932 में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास ने एरणाकुलम में तथा कुछ समय बाद तिरुवनन्तपुरम में शाखाएं खोल दीं जिन का कार्यभार क्रमशः प्रो० ए० चन्द्रहासन और पं० देवदूत विद्यार्थी ने संभाला। 1936 से ये सभी शाखाएं केरल प्रांतीय हिन्दी प्रचार सभा की देख-रेख में संकेंद्रित हो कर काम करने लगीं और हिंदी प्रचार-कार्य बड़ी तीव्र गति से होने लगा। केरल के हिंदी सेवियों में उपर्युक्त व्यक्तियों के अलावा सर्वश्री पी०के० नारायणन नायर, एस० सुंदर अय्यर, एस० महालिंगम, के० आर० विश्वनाथन्, जी० सुब्रह्मण्यम्, नारायण देव तथा एस० वेंकटेश्वरन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नाम उल्लेखनीय हैं। इन कर्मठ तथा उत्साही हिंदी प्रेमियों की सेवाओं के फलस्वरूप इस समय तीन ज़िला कार्यालय, बीसों शाखा कार्यालय, पचासों हिंदी प्रचार मंडल, सैकड़ों विद्यालय तथा अनेक हिंदी पुस्तकालय स्थापित हो चुके हैं। इस समय 8000 से अधिक प्रचारक हिंदी प्रचार-कार्य में लगे हुए हैं और प्रति वर्ष 25000 से अधिक विद्यार्थी सभा की परीक्षाओं में बैठते हैं।

केरल प्रांतीय दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के अलावा केरल हिंदी प्रचार सभा नाम की एक अन्य संस्था भी वर्षों से यहां हिंदी प्रचार कर रही है जिसकी स्थापना श्री के० वासुदेवन पिल्लै ने की थी। इस संस्था की परीक्षा को भी केरल सरकार ने मान्यता प्रदान की है।

स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं के अतिरिक्त केरल में सरकारी तथा विश्वविद्यालय स्तरों पर भी हिंदी का प्रचार हो रहा है। केरल विश्वविद्यालय की ओर से "हिन्दी विद्वान" परीक्षा चलाई जाती है। प्राय: सभी कालेजों में हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था हो चुकी है और कुछ प्रमुख कालेजों में एम० ए० तक हिन्दी पढ़ाई जाती है। विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के संबंध में जानकारी नवंबर 1966 अंक में दी जा चुकी है।

राज्य स्तर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार :

जैसा पहले कहा जा चुका है, स्वाधीनता प्राप्ति से पहले भी केरल राज्य के स्कूलों तथा कालेजों में एक स्वतंत्र विषय के रूप में हिन्दी पढ़ाई जाती थी। प्रथम पंचवर्षीय योजना की अवधि में राज्य के सभी स्कूलों में हिंदी अध्यापन की व्यवस्था करने के लिए एक हिंदी शिक्षा अधिकारी की नियुक्ति की गई थी।

इस अवधि में हिंदी-मलयालम कोश का काम हाथ में लिया गया। इस पर 3500 रुपये खर्च किए गए। हिन्दी-मलयालम द्विभाषी पत्रिका प्रकाशित करने के लिए एर्णाकुलम केरल साहित्य परिषद् को 10000 रुपये का अनुदान दिया गया।

(क्रमश:)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान : सरकारी कामकाज में पूर्ण हिन्दीकरण का लक्ष्य

राज्य सरकार ने 26 जनवरी 1968 तक राज-काज में पूर्ण हिन्दीकरण का लक्ष्य निर्धारित किया है। राज्य के मुख्य सचिव श्री के0 पी0 यू0 मेनन ने अपने 22 फरवरी 1967 के परिपत्र के द्वारा सभी संबंधित अधिकारियों का ध्यान इस लक्ष्य की ओर आकर्षित किया है।

अखिल भारतीय निराला-संगोष्ठी

जोधपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के तत्वावधान में गत 25-27 फरवरी को उक्त संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें सर्वश्री डा0 नंददुलारे वाजपेयी, कु0 चन्द्रप्रकाश सिंह, डा0 विजयेन्द्र स्नातक, डा0 भगीरथ मिश्र, डा0 फतेहसिंह आदि 50 से अधिक विद्वानों ने भाग लिया।

उत्तर प्रदेश : हिन्दी, उर्दू और संस्कृत पुस्तक - लेखकों को नकद पुरस्कार

उत्तर प्रदेश सरकार ने हिन्दी, उर्दू और संस्कृत पुस्तकों के 72 लेखकों को 52,000 रु0 के नकद पुरस्कार प्रदान किए हैं। संसद सदस्य सेठ गोविन्द दास को हिन्दी भाषा की विशिष्ट सेवा के लिए 10,000 रुपये के विशिष्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

आगरा : अखिल भारतीय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

अहिन्दी भाषी प्रदेशों के हिंदी छात्रों की भाषा शैली और वक्तृत्व शक्ति को विकसित करने के उद्देश्य से केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा द्वारा गत 24 और 25 फरवरी को वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उद्घाटन श्री मौलिचन्द्र शर्मा ने किया। श्री बालकृष्ण राव की अध्यक्षता में सम्पन्न पुरस्कार वितरण समारोह में केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त शिक्षा सलाहकार डा0 परमेश्वरदीन शुक्ल ने विजयी प्रतियोगियों को चल-वैजयन्ती और पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर :

(गतांक से आगे)

हिंदी के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए भारत सरकार की ओर से अहिंदी भाषी छात्रों को प्रति वर्ष 2-3 छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। विश्वविद्यालय की ओर से जूनियर बी०ए० में 60 रु० प्रतिमास और सीनियर बी०ए० में 75 रुपये प्रतिमास की दो-दो छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों के 7-8 छात्रों को फ्रीशिप भी दी जाती है।

छात्रों को हिंदी साहित्य की अद्यतन जानकारी देने के लिए हिंदी विभाग गोष्ठियों और शोध-सेमिनारों का आयोजन समय-समय पर करता है। पिछले वर्ष 26 नवंबर से 30 नवंबर तक "साहित्य समीक्षा - मूल्यांकन और शोध" विषय पर एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई थी जिसमें डा० नंददुलारे वाजपेयी, डा० नगेन्द्र, डा० विजयेन्द्र स्नातक, डा० रणधीर उपाध्याय आदि ने भाग लिया था। विभाग ने कविता, कहानी, उपन्यास की प्रवृत्तियाँ और भारतीय भाषाओं में राम कथा विषयों पर चार गोष्ठियाँ तथा शोध तंत्र और प्रक्रिया पर शोध सेमिनार का आयोजन भी किया।

हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए तुलसी, प्रसाद, निराला और प्रेमचंद की जयंतियों के अतिरिक्त हिंदी दिवस आदि समारोह और कवि गोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। विभाग की हिंदी साहित्य समिति कहानी, कविता, निबंध आदि की प्रतियोगिताएं प्रतिवर्ष आयोजित करती है। हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजेताओं को डा० पी० सी० वैद्य चल वैजयंती प्रदान की जाती है।

हिंदी विभाग की इन गतिविधियों के फलस्वरूप तथा मिशनरी भावना से काम करने वाले कुछ उत्साही हिंदी प्रेमियों की प्रेरणा से विद्यार्थियों तथा जन साधारण में हिन्दी बहुत लोकप्रिय हुई है। विश्वविद्यालय से संबद्ध विज्ञान के दो, कला के दो और वाणिज्य के एक कालेज में स्नातक स्तर की शिक्षा का प्रमुख माध्यम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी है। हिंदी विशेष (स्पेशल) विषय लेकर बी०ए० में अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या 800 है। यहाँ तक कि कृषि संस्थान, एस०एम० पटेल इंस्टीट्यूट आफ इंगलिश और इंजीनियरिंग कालेज में हिन्दी विभाग स्थापित हो गए हैं। सड़कों तथा दफ्तरों के नाम हिंदी में हैं। वल्लभ विद्यानगर राष्ट्रीय एकता के प्रतीक स्व० सरदार वल्लभ भाई पटेल के सपनों को साकार करने के लिए सतत क्रियाशील है।

(साप्ता)

-0-

- आगरा विश्वविद्यालय

इस वर्ष आगरा विश्वविद्यालय से हिंदी में 26 शोध छात्रों को पी-एच० डी० और एक को डी०लिट् की उपाधि दी गई। छात्रों के नाम और विषय नीचे दिए जा रहे हैं।

डी०लिट्

डा० ब्रजवासीलाल श्रीवास्तव — हिन्दी वाक्य रचना

पी-एच०डी०

सर्वश्री प्रतापनारायण उपाध्याय	दूत काव्य का उद्भव और विकास
राधेकृष्ण श्रीवास्तव	उन्नीसवीं शती के हिंदी साहित्य में राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्रांति का विश्लेषणात्मक अध्ययन
पद्मचन्द्र अग्रवाल	आधुनिक हिन्दी कविता की दार्शनिक पृष्ठभूमि (भारतेन्दु से लेकर संवत् 2010 तक)
कुमारी सुधा गुप्ता	खड़ी बोली (परिनिष्ठित हिंदी) की वाक्य रचना
नारायण प्रसाद वाजपेयी	हिंदी काव्य में वेदान्त का स्वरूप (संवत् 1700 तक)
रघुवीरशरण शर्मा	आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य (संवत् 1900 से 1950 तक)
रामकुमार अवस्थी	विनय पत्रिका - दार्शनिक तथा कलात्मक विवेचन
अरविन्द पाण्डे	रीतिकालीन काव्य में लक्षणा का प्रयोग
श्रीनारायण अग्निहोत्री	ओरछा दरबार के हिन्दी कवि - केशवदास के अतिरिक्त
विष्णुदत्त भारद्वाज	हरियाणा की सांस्कृतिक शब्दावली का अध्ययन

क्रमशः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजेन्द्रनाथ सिंह	देव की पंच विलास संज्ञक रचनाओं का पाठानुसंधान
श्रीकृष्ण वार्ष्णेय	माधवानल - कामकंदला की परम्परा का अध्ययन
श्रीमती आशा	ब्रज क्षेत्र की व्रतानुष्ठानिक कहानियों का अध्ययन
रामेश्वर दयाल अग्रवाल	महाकवि तुलसीकृत रामचरितमानस एवं तमिल महाकवि कम्बनकृत रामायण का तुलनात्मक अध्ययन
रामस्वरूप शर्मा	ब्रजभाषा के रासलीला साहित्य का अध्ययन
ओम प्रकाश हारीत	आधुनिक हिंदी उर्दू काव्य की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन (1900-1960)
ईश्वरदत्त शर्मा 'शील'	प्रेमचन्दोत्तर हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियां (1937-64)
हरदयाल	कविराज बांकीदास - जीवन और साहित्य (सन् 1771 से 1833 ई० तक)
वी० एस० चिन्तामणि	ऐतिहासिक उपन्यासों का और विशेषकर हिन्दी में लिखे गए इसी जाति के उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन
उमापतिराय चंदेल	मध्ययुगीन हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्य में पौराणिक आख्याएं (1400-1700 ई० तक)
राम दीक्षित	हिन्दी साहित्य में प्रयुक्त मुहावरों का तुलनात्मक अध्ययन
रामावतार शर्मा	हिन्दी साहित्य के विकास में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान (1950 तक)
परमात्माशरण वत्स	हिन्दी काव्य में शकुनापशकुन
चिरंजीलाल झा	ब्रज में लोक-चित्रकला - निबन्ध लोक साहित्य
श्रीमती सरला कुमारी	दी राधास्वामी कल्ट एण्ड इट्स लिटरेचर
राजेन्द्रसिंह कुशवाहा	अष्टछाप के आधार पर तत्कालीन समाज एवं संस्कृति का अध्ययन ।

-0-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं0	मूल्य
छात्र हितकारी पुस्तकमाला, दारागंज प्रयाग :		बाल-साहित्य		
लाल बहादुर शास्त्री	बद्री प्रसाद गुप्त	जीवन चरित	90	1-35
सिंहनी का दूध	उमाकान्त मालवीय	कहानी	111	1-50
प्रयाग [illegible] प्रयाग :		बाल-साहित्य		
स्वाधीनता के लिए	उमा कान्त मालवीय	कहानी	72	1-25
गाथा वीर बालकों की	नरेश मिश्र	कहानी	67	1-00
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद :				
निवाचन कार्य टिप्पणियां व प्रारूप	केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद	आलेखन व टिप्पण	30	0-50
सुधा कार्यालय, 119 बाई का बाग, इलाहाबाद :				
[illegible]	सोमनाथ [illegible]	उपन्यास	126	1-00
पुष्पी कार्यालय, इलाहाबाद :				
मीर साहब	आबिद रजीम	उपन्यास	228	2-00
बैरिस्टर का प्रेम	ओम प्रकाश शर्मा	उपन्यास	119	0-75
गुप्त फानूस, जासूसों का जाल	वेद प्रकाश काम्बोज	उपन्यास	96	1-00
रूपा एण्ड कम्पनी 15, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता :				
युग चिन्तन	संकलन और रूपान्तर शरद देवड़ा	निबन्ध संग्रह	159	6-00
काला हंस	लेखक - टामस मान अनु0 - काशीनाथ मिश्र	कहानी	96	3-00
हंस प्रकाशन, 18 हेस्टिंग रोड, इलाहाबाद :				
साहित्य का उद्देश्य	प्रेमचन्द	निबंध संग्रह	195	4-00
हिन्दी साहित्य संसार, खजांची रोड, पटना-4 :				
कविता और हिंदी कविता	श्री नरेश	आलोचना	120	5-00
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी :				
कब क्यों और कैसे परिवार नियोजन	अत्रिदेव विद्यालंकार	क्रियात्मक शिक्षा	112	3-00
बाल रामायण	श्री रघुनन्दन मिश्र	[illegible]	166	1-50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

<u>हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी</u>

चित्र रेखा मसलानामा (जायसी कृत दो काव्य)	संपादक: शिव सहाय पाठक	खण्ड काव्य	156	4-50
शिक्षा सिद्धान्त	उमाशंकर श्रीवास्तव	शिक्षा	247	5-00

<u>हिंदी साहित्य भंडार; लखनऊ</u>

निमाड़ के सन्त कवि सिंगा जी	डा0 रमेशचन्द्र गंगराड़े	शोध प्रबंध	119	8-00
महाराष्ट्र का हिंदी लोक काव्य	कृष्ण श्री गांदेकर दिवाकर	प्रबन्ध	192	5-00
देवनागरी लिपि स्वरूप, विकास और समस्याएं	संपादक: नं0श्रि0जोगलेकर भगवानदास तिवारी	निबंध संग्रह	520	7-00
दक्षिण के हिंदी-प्रचार आन्दोलन का समीक्षात्मक इतिहास	पी0के0 भास्करन नायर		432	10-00
हिंदी और तेलुगु के मध्यकालीन राम-साहित्यों का तुलनात्मक अध्ययन	डा0 चावलि सूर्य नारायण मूर्ति	शोध प्रबंध	412	15-00
उर्मिला	वेंकटेश्वरम्मा प्रधान गुरुदत्त	निबंध	144	4-00
कामायनी में नाटकीय तत्व	इन्दु प्रभा पाराशर	प्रबन्ध	224	7-00
महाकवि सुब्रह्मण्य भारती एवं महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला।	डा0 पी0 जयरामन्	शोध प्रबंध	559	20-00

<u>साधना मन्दिर, नया टोला, पटना</u>

विद्यालय संगठन तथा सामुदायिक जीवन	सच्चिदानन्द सिंह 'साथी'	शिक्षा शास्त्र	312	5-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक: वी० मेजेन्सेफ
अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use)
लेखक: ए० एफ० यौफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry)
ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : वी० कुद्रयावत्सेव
अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ:183 मूल्य:4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर
अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०:268 मूल्य:8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा
अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले०वी० फेडिंस्की अनु०पवनकुमार जैन पृष्ठ:122 मूल्य:2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स
अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses)
ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर
अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ:142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817। 66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 मई 1967 अंक 9

0 भाषा-संगम (भारतीय भाषा समारोह)
0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद)
0 हिंदी

*भारत सरकार में * राजधानी में
*प्रादेशिक अंचल में * विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

देश को एक कड़ी में पिरोने वाली भाषा निश्चित रूप से हिंदी ही हो सकती है। छोटी उम्र में किसी भी बच्चे को कोई भाषा सुनने का अवसर मिले तो उसे वह आसानी से सीख लेता है। भाषा सिखाने के तरीकों में सुधार की आवश्यकता है। जो भाषाएं आगे बढ़ती हैं वे कुछ न कुछ तो बदलती ही है। हिंदी में भी, अगर हम तैयार हों तो अन्य भारतीय भाषाओं से विशेष शब्दों को ले सकते हैं।

-प्रधानमंत्री के भाषण से(देखिए पृष्ठ-4)

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 15। 16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचम अखिल भारतीय भाषा समारोह, नई दिल्ली :

राष्ट्र की अखण्डता और एकता के सूत्र को सुदृढ़ करने के महान् उद्देश्य को सामने रखते हुए दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा पिछले छः वर्षों से भारतीय भाषा समारोह का आयोजन करती आ रही है। ऐसे चार समारोह क्रमशः तिरुचिरापल्ली (तमिलनाडु), हैदराबाद (आन्ध्र), धारवाड़ (कर्नाटक) और एरणाकुलम (केरल) में हुए हैं। पांचवां त्रिदिवसीय समारोह 30 अप्रैल 1967 से विट्ठल भाई पटेल हाउस, रफी मार्ग, नई दिल्ली में सम्पन्न हो रहा है। देश की विभिन्न भाषाओं और संस्थाओं के दो सौ साठ प्रतिनिधि इसमें भाग ले रहे हैं।

समारोह का उद्घाटन 30 अप्रैल को सांय प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया। स्वागताध्यक्ष श्री गंगाशरण सिंह ने मान्य अतिथियों और आमंत्रित प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए भारतीय भाषाओं की गरिमा, महत्व और सामर्थ्य को भलीभांति समझने और उनके प्रति जागरूक और सचेष्ट होने की अपील की। उन्होंने खेद व्यक्त किया कि राजनीतिक गुलामी से मुक्त होने पर भी हम कुछ हद तक बौद्धिक और बहुत हद तक भाषा सम्बन्धी गुलामी से मुक्त नहीं हो सके हैं। भारतीय वर्णमालाओं की समानता और वैज्ञानिकता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि विभिन्न भारतीय लिपियों में अन्तर होने, वर्णों के रूप अलग-अलग होने पर भी वर्णमालाओं की यह समानता और एकता हमारी राष्ट्रीय धरोहर है। हमारे देश और संस्कृति की अन्तधारा की एकता की द्योतक है।

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने समारोह का उद्घाटन करते हुए लेखक और भाषा के महत्व को दर्शाया। देश को एक कड़ी में पिरोने वाली भाषा की आवश्यकता बताते हुए उन्होंने कहा : ऐसी भाषा निश्चित रूप से हिन्दी ही हो सकती है। आजादी के बाद भारतीय भाषाओं में कुछ काम हुआ है पर अभी बहुत काम बाकी है और सभी भाषाओं को बहुत प्रगति करनी है। हमें इसके लिए मिल कर प्रयत्न करना चाहिए। जो भाषाएं आगे बढ़ती हैं, वे कुछ न कुछ तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती ही हैं। हिन्दी में भी, अगर हम तैयार हों तो अन्य भारतीय भाषाओं के विशेष शब्द ले सकते हैं। छोटी उम्र में किसी भी बच्चे को कोई भाषा सुनने का अवसर मिले तो वह उसको आसानी से सीख लेता है। अगर यह प्रबंध हो सके कि बच्चे को स्कूल में हिन्दी सुनने का और बोलने का अवसर मिले तो वह उसे आसानी से समझ और बोल सकेगा।

सभा के मंत्री श्री आंजनेय शर्मा ने समारोह का उद्देश्य, पृष्ठभूमि और समारोह के कार्यक्रमों की रूपरेखा बताई। उन्होंने भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय और रेलवे मंत्रालय से प्राप्त आर्थिक सहायता और रेलवे कन्सेशन की सुविधा के लिए आभार प्रकट किया।

केन्द्रीय शिक्षा उपमंत्री प्रो० शेरसिंह ने एक स्मारिका का प्रमोचन किया जिसमें भारतीय भाषाओं के विद्वानों द्वारा एक ही विषय (तकनीकी साहित्य) पर लिखे गए लेखों का संग्रह है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक भारतीय भाषा में पांच प्रकार का साहित्य इस समय बहुत आवश्यक है, यथा विभिन्न शिक्षा स्तरों की पाठ्य सामग्री, एक भाषा में प्राप्य किन्तु अन्य भाषाओं में दुर्लभ साहित्य, विभिन्न आयु-वर्गों के बालक-बालिकाओं के लिए पुस्तकें, नवसाक्षरों का साहित्य और दैनिक व्यवहार और सम्पर्क के लिए सरल और सस्ती स्वयंशिक्षक पुस्तकें।

अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए हिन्दी की महान् कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों तथा कवियों से अपील करते हुए कहा कि देश में विघटनकारी प्रवृत्तियों के विरुद्ध आवाज उठाएं तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करें। भारत जैसे महादेश में अनेक भाषाओं की स्थिति स्वाभाविक है, किन्तु उनमें से प्रत्येक भाषा एक वीणा के ऐसे तार के समान रहकर ही सार्थकता पाती है, जो रागिनी की सम्पूर्णता के लिए अपनी झंकार में भिन्न है। सभी भारतीय भाषाएं प्रणम्य हैं। सभी ने अपनी चिन्तना और भावना की उपलब्धियों से राष्ट्रजीवन को समृद्ध किया है।

उसी दिन रात को 9 बजे से डा० रामधारी सिंह दिनकर की अध्यक्षता में भारतीय भाषा कवि सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद- संक्षिप्त परिचय

(गतांक से आगे)

गोष्ठियां और समारोह

हिंदी वाद-विवाद, कहानी-लेखन, कविता, टाइपिंग आदि की प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त परिषद और उसकी शाखाएं कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन, नाटक, विचार गोष्ठियां आदि आयोजित करती रहती हैं जिनमें केंद्र और राज्य सरकारों के मंत्रियों, संसद सदस्यों, हिंदी लेखकों और विद्वानों की ओर से प्रोत्साहन मिलता है।

टिप्पण तथा मसौदा लेखन पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

सरकारी कर्मचारियों को हिंदी में टिप्पण और मसौदे आदि लिखने का अभ्यास कराने के लिए परिषद् पुनश्चर्या पाठ्यक्रम तैयार करती है।

देवनागरी तार प्रचार योजना :

देवनागरी तार-सेवा को लोकप्रिय बनाने के लिए परिषद् ने विभिन्न कार्यालयों के लिए हिंदी में तार-पते तैयार किए हैं। इनमें से अधिकांश पंजीकृत हो चुके हैं।

सरकारी अनुदान :

परिषद को केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय से अनुदान मिलता है। गत वर्ष और इस वर्ष 50,000 रुपए का अनुदान मिला है।

पदाधिकारी :

डा0 केशरदास, आई0 सी0 एस0, श्री वी0 विश्वनाथन आई सी0 एस0 तथा श्री आदित्यनाथ झा आई0सी0एस0 परिषद के प्रधान रह चुके हैं। इस समय श्री गोविंद नारायण आई0 सी0 एस0 सचिव, स्वास्थ्य मंत्रालय प्रधान हैं और हरि बाबू कंसल, उप निदेशक सम्पदा निदेशालय महामंत्री हैं।

परिषद का मुख्य कार्यालय एक्स-वाई 68 सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-3 में स्थित है।

(समाप्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिन्दी

* भारत सरकार में

शिक्षा मंत्रालय : शिक्षा-मंत्री सम्मेलन :

शिक्षा आयोग की रिपोर्ट पर विचार करने के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर से आयोजित त्रिदिवसीय शिक्षा मंत्री सम्मेलन ने अनेक महत्वपूर्ण निर्णय किए हैं। सम्मेलन ने सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया है कि शिक्षा के सभी स्तरों पर और तकनीकी, इंजीनियरी, चिकित्सा और कृषि समेत सभी विषयों की पढ़ाई का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएं हों और यह परिवर्तन पांच वर्ष में पूरा किया जाय। स्कूल-स्तर पर दो अथवा तीन भाषाएं पढ़ाने के संबंध में सर्व-सम्मत नीति निर्धारित करने के लिए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन की अध्यक्षता में 9 राज्यों के शिक्षा मंत्रियों की एक समिति का गठन किया गया है।

शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन ने अपने समापन भाषण में कहा कि त्रि-भाषा सूत्र पर विचार करते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि बच्चों पर भाषा की पढ़ाई का बहुत ज्यादा बोझ न पड़े और देश की अखंडता तथा एकता को बल मिले। डा० सेन ने विश्वास प्रकट किया कि हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित करने के प्रश्न पर सर्व-सम्मत समझौता हो जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि भाषा समस्या का हल वास्तव में उस व्यवस्था में निहित है जिसके अनुसार क्षेत्रीय भाषाओं को विश्वविद्यालय, लोक-सेवा आयोग की परीक्षाओं तथा सम्पूर्ण शिक्षा का माध्यम बनाया जाएगा। यदि ऐसा किया गया तो भाषा के बारे में सोचने का ढंग बदल जाएगा।

सम्मेलन के एक प्रस्ताव में सिफारिश की गई है कि समस्त क्षेत्रीय भाषाओं में पुस्तकों के प्रकाशन के लिए केन्द्र को उदारतापूर्वक सहायता देनी चाहिए।

-परिवर्धित देवनागरी लिपि का अंतिम रूप प्रकाशित :

1961 के राष्ट्रीय एकता सम्मेलन ने समस्त भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी को एक सामान्य लिपि के रूप में स्वीकृत करने का जो प्रस्ताव किया था उसके अनुसार परिवर्धित देवनागरी लिपि का अंतिम रूप भारत सरकार ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशित कर दिया है। इसमें हिन्दीतर भाषाओं की उन विशिष्ट ध्वनियों के लिए नवीन प्रतीकों का समावेश कर दिया गया है जो पहले उसमें नहीं थे। मराठी, गुजराती, असमिया, बंगला, पंजाबी और उड़िया भाषाओं के लिपि-ग्राम हिन्दी के लिपि ग्रामों के समान ही हैं। अतः उनके सम्बन्ध में क्रमशः लिप्यंतरण प्राप्त होगा। तमिल, तेलुगु मलयालम, कन्नड़, कश्मीरी और सिंधी भाषाओं में देवनागरी से भिन्न या अतिरिक्त जो लिपि-ग्राम हैं उनकी विशिष्ट ध्वनियों के लिए नये संकेत चिह्न अपनाए गये हैं।

गृह मंत्रालय : हिन्दी परीक्षाएं पास करने पर विशेष वेतन :

भारत सरकार ने हिन्दी शिक्षण योजना के अन्तर्गत हिन्दी प्राज्ञ, हिंदी टाइपराइटिंग और हिन्दी स्टेनोग्राफी परीक्षाएं पास करने वाले केन्द्रीय सरकार के अराजपत्रित कर्मचारियों को अनुदान स्वरूप व्यक्तिगत वेतन देने की स्वीकृति दी है। यह व्यक्तिगत वेतन एक वेतन वृद्धि के बराबर होगा और 12 महीने तक ही मिलेगा।

निर्माण तथा आवास मंत्रालय : ग्रामीण आवास दीपिका का प्रकाशन :

केन्द्रीय निर्माण तथा आवास मंत्रालय ने 1962 में प्रकाशित 'रूरल हाउसिंग मेनुअल' का हिन्दी अनुवाद जनसाधारण के उपयोग और सुविधा के लिए 'ग्रामीण आवास दीपिका' नाम से प्रकाशित कर दिया है।

विधि मंत्रालय : अधिकांश कर्मचारियों को हिंदी का ज्ञान :

केन्द्रीय विधि उप मंत्री श्री दाजी साहब रामराव चव्हाण ने राज्य सभा में बताया कि विधि मंत्रालय के वर्ग-1 के 86 कर्मचारियों में 28, वर्ग-2 के 180 कर्मचारियों में से 108, वर्ग-3 के 200 कर्मचारियों में 160, तथा वर्ग-4 के 170 कर्मचारियों में 157 कर्मचारी हिन्दी जानते हैं।

हिन्दी पुस्तकों की थोक खरीद :

पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) अहिंदी भाषी क्षेत्रों में निःशुल्क वितरण के लिए कुछ उपयोगी हिन्दी पुस्तकों की थोक खरीद करने वाला है। इस संबंध में प्रेस विज्ञप्ति शीघ्र ही प्रकाशित होगी। निदेशालय इस संबंध में पत्रव्यवहार नहीं करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*राजधानी में

- सिंधी भारतीय भाषाओं की अनुसूची में

राज्य सभा ने सर्व सम्मति से प्रस्ताव पास करके सिंधी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की व्यवस्था कर दी है। राज्य सभा ने सदस्यों तथा गृह मंत्री श्री चव्हाण ने आठवीं अनुसूची में सिंधी को 15 वीं भाषा के रूप में शामिल किए जाने का स्वागत किया। श्री चव्हाण ने कहा- देश के भाषायी परिवार में सिंधी का स्वागत करते हुए हम सभी को हर्ष होता है।

-नगरपालिका में हिंदी

नई दिल्ली नगरपालिका की हाल में हुई बैठक में नगरपालिका ने अपने कर्मचारियों के साथ पत्र-व्यवहार तथा अन्य कामकाज हिंदी भाषा में करने का निश्चय किया है। अध्यक्ष श्री श्रीचंद छाबड़ा ने इससे संबंधित सभी आवश्यकताओं को शीघ्र पूरा करने पर जोर दिया है।

- साहित्यिकी द्वारा काव्य संध्याओं का आयोजन :

राजधानी की संस्था 'साहित्यिकी' द्वारा 19 अप्रैल से 23 अप्रैल 67 तक हिंदी भवन, कनाट प्लेस में पांच काव्य-संध्याओं का आयोजन किया गया जिसमें दिल्ली के 23 कवियों की पांच-पांच चुनी हुई कविताओं का पाठ तथा उन पर समीक्षात्मक लेख पढ़े गए। यह आयोजन काव्य की विभिन्न धाराओं अकविता, नई कविता, गीत एवं निर्दलीय कविताओं का एक अनोखा सम्मिश्रण था।

- बाल-साहित्य सेमिनार

'विल्सं बुक ट्रस्ट' के तत्वावधान में 21 अप्रैल से 24 अप्रैल तक बाल-साहित्य पर एक सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं तथा कुछ विदेशी भाषाओं के लेखकों प्रकाशकों आदि ने भाग लिया। सेमिनार ने अखिल भारतीय बाल-साहित्य परिषद् के निर्माण की सिफारिश की है। इस अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय बाल-साहित्य की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

केरल में हिंदी का प्रचार-प्रसार - एक विहंगम दृष्टि

(गतांक से आगे)

दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में :

इस अवधि में हिंदी अध्यापन और प्रचार के काम पर निगरानी रखने के लिए एक विशेष हिंदी अधिकारी की नियुक्ति की गई। हिंदी शिक्षा अधिकारी का यह पद सहायक निदेशक (हिंदी शिक्षा) के नाम से विद्यमान है। हिंदी प्रचार के लिए 1964-65 का बजट अनुमान 15000 रुपये और 1965-66 का अनुमान 10,700 रुपये था। इसमें माध्यमिक और उच्च प्राइमरी हिंदी अध्यापकों का व्यय शामिल नहीं है।

स्कूल स्तर पर :

यहाँ हिंदी छठी कक्षा से तीसरी अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। राज्य में 2280 से ऊपर उच्च प्राइमरी स्कूल तथा 1020 से कुछ अधिक हाई स्कूल हैं। कुल मिलाकर लगभग 11 लाख विद्यार्थी हिंदी पढ़ रहे हैं।

तीसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में उच्च प्राइमरी स्कूलों तथा हाई स्कूलों के उच्च प्राइमरी विभागों में 40-120 के वेतनमान पर 508 और 30-160 के वेतनमान पर 466 हिंदी अध्यापक नियुक्त किए थे। उसी अवधि में हाई स्कूलों में 80-185 के वेतनमान पर 364 और 60-100 के वेतनमान पर 194 हिंदी पंडितों की नियुक्ति भी की गई थी।

कालेज स्तर पर :- राज्य में 10 सरकारी और 37 गैर-सरकारी डिग्री कालेज हैं। इनके अतिरिक्त 30 से कुछ अधिक जूनियर कालेज भी हैं। इन सभी कालेजों में हिंदी अतिरिक्त वैकल्पिक भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। चौथे पार्ट में मुख्य वैकल्पिक विषय के रूप में हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था भी की गई है। कालेजों में स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी अध्ययन की व्यवस्था है। विभिन्न स्तरों पर इस समय 16000 से अधिक विद्यार्थी विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में बैठते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ग्रंथशाला संघम्

केरल ग्रंथशाला संघम् से संबद्ध लगभग 3000 पुस्तकालय तथा वाचनालय हैं। इन्हें सरकार की ओर से वार्षिक अनुदान मिलता है। इनमें से कुछ पुस्तकालयों में हिंदी कक्ष भी है। इन पुस्तकालयों से हिंदी प्रेमी जनता को हिंदी का ज्ञान प्राप्त करने की सुविधाएं मिल सकती हैं।

हिंदी अध्यापक प्रशिक्षण व्यवस्था

हिन्दी अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए, केन्द्र सरकार की योजना के अंतर्गत 1962 में रामवर्मापुरम (त्रिचूर) में एक प्रशिक्षण कालेज स्थापित किया गया। इसे केन्द्र सरकार की ओर से शत प्रतिशत अनुदान मिलता है। प्रति वर्ष 210 प्रशिक्षार्थियों को डिप्लोमा पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था है। स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग-अलग छात्रावासों की व्यवस्था शीघ्र ही की जा रही है।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना में तिरुवनंतपुरम और कोषिकोड़ में दो और प्रशिक्षण कालेज खोलने का प्रस्ताव है।

(समाप्त)

प्रादेशिक अंचल से (विविध)

केरल : सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का विकास

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की केरल शाखा द्वारा आयोजित समारोह की अध्यक्षता करते हुए केरल के मुख्य मंत्री श्री नम्बूतिरिपाड ने कहा कि कुछ समय के लिए अंग्रेजी को राजकाज में जारी रखना होगा, यह भी नितान्त आवश्यक है कि हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में विकसित करने के लिए शीघ्राशिशीघ्र कदम उठाए जाएं।

पंजाब : हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य

पंजाब विधान सभा में शिक्षा मंत्री श्री लछमन सिंह गिल ने घोषणा की कि पंजाब की राजभाषा पंजाबी होगी किन्तु संघ की राजभाषा और संपर्क भाषा होने के नाते हिन्दी सबको सीखनी पड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा : राज-कवि की नियुक्ति

हरियाणा सरकार ने हिसार राजकीय कालेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० उदयभानु 'हंस' को और पानीपत के वयोवृद्ध कवि श्री अनूप चंद आफताब को क्रमशः हिन्दी और उर्दू भाषा के राजकवि पद से सम्मानित किया है तथा निम्न-लिखित पुस्तकों के लेखकों को पुरस्कृत किया है।

(1) संत काव्य का दार्शनिक विश्लेषण - ले० मनमोहन सहगल, (2) गुरु प्रताप सूर्य के काव्य पक्ष का अध्ययन ले० डा० गोयल (3) हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - ले० डा० गणपतिचन्द्र गुप्त, (4) शक्तियां - ले० हैमेन्द्रनाथ (5) स्फुलिंग - ले० महेन्द्रप्रताप (6) जिन्दगी और जिन्दगी - ले० मनमोहन सहगल, (7) दशग्रंथ की पृष्ठ भूमि - ले० डा० रतन सिंह तथा (8) अमर शक्ति - ले० श्री ए० एल० शास्त्री।

बिहार : हिन्दी के प्रयोग और प्रगति के लिए अपील

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में केन्द्रीय राज्य शिक्षा मंत्री श्री भगवत झा आजाद ने कहा : केन्द्रीय तथा विभिन्न राज्य सरकारों के कामकाज हिन्दी में होने चाहिए और लोक सभा विधान सभाओं, परीक्षाओं तथा न्यायालयों में भारतीय भाषाओं का व्यवहार होना चाहिए। उन्होंने राष्ट्रभाषा हिन्दी के सर्वांगीण विकास व प्रगति के लिए हर सम्भव प्रयत्न करने की अपील की।

हिन्दी में काम करने का आदेश

स्वायत्त शासन एवं पर्यटन मंत्री श्री भोला प्रसाद सिंह ने, अपने अधीनस्थ सभी विभागों को हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि में काम करने का आदेश दिया है।

राजस्थान : केवल हिन्दी हस्ताक्षर मान्य

राजस्थान में एक अप्रैल से सभी सरकारी बिलों, मंजूरियों, चैकों, एवं चैकों पर केवल हिन्दी के हस्ताक्षरों को ही मान्यता देने का आदेश लागू हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार ने गत फरवरी में फैसला किया था कि अहिन्दी भाषी क्षेत्र से राज्य में आये अधिकारियों और कर्मचारियों को अपने हस्ताक्षर अंग्रेजी में करने की 6 महीने की छूट न बढ़ाई जाए।

उत्तर प्रदेश ; पुरस्कार के लिए पुस्तकें आमंत्रित

उत्तर प्रदेश सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष में कुल 71500 रु० के पुरस्कार प्रदान करने के लिए आगामी 31 मई तक हिन्दी, उर्दू और संस्कृत की मूल पुस्तकें तथा उच्च कोटि की अनूदित पुस्तकें आमंत्रित की हैं। पुस्तकें साहित्य, विज्ञान, कानून एवं विधि शास्त्र, दर्शन तथा इतिहास की होनी चाहिए। पुरस्कार के लिए एक जनवरी 1966 और 31 जनवरी 1966 के मध्य प्रकाशित पुस्तकों पर ही विचार किया जायेगा।

कानपुर विश्वविद्यालय ; समस्त कार्य हिन्दी में

उप कुलपति आचार्य जुगल किशोर ने कुलभास्कर आश्रम कृषि कालेज के वार्षिक समारोह में अध्यक्ष पद से कहा : कानपुर विश्वविद्यालय से संबद्ध सभी शिक्षण संस्थाओं के समारोहों का सारा कार्य अब से हिन्दी में ही होगा। इस सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश विश्वविद्यालय द्वारा शीघ्र ही जारी किये जाएंगे।

हिन्दी शिक्षण निष्णात और पारंगत पाठ्यक्रम

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में अहिन्दी भाषी प्रदेशों के हिन्दी शिक्षकों के लिए हिन्दी शिक्षण 'निष्णात' और हिन्दी शिक्षण 'पारंगत' (एकवर्षीय तथा द्विवर्षीय) पाठ्यक्रमों की व्यवस्था है। आवेदनपत्र भेजने की अन्तिम तिथि 31-5-67 है। आवेदनपत्र तथा अन्य जानकारी निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, गांधी नगर, आगरा-3 को 25 पैसे का मनीआर्डर भेज कर प्राप्त की जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, पूना विश्वविद्यालय

महाराष्ट्र के विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर हिंदी विभाग सर्व प्रथम पूना विश्वविद्यालय में सन् 1960 में स्थापित हुआ। प्रारंभ से लेकर 12 मार्च, 1966 तक डा० भगीरथ मिश्र आचार्य एवं अध्यक्ष रहे। मात्र एक सहायक प्राध्यापक के साथ आरंभ किए गए विभाग में उनके कार्यकाल में दो प्राध्यापकों तथा एक शोध-सहायक की वृद्धि हुई।

इस समय डा० आनंद प्रकाश दीक्षित विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष और डा० म० चिं० जोगलेकर, डा० रा० ना० मौर्य, डा० कृष्ण दिवाकर प्राध्यापक तथा श्री म० गो० कानडे शोध-सहायक हैं।

इनके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार संबद्ध महाविद्यालयों से चार प्राध्यापकों का सहयोग लिया जाता है।

अध्ययन-अध्यापन

पूना विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर अध्यापन तथा अनुसंधान की ही व्यवस्था है। विश्वविद्यालय के अतिरिक्त पूना विश्वविद्यालय क्षेत्र के अन्तर्गत धुलिया, उल्हासनगर, अमलनेर, जलगाँव और नासिक के महाविद्यालयों में एम० ए० (हिंदी) के अध्यापन की व्यवस्था है। केवल उल्हासनगर में एम० ए० का संपूर्ण पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। शेष में एम० ए० के दो प्रश्नपत्रों को पढ़ाने की ही व्यवस्था है। पूना विश्वविद्यालय से संबद्ध तथा संलग्न महाविद्यालयों में प्री-डिग्री से लेकर बी० ए० तक विभिन्न स्तरों पर हिंदी पढ़ाई जाती है।

शोधकार्य:

शोध-कार्य तीन प्रकार से हो रहा है।

( ) पी-एच० डी० निर्देशन :

अब तक चार शोध छात्रों को पी- एच० डी० की उपाधि प्राप्त हो चुकी है और पाँच शोध छात्रों का शोध कार्य प्राय: समाप्त हो चुका है। इस समय चार निर्देशकों के निर्देशन में 32 छात्र शोध कार्य में रत हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाधि प्राप्त शोधार्थियों के नाम एवं विषय इस प्रकार हैं :-

1- डा0 दशरथराज अलनानी :- दाक्खिनी हिंदी का प्रेमगाथाकाव्य
(सन् 1965)

2- डा0 का0 शि0 केळकर :- मराठी प्रांत में प्राप्त 18 वीं शताब्दी के
(सन् 1965) हिंदी पदों की भाषा का अध्ययन

3- डा0 कृष्ण दिवाकर :- भोंसला राजाओं तथा उनके आश्रित कवियों
(सन् 1965) का हिंदी काव्य (1600-1850 ई0)

4- डा0 प्र0 रा0 सुरकर :- हिंदी और मराठी के ऐतिहासिक नाटक-
(सन् 1966) तुलनात्मक अध्ययन

(2) विभागी अनुसंधान : विभाग के द्वारा कुछ योजनाएं सामूहिक रूप में संचालित की जा रही हैं।

संतों तथा अन्य कवियों की अप्राप्य और महत्वपूर्ण हस्तलिखित पांडुलिपियों को विस्तृत भूमिका सहित प्रकाशित करने की योजना के अन्तर्गत (1) नामदेव की हिंदी पदावली, डा0 भगीरथ मिश्र के संपादन में सन् 1964 में प्रकाशित की जा चुकी है, (2) उपलब्ध प्रतियों के आधार पर रज्जब की सबंगी का पाठानुसंधान तथा संपादन समाप्त प्राय: है, और (3) विश्वविद्यालय के ग्रंथालय में संगृहीत हिंदी हस्तलिखित पोथियों में से 330 ग्रंथों की संदर्भ सूची भाग 1 प्रकाशनार्थ तैयार है।

मराठी से हिंदी में तथा हिंदी से मराठी में महत्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद और संपादन, मराठी-हिंदी शब्दकोश का प्रणयन, अंग्रेजी साहित्य शास्त्रीय ग्रंथों का अनुवाद तथा विशिष्ट लेखकों की संपूर्ण कृतियों के आधार पर ग्रंथ निर्माण और समस्त भारतीय वाङ्मय के आधार पर भारतीय काव्य शास्त्र की रचना आदि से संबंधित योजनाएं विचाराधीन हैं।

(3) स्वतंत्र शोधकार्य : इसके अतिरिक्त विभाग के आचार्य तथा अन्य प्राध्यापक स्वतंत्र रूप से भी शोध एवं लेखन कार्य में रत हैं। फलस्वरूप जो कृतियां सामने आई हैं उनमें डा0 आनन्द प्रकाश दीक्षित कृत रस सिद्धांत, स्वरूप विश्लेषण, डा0 ना0 चिं0 जोगलेकर कृत मराठी का वर्णनात्मक व्याकरण, डा0 रानाकृत प्राचीन हिंदी का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, डा0 कृष्ण दिवाकर कृत महाराष्ट्र का लोक काव्य आदि उल्लेखनीय हैं।

(क्रमश:)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्सेफ अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use) लेखक : ए० एफ० योफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry) ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : वी० कुद्रयावत्सेव अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ:183 मूल्य:4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०:268 मूल्य:8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले०वी० फेडिंस्की अनु०पवनकुमार जैन पृष्ठ:122 मूल्य:2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses) ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ:142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10

24-6-67.

हिंदी समाचार जगत

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 जून 1967 अंक 10

0 भाषा-संगम (साहित्य-संस्कृति अनुभाग, मैसूर राज्य)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (हिंदी परीक्षाओं को मान्यता)

0 हिंदी

* भारत सरकार में * राजधानी में

* प्रादेशिक अंचल में * विश्वविद्यालयों में

* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

न्यायालयों में भाषाओं का प्रयोग सफल बनाने का एक ही तरीका है कि इसे प्रारंभ कर दिया जाय। यह तैरने की तरह है। जब तक आप पानी में कूदेंगे नहीं, तैरना नहीं आयेगा। हो सकता है आपको दो एक बार पानी में डुबकी लगानी पड़े। लेकिन फिर सब ठीक हो जायगा। मैं समझता हूं कि यदि हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का न्यायालयों में प्रयोग प्रारंभ कर दिया गया तो एक वर्ष में सारी स्थिति ठीक हो जायगी।

– केन्द्रीय विधि मंत्री श्री गोविन्द मेनन (देखिए पृष्ठ 11)

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 15/16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा संम

प्रादेशिक भाषा (कन्नड) के विकास के लिए किए गए प्रयास

साहित्य-संस्कृति अनुभाग, मैसूर द्वारा संचालित योजनाएं

मैसूर राज्य की प्रादेशिक भाषा कन्नड़ प्राचीन जनभाषा होते हुए भी अन्य भारतीय भाषाओं की तरह स्वाधीनता प्राप्ति से पहले पूरी तरह विकसित और समृद्ध नहीं हो सकी क्योंकि राजकाज और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अंग्रेजी का आधिपत्य था। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद इस भाषा का सर्वतोमुखी विकास करने के उद्देश्य से सरकारी और गैरसरकारी स्तर पर प्रयत्न किए जाने लगे।

1955 में राज्य सरकार ने एक साहित्यिक और सांस्कृतिक अनुभाग की स्थापना की जिसे कन्नड़ के विकास का कार्य सौंपा गया। यह अनुभाग इस समय लोक शिक्षा विभाग बंगलौर के अंतर्गत विशेष प्रभारी अधिकारी श्री शिवशरणप्पा की देख-रेख में काम कर रहा है।

कन्नड़ विश्वकोश :- कन्नड़ के विकास की अनेक योजनाओं में से कन्नड़ विश्वकोश के प्रणयन का कार्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस कार्य के लिए एक कार्यपालक अधिकारी, एक सम्पादक (मानवविधाएं), एक सम्पादक (विज्ञान) एक अनुवादक तथा उनके सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति की गई है। यह विश्वकोश एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के ढंग से तैयार किया जा रहा है। आशा है कि इस का प्रथम खंड इस वर्ष के अंत तक प्रकाशित हो जाएगा।

अन्य योजनाएं

अनुभाग ने अब तक कन्नड़ की 22 और अंग्रेजी की दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं। कन्नड़ के विकास का कार्य करने के लिए लेखकों तथा संस्थाओं को अनुदान और आर्थिक सहायता देने की भी व्यवस्था है। 1959-63 की अवधि में लगभग 120 व्यक्तियों को कन्नड़-पुस्तकों के लिए लगभग 60,000 रुपये का अनुदान दिया गया और 1965-66 में एक संस्था को कन्नड़ ग्रंथ प्रकाशित करने के लिए 20,000 रुपये की आर्थिक सहायता दी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1959-63 की अवधि में कन्नड़ की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों पर पुरस्कार देने की योजना भी कार्यान्वित की जाती रही। इसके अंतर्गत 120 लेखकों को 1,25 लाख रुपये के पुरस्कार दिए गए। 1963 के बाद आपत्कालीन स्थिति के कारण अनुदान और पुरस्कार की योजनाएं स्थगित कर देनी पड़ी।

कन्नड़ विश्वकोश के अतिरिक्त विभाग के तत्वावधान में कन्नड़ साहित्य परिषद की ओर से एक कन्नड़-कन्नड़ कोश भी तैयार किया जा रहा है। इसके तीन खंड अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। इसके साथ-साथ विभाग से 'कर्नाटक थ्रू द एजज़' नामक एक अंग्रेजी ग्रंथ भी प्रकाशित हो रहा है। इसमें राज्य की राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक गतिविधियों का गत 2000 वर्षों का इतिहास प्रस्तुत किया जाएगा। 'महाकवि कालिदास' नामक कन्नड़ ग्रंथ प्रकाशित किया जा चुका है।

उपर्युक्त योजनाओं पर लगभग 1,80 लाख रुपया खर्च किया जाएगा।

शिक्षा विभाग के अतिरिक्त कुछ स्वैच्छिक संस्थाएं भी कन्नड़ भाषा के प्रसार एवं विकास के लिए बराबर काम कर रही हैं। इनमें कन्नड़ साहित्य परिषद बंगलूर सबसे बड़ी और सब से अधिक सक्रिय संस्था है।

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की प्रमुख त्रैमासिक पत्रिका

'भाषा'

(मार्च, जून, सितम्बर और दिसम्बर में प्रकाशित)

स्थायी स्तंभ : 1- भारतीय भाषाओं की समस्याएं 2- भाषा और व्याकरण 3- शब्द-श्री 4- स्फुट विचार 5- द्वाभा 6- प्रतिध्वनि 7- भारतीय भाषाविद् 8- भारतीय साहित्य 9- हिंदी शिक्षण 10- अर्थ-संदर्भ 11- निकष।

मूल्य : एक प्रति 2 रु0। वार्षिक : 7 रु0 50 पै0।

प्राप्ति स्थान : (प्रबंधक) प्रकाशन शाखा, सिविल लाइन्स, दिल्ली-6

नोट : 'भाषा' का स्थायी ग्राहक बनने पर 'मानक देवनागरी' की प्रति तथा 'हिंदी समाचार जगत' की प्रतियाँ निःशुल्क भेजी जाया करेंगी। पैसा अग्रिम भेजना आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

हिन्दी परीक्षाओं की मान्यता :

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने उन सरकारी नौकरियों के लिए जिनमें अन्य योग्यताओं के अलावा हिन्दी की योग्यता भी निर्धारित है, विभिन्न हिन्दी संस्थाओं द्वारा संचालित कुछ परीक्षाओं को 1960 में मान्यता दी थी । बाद में यह मान्यता अवधि 31 दिसम्बर, 1966 तक बढ़ा दी गयी । अब इन परीक्षाओं की मान्यता अवधि पुनः बढ़ा दी गयी है । बम्बई हिन्दी विद्यापीठ और हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, बम्बई तथा मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, बंगलौर की परीक्षाओं को 1967 तक और शेष को 1969 तक मान्यता दी गयी है ।

यह निर्णय हिन्दी शिक्षा समिति की सिफारिश पर और संघीय लोक सेवा आयोग के परामर्श से किया गया है । यह सूचना शिक्षा मंत्रालय की विज्ञप्ति सं0 7-50।66 ख-1, दिनांक 15-5-67 में दी गई है ।

यह मान्यता केवल समकक्ष परीक्षाओं के लिए निर्धारित हिन्दी के स्तर के लिए ही है । जिन परीक्षाओं को मान्यता दी गयी है, उनके नाम आदि का ब्यौरा इस प्रकार है :

संस्था का नाम	मान्यता प्राप्त परीक्षाओं के नाम	समकक्ष परीक्षा में हिंदी का निर्धारित स्तर
हिन्दी साहित्य	प्रथमा	एस0 एल0 सी0
सम्मेलन, प्रयाग	मध्यमा (विशारद)	बी0 ए0
	उत्तमा (हिंदी साहित्य)	बी0 ए0 (आनर्स) (हिन्दी में)
राष्ट्रभाषा प्रचार	परिचय	एस0 एल0 सी0
समिति, वर्धा	कोविद	इण्टर
	रत्न	बी0 ए0
दक्षिण भारत हिन्दी	प्रवेशिका	एस0 एल0 सी0
प्रचार सभा, मद्रास	प्रवीण	बी0 ए0
	विशारद	इण्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी विद्यापीठ, देवघर	प्रवेशिका	एस० एल० सी०
	साहित्य भूषण	इण्टर
	साहित्यालंकार	बी० ए०
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा	प्रबोध	एस० एल० सी०
सभा, पूना	प्रवीण	इण्टर
	पण्डित	बी० ए०
हिन्दी प्रचार सभा,	विशारद	एस० एल० सी०
हैदराबाद	भूषण	इण्टर
	विद्वान्	बी० ए०
बम्बई हिन्दी विद्यापीठ,	उत्तमा	एस० एल० सी०
बम्बई	भाषारत्न	इण्टर
गुजरात विद्यापीठ,	तीसरी	एस० एल० सी०
अहमदाबाद	विनीत	इण्टर
	सेवक	बी० ए०
असम राष्ट्रभाषा प्रचार	प्रबोध	एस० एल० सी०
समिति, गोहाटी	विशारद	इण्टर
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा,	तीसरी	एस० एल० सी०
बम्बई	काबिल	इण्टर
मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद,	प्रवेश	एस० एल० सी०
बंगलौर	उत्तमा	इण्टर
केरल हिन्दी प्रचार सभा,	प्रवेश	एस० एल० सी०
तिरुवनंतपुरम्	भूषण	इण्टर
मणिपुर हिन्दी परिषद,	प्रबोध	एस० एल० सी०
इंफाल	विशारद	इण्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

0 हिन्दी

* भारत सरकार में

राजभाषा (विधायी) आयोग - एक संक्षिप्त परिचय

भारत सरकार के अंतर्गत राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और विकास का कार्य प्रमुख रूप से गृह मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय और विधि मंत्रालय के अधीन हो रहा है। गृह मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय तथा उसके अधीनस्थ कार्यालय (वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग) की प्रमुख योजनाओं और गतिविधियों का परिचय इस पत्रक के पिछले अंकों में दिया जा चुका है। यहां विधि मंत्रालय के राजभाषा (विधायी) आयोग के गठन एवं कार्य आदि का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

प्रथम राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए और उनके विषय में अपनी राय राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए, संविधान के अनुच्छेद 344 (4) के अंतर्गत नियुक्त की गई संसद सदस्यों की समिति ने यह सुझाव दिया था कि संविधियों के अनुवाद और विधि शब्दावली तथा कोशों से संबंधित सम्पूर्ण कार्यक्रम की समुचित योजना बनाने और उसे कार्यान्वित करने के लिए भारत की विभिन्न राष्ट्रभाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले विशेषज्ञों का एक स्थायी आयोग या इसी प्रकार का कोई उच्च स्तरीय निकाय स्थापित किया जाए। इसी सुझाव को दृष्टि में रख कर राष्ट्रपति के 27 अप्रैल 1960 के आदेश के अनुसरण में 9 जून 1961 को विधि मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा (विधायी) आयोग नामक एक स्थायी आयोग की स्थापना की गई।

यथाशक्य सब भारतीय भाषाओं में प्रयोग के लिए सर्वमान्य विधि शब्दावली बनाना, केन्द्रीय कानूनों और उनके अधीन बनाए गए नियमों और आदेशों के प्राधिकृत हिन्दी मूल पाठ तैयार करना, केन्द्रीय विधियों का प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद कराने की व्यवस्था करना और जिन विधियों का प्राधिकृत पाठ हिन्दी भाषा में नहीं है उनके हिन्दी अनुवाद की व्यवस्था करना - ये आयोग के मुख्य कार्य हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयोग ने जनवरी 1962 से अपना कार्य नियमित रूप से प्रारंभ किया। आयोग का प्रथम अधिवेशन 23 जुलाई 1962 को हुआ।

1964 में आयोग का पुनर्गठन हुआ और जो कार्य पहले हो चुका था उस पर पुनर्विचार किया गया। अधिनियमों के हिन्दी पाठ पर राज्य सरकारों से प्राप्त अभिमत और सुझावों पर विचार करके आयोग ने उन्हें अन्तिम रूप दिया।

जून 1966 में तीसरी बार आयोग का पुनर्गठन किया गया है। इसके अध्यक्ष सहित 9 पूर्णकालिक सदस्य हैं, जिसे आयोग का कार्यकारी दल कहा जाता है। विभिन्न राज्य सरकारों अथवा राज्यों के राजभाषा विधायी आयोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले 15 अंशकालिक सदस्य भी हैं।

अभी तक निम्नलिखित 15 अधिनियमों के प्राधिकृत हिन्दी पाठ राष्ट्रपति द्वारा प्रमाणित हो चुके हैं और भारत सरकार के असाधारण राजपत्र भाग 2 खण्ड 1 क में प्रकाशित कर दिए गए हैं।

1- भारतीय दंड संहिता, 1860. 2- भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872
3- सम्पत्ति हस्तान्तरण अधिनियम, 1882. 4- माल विक्रय अधिनियम, 1930
5- भारतीय संविदा अधिनियम, 1872 . 6- भूमि अर्जन अधिनियम, 1894
7- वैध निविदा (अन्तर्लिखित नोट) अधिनियम, 1964
8- गोवा, दमण और दीव न्यायिक आयुक्त न्यायालय (उच्च न्यायालय के रूप में घोषणा) अधिनियम, 1964
9- केरल राज्य विधान-मण्डल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1964
10- केरल राज्य विधान-मण्डल (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1965
11- भारतीय भागीदारी अधिनियम, 1932
12- दिल्ली (शक्तियों का प्रत्यायोजन) अधिनियम, 1964
13- दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1898
14- भारतीय न्याय अधिनियम, 1882
15- परक्राम्य लिखत अधिनियम, 1881

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- शिक्षा मंत्रालय

केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा पुनश्चर्या पाठ्यक्रम शिविर का आयोजन

शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 22 मई से 5 जून तक डी० ए० वी० कालेज, देहरादून में ग्रीष्मकालीन पुनश्चर्या पाठ्यक्रम शिविर का आयोजन कर रहा है जिसमें महाराष्ट्र, गोवा, मैसूर, केरल, मद्रास, पांडिचेरी, लकादीव तथा आंध्र प्रदेश की सरकारों से संप्रेषित 60 हिन्दी अध्यापक सम्मिलित हो रहे हैं।

इसी अवसर पर केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली की ओर से एक अखिल भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है।

जून 2 से 5 तक पाठ्यक्रम गोष्ठी का आयोजन भी होगा जिसमें शिक्षा मंत्रालय द्वारा नियुक्त पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति द्वारा तैयार किए गए पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन पर विचार किया जाएगा।

'परिवर्धित देवनागरी' किसी पर लादी नहीं जाएगी :

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा अनुमोदित 'परिवर्धित देवनागरी' लिपि के विकास का उद्देश्य सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक सामान्य लिपि की व्यवस्था करना है। यह लिपि न तो किसी पर लादी जाएगी और न ही यह क्षेत्रीय भाषाओं की अपनी लिपियों को अपदस्थ करके उनका स्थान ले लेगी। यह तो पूर्णतः वैकल्पिक और अतिरिक्त लिपि होगी जिसका उपयोग किसी भी भारतीय भाषा को लिखने में स्वेच्छा से किया जा सकेगा।

क्षेत्रीय भाषाएं शिक्षा का माध्यम

शिलांग विश्वविद्यालय का शिलान्यास करते हुए केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन ने स्पष्ट और जोरदार शब्दों में इस बात का खण्डन किया कि विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएं बनाने का निर्णय 'राजनीतिक' है। उन्होंने कहा : यह निर्णय शिक्षा के ठोस सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है। यह राजनीतिक नहीं अपितु विशुद्ध शिक्षा-शास्त्रीय निर्णय है। आगे उन्होंने कहा : जब तक विश्वविद्यालयों में क्षेत्रीय भाषाएं शिक्षा का माध्यम नहीं बनती तब तक शिक्षा का स्तर ऊँचा नहीं उठेगा, युवकों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा का प्रस्फुटन नहीं होगा, ज्ञान का प्रसार जनता तक नहीं हो सकेगा और बुद्धिजीवियों तथा सामान्य जनता के बीच खाई चौड़ी होती जाएगी।

- डाक-तार : टेलीफोन डाइरेक्टरियां हिंदी में

केन्द्रीय डाक-तार मंत्री डा० रामसुभग सिंह ने आश्वासन दिया है कि हिंदी राज्यों में टेलीफोन डाइरेक्टरियां हिन्दी में तैयार की जा रही हैं। ये शीघ्र ही प्रकाशित की जाएंगी।

- विधि मंत्रालय : न्यायालयों में हिन्दी का प्रयोग

केन्द्रीय विधि मंत्री श्री पी० गोविंद मेनन न्यायालयों में हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं का चलन बढ़ाने के संबंध में प्रमुख संसद सदस्यों से परामर्श कर रहे हैं। उन्होंने न्यायालयों में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग शीघ्र करने पर बल दिया है। उन्होंने एक भेंट में कहा : राजभाषा (विधायी) आयोग का काम तभी फलदायी होगा जब अदालतें अपने कामकाज के लिए भारतीय भाषाओं का प्रयोग आरंभ कर दें। जब तक उच्च न्यायालयों में भारतीय भाषाओं में काम नहीं होगा, विधि मंत्रालय का कार्य पूर्ण तथा सफल नहीं होगा। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट को प्रति मास एक हिन्दी पत्रिका के रूप में प्रकाशित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

हिन्दी के विकास के लिए वित्तीय सहायता

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास कार्यों के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता देने के लिए स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं से आवेदन पत्र मांगे हैं। निर्धारित फार्म पर ये आवेदन पत्र संबंधित राज्य सरकार के माध्यम से 20 जून 1967 तक मंत्रालय में पहुंच जाने चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

जम्मू-कश्मीर : हिंदी अध्ययन की प्रगति

राज्य की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने एक विज्ञप्ति में बताया है कि इस वर्ष जम्मू-कश्मीर में लगभग 1500 परीक्षार्थी राष्ट्रभाषा परीक्षा देंगे। लद्दाख के छात्र और तिब्बती शरणार्थी भी हिंदी सीखने में रुचि ले रहे हैं।

आन्ध्र प्रदेश : हिंदी के प्रचार में वृद्धि

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की आन्ध्र शाखा के उपाध्यक्ष और आन्ध्र विधान परिषद के सदस्य श्री वि0 प0 राघवाचार्य ने बताया कि आन्ध्र में हिंदी के प्रति किसी प्रकार का विवाद अथवा विरोध नहीं है। हिंदी का प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। अंग्रेजी के प्रति मोह को समाप्त कर प्रादेशिक भाषाओं को उच्चस्तरीय शिक्षा का माध्यम बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा : मद्रास में हिंदी जानने वालों की संख्या में दिनोदिन वृद्धि हो रही है।

पंजाब : हिंदी का संपर्क भाषा के रूप में विकास

शिक्षा मंत्री श्री लछमन सिंह गिल ने विधान सभा में बताया कि पंजाब की राजभाषा पंजाबी होगी और हिंदी संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी की जगह लेगी। स्कूलों में हिंदी और पंजाबी की पढ़ाई की वर्तमान व्यवस्था जारी रहेगी और हिंदी में लिखे गए पत्रों के उत्तर सरकार की ओर से हिंदी में दिए जाएंगे। आगे उन्होंने कहा : देश की राजभाषा के रूप में हिंदी का दर्जा महत्वपूर्ण है और उसकी उच्च स्थिति के संबंध में कोई इंकार नहीं कर सकता।

उत्तर प्रदेश : हिंदी को कामकाज की भाषा बनाने का प्रयास

उत्तर प्रदेश सरकार हिंदी को सरकारी कामकाज और उच्च शिक्षा संस्थानों की व्यावहारिक भाषा बनाने के लिए कृतसंकल्प है। सरकार ने एक परिपत्र द्वारा सभी जिलाधीशों और विभागाध्यक्षों को आदेश दिया है कि वे मंत्रियों से पत्र-व्यवहार हिंदी में ही करें और अपने अधीन कर्मचारियों को भी केवल हिंदी में ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदेश हैं। यही सिद्धांत उच्च शिक्षा संस्थानों पर भी लागू किया गया है। विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों को सलाह दी गई है कि दीक्षान्त भाषण हिंदी में दिलाने की व्यवस्था की जाए, ताकि नवस्नातकों में हिंदी के प्रति आस्था उत्पन्न हो।

मध्यप्रदेश : 'नवीन' अध्ययन - पीठ की स्थापना का प्रस्ताव

स्वर्गीय पं0 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की पुण्य स्मृति में मध्य प्रदेश के छः विश्वविद्यालयों में अध्ययन पीठ स्थापित करने का प्रस्ताव है। इनके अंतर्गत 'नवीन' जी के वाङ्मय का संकलन, प्रकाशन, विशेष अध्ययन, शोध कार्य आदि की व्यवस्था की जाएगी।

हिंदी को समृद्ध करना सब का दायित्व

भोपाल में नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा0 वी0 वी0 कोलते ने 47 वें अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन में भाषण करते हुए कहा : राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी को संरक्षण तथा प्रोत्साहन देने का दायित्व और लोगों की अपेक्षा अहिंदी भाषियों पर अधिक है। राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन हो जाने के बाद हिंदी केवल हिंदी भाषी क्षेत्रों की ही सम्पत्ति नहीं, अपितु वह समस्त राष्ट्र की सम्पत्ति है। उसकी रक्षा करना और उसे विकसित और समृद्ध बनाना प्रत्येक भारतीय का दायित्व है।

दिल्ली : हिंदी में आवेदन पत्र देने की छूट

अंग्रेजी के बदले हिंदी में आवेदन पत्र आदि लेने की दिल्ली प्रशासन की घोषणा का दिल्ली के ग्रामों में स्वागत हुआ है। ग्रामीणों ने इस विषय में श्री विजय कुमार मल्होत्रा को पत्र लिखकर प्रसन्नता प्रकट की है तथा उन्हें धन्यवाद दिया है।

दिल्ली के लिए भी साहित्य अकादमी

मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा ने घोषणा की है कि साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिए अन्य राज्यों के समान दिल्ली में भी साहित्य अकादमी की स्थापना की जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

- बाल साहित्य को पुरस्कार

बाल पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय बाल साहित्य की प्रदर्शनी में 9 भारतीय पुस्तकों को पुरस्कार तथा 4 को योग्यता प्रमाणपत्र दिए गए हैं। प्रदर्शनी में 35 देशों की पुस्तकें थीं। उनमें केवल भारतीय पुस्तकों को ही पुरस्कार मिला है।

- नए राष्ट्रपति के हिंदी भाषण से सभी प्रभावित

नए राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने अपना भाषण हिंदी में इतने अच्छे ढंग से पढ़ा कि सभी श्रोता अत्यंत प्रभावित हुए। सुन्दर भावों और विचारों से ओत-प्रोत उनके शब्दों का उच्चारण इतना स्पष्ट और शुद्ध था कि भाषण का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। उन्होंने अपना भाषण पहले हिंदी में दिया और बाद में उसका अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा।

- द्वितीय ज्ञानपीठ- पुरस्कार की घोषणा

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रवर्तित प्रतिवर्ष दिया जाने वाला एक लाख रुपए का साहित्यिक पुरस्कार 1925 से 1959 की अवधि में प्रकाशित भारतीय भाषाओं की कृतियों में इस बार बंगला के प्रख्यात उपन्यासकार श्री ताराशंकर वन्द्योपाध्याय के उपन्यास 'गणदेवता' पर देने की घोषणा की गई है। 'गणदेवता' बंगला के उस ग्राम्य जीवन एवं समाज का सच्चा प्रतिबिंब है जो स्वतंत्रता संग्राम के प्रारंभिक वर्षों में वहां था। इसका हिंदी संस्करण शीघ्र तैयार हो रहा है।

- भारतीय भाषाओं के विकास पर बल

हिंदुस्तान समाचार सहकारी समिति के वार्षिक अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने कहा : पांच साल में भारतीय भाषाओं के माध्यम से संपूर्ण शिक्षा की व्यवस्था के निर्णय से अब भारतीय भाषाओं को समुचित महत्व प्राप्त होने की आशा बंधी है। भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों और संवाद समितियों का विकास करना अत्यंत आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, पूना विश्वविद्यालय

(गतांक से आगे)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से प्रकाशनः

डा० न० चि० जोगलेकर कृत `हिंदी और मराठी के वैष्णव साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन,` डा० राजनारायण मौर्य कृत `प्राचीन हिंदी का भाषाशास्त्रीय अध्ययन (ई० स० 1000-1500)` और डा० कृष्ण दिवाकर संपादित `कवीन्द्राचार्य की हिंदी रचनाएँ` विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त आर्थिक सहायता से प्रकाशित हो रही है।

विभाग की अन्य प्रवृत्तियाँ

(1) अनुसंधान मंडल - हिंदी अनुसंधान मंडल की स्थापना सन् 1961 में डा० कामथ जी द्वारा की गई। इसमें शोध छात्र तथा अन्य विद्वान शोध निबंध-पाठ करते हैं और उन पर विचार-विमर्श किया जाता है। पठित निबंधों के प्रकाशन की योजना विचाराधीन है।

(2) हिंदी परिषद : इसके अन्तर्गत विद्वानों के तथा एम० ए० के छात्रों के भाषण, निबंधपाठ, कविगोष्ठियाँ, साहित्य चर्चा, परिसंवाद, और प्रसिद्ध साहित्यकारों की जयंतियाँ तथा स्मृति-दिवस आदि के आयोजन और `सौरभ` नाम की हस्तलिखित पत्रिका का प्रकाशन आदि साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

(3) भाषण माला - एम० ए० के छात्रों के लिए उनके पाठ्य-विषयों के अतिरिक्त विषयों पर अन्य विद्वानों के भाषण आयोजित किए जाते हैं। इस वर्ष भाषण माला का प्रारंभ लखनऊ विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति प्रो० के० ए० अय्यर के भाषण `भर्तृहरि की भाषा विज्ञान को देन` से हुआ। इसका उद्घाटन पूना विश्वविद्यालय के कुलगुरु डा० धनंजयराम गाडगील द्वारा हुआ। भाषण माला का समापन रविशंकर विश्वविद्यालय के उप कुलपति डा० बाबूराम सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अध्यक्षता में मराठी के प्रसिद्ध लेखक श्री दि० के० बेडेकर के 'काव्यानुभूति एवं लोकानुभूति' विषय पर दिए गए भाषण से हुआ। इन विद्वानों के भाषणों के अतिरिक्त डा० व० गराडूकर का 'वैदिक भक्ति के संदर्भ में महत् और सत्य' तथा, डा० ज० रोहणी का नाथ संप्रदाय की दार्शनिकता तथा डा० भगीरथ मिश्र का तुलसीदास की भक्ति पद्धति विषय पर भाषण हुए।

प्राध्यापक विनिमय योजना :

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की प्राध्यापक विनिमय योजना के अंतर्गत 13 जनवरी से 21 जनवरी 1967 तक इस विभाग के तत्वावधान में प्रयाग विश्वविद्यालय के डा० जगदीश गुप्त के 8 व्याख्यानों का आयोजन किया गया था। इन व्याख्यानों के विषय थे : हिंदी कृष्ण काव्य की अंतः प्रकृति, कृष्ण काव्य में लीला तत्व, रीति कवि का व्यक्तित्व, रीतिकालीन सौंदर्य, रीतिकाव्य की शक्ति और सीमाएं, छायावाद की भावभूमि, कामायनी और प्रसाद की जीवन दृष्टि, और छायावादोत्तर काव्य की प्रवृत्तियाँ।

इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत विचार-गोष्ठी तथा परिसंवादों की भी आयोजना की गई थी। विचार-गोष्ठी के अन्तर्गत डा० नरसिंह चिन्तामणि जोगलेकर द्वारा 'हिंदी-मराठी कृष्ण काव्य में वात्सल्य' तथा श्री मधुकर गोविन्द कानडे द्वारा 'हिंदी और मराठी का नवकाव्य' विषयों पर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया। डा० कृष्ण दिवाकर ने 'आचार्य चिंतामणि त्रिपाठी का कृतित्व' विषय पर भाषण दिया।

परिसंवाद का विषय था : 'आधुनिकता और रचना प्रक्रिया'।

हिंदी विभाग और महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा पूना के संयुक्त तत्वावधान में एक गोष्ठी और परिचर्चा जनवरी 1967 में आयोजित की गई जिसमें हिंदी और मराठी के कवियों और समीक्षकों ने भाग लिया।

इस प्रकार पूना विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग वर्तमान अध्यक्ष डा० आनंद प्रकाश दीक्षित के निर्देशन में, विभागीय प्राध्यापकों के सहयोग से दिन प्रतिदिन प्रगति कर रहा है।

(समाप्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

- रूस में हिंदी का बड़ा मान

भारत स्थित रूसी सांस्कृतिक विभाग के अधिकारी श्री यूरी कौशिन ने भरतपुर में आयोजित एक संपर्क गोष्ठी में बताया कि रूस में हिंदी का बड़ा मान है। रूस में हिंदी सीखने वालों की संख्या काफी है और भारत में हिंदी सही अर्थों में राजभाषा बन जाने पर रूस में हिंदी सीखने वालों की संख्या में और भी वृद्धि हो जाएगी। रूसी बच्चों के लिए मास्को में एक विद्यालय ऐसा है जहां प्रारंभ से ही सब विषयों की शिक्षा का माध्यम हिंदी है। इस विद्यालय की छात्रसंख्या 250 है।

- विदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार :

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, नई दिल्ली के तत्वावधान में गत 17 अप्रैल को विदेशों में हिंदी प्रचार और प्रसार विषय पर एक महत्वपूर्ण गोष्ठी आयोजित की गई थी। इसी विषय पर आगे और विचार करने के लिए शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेर सिंह की अध्यक्षता में सोमवार दिनांक 8 मई, 1967 को एक संगोष्ठी का पुनः आयोजन किया गया।

वक्ताओं ने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। अध्यक्ष पद से प्रो० शेर सिंह ने विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के महत्व को दर्शाते हुए यह आश्वासन दिया कि शिक्षा मंत्रालय इस संबंध में भरसक प्रयत्न करेगा।

रूस में हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता :

भारत में आए हुए सोवियत संघ के फिल्म प्रतिनिधि मंडल के नेता श्री एस० इवानोव ने पत्रकार सम्मेलन में बताया कि सोवियत संघ में भारतीय फिल्मों का वर्तमान और भविष्य दोनों उज्ज्वल हैं। भारतीय फिल्में बहुत लोकप्रिय हो रही हैं। हर जगह उनकी सराहना की जाती है। हिंदी फिल्म 'धूल का फूल' का बहुत स्वागत हुआ है। केवल उक्रेन में ही इस फिल्म को देखने वालों की संख्या 2 करोड़ 80 लाख थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

यूनेस्को कूरियर का हिन्दी संस्करण

यूनेस्को के मुख्य कार्यालय का प्रस्ताव है कि उनके द्वारा विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित पत्रिका यूनेस्को कूरियर के हिन्दी और तमिल संस्करण शीघ्र ही प्रकाशित किए जाएं। भारत सरकार का शिक्षा मंत्रालय इस प्रश्न पर सक्रियता से विचार कर रहा है। आशा की जाती है कि जुलाई - अगस्त 1967 से ये दोनों संस्करण प्रकाशित होने लगेंगे। उल्लेखनीय है कि यूनेस्को कूरियर संसार की प्रामाणिक जानकारी अंग्रेजी, फ्रेंच, अरबी, जर्मन, रूसी, स्पेनिश आदि भाषाओं में पिछले कई वर्षों से प्रकाशित कर रहा है।

हिंदी संस्करण के संबंध में प्रारंभिक चर्चा के लिए केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन हाल ही में यूनेस्को द्वारा पेरिस में आमंत्रित किए गए थे।

0 0 0 0

पुस्तक और प्रकाशक	लेखक	विषय	पृष्ठ सं०	मूल्य
सुन्दर साहित्य सदन, 882 गली बेरी वाली, बाजार सीताराम, दिल्ली-6 :				
		बाल साहित्य		
बनो अनमोल	हरेकृष्ण दास गुप्त	कहानी संग्रह	80	2-00
वन लो हीरे	,,	,,	47	1-00
जीवन में खेलो	,,	एकांकी संग्रह	80	2-00
चलते पुर्जे	,,	हास्य रचनाएं	79	2-00
अपने अपने मुंह से	,,	आत्मकथाएं	77	2-00
निरीक्षण	,,	हास्य पाठक	141	3-50
सस्ता साहित्य मंडल, कनाट सरकस, नई दिल्ली :				
परम सखा मृत्यु	काका कालेलकर	निबंध	121	2-25
वेद मंत्रों के प्रकाश में	सम्पूर्णानन्द	कथा साहित्य	88	1-50
मेरे हृदय देव	हरिभाऊ उपाध्याय	संस्मरण	158	3-00
पड़ोसी देशों में	यशपाल जैन	यात्रा वर्णन	348	6-00
कुछ शब्द-कुछ रेखाएं	विष्णु प्रभाकर	संस्मरण और	173	3-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक: वी० मेजेन्सेफ अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use) लेखक: ए० एफ० यॉफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry) ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : बी० कुद्रयावत्सेव अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ:183 मूल्य:4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०:268 मूल्य:8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले०वी० फेडिंस्की अनु०पवनकुमार जैन पृष्ठ:122 मूल्य:2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्मान पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses) ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ:142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

11
31-7-
गुरुकुल कांगड़ी

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : - आर एन 12817/63

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 जुलाई 1967 अंक 11

0 भाषा-संगम (तमिल विकास विभाग, मद्रास)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

मैट्रिकोत्तर हिंदी अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां :

अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय 1967-68 में मैट्रिकोत्तर हिंदी अध्ययन के लिए एक हजार छात्रवृत्तियां देगा। इसके लिए आवेदन पत्र राज्य सरकारों / स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं के माध्यम से 15 अगस्त 1967 तक शिक्षा मंत्रालय में पहुंच जाने चाहिए। विस्तृत जानकारी के लिए आवेदक अपनी राज्य सरकार से पत्रव्यवहार करें।

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 15/16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा संगम

प्रादेशिक भाषा (तमिल) के विकास के लिए किए गए प्रयास

तमिल विकास विभाग, मद्रास द्वारा संचालित योजनाएं

मद्रास राज्य की प्रादेशिक भाषा तमिल एक अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध भाषा है। फिर भी, अन्य भारतीय भाषाओं के समान वह स्वाधीनता प्राप्ति से पहले पूरी तरह विकसित नहीं हो सकी क्योंकि राजकाज और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अंग्रेजी का ही आधिपत्य था। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद और विशेष रूप से गत दश वर्षों से इस भाषा के सर्वतोमुखी विकास के लिए सरकारी और गैर-सरकारी स्तर पर पर्याप्त प्रयत्न किए जा रहे हैं।

सरकारी स्तर पर तमिल के प्रसार और विकास का कार्य प्रमुख रूप से नीचे लिखी चार एजेंसियों के माध्यम से हो रहा है।

1-राजभाषा समिति:

सरकार ने जनवरी 1957 में राजभाषा समिति की स्थापना की थी। इस समिति को राजभाषा अधिनियम को कार्यान्वित कराने का कार्य सौंपा गया था। राजभाषा तमिल को सरकारी कामकाज के लिए सक्षम बनाने के लिए समिति ने अनेक योजनाएं बनाई। सबसे पहले समिति ने विभिन्न सरकारी विभागों की प्रशासनिक शब्दावली के निर्माण का कार्य अपने हाथ में लिया। साथ ही महत्वपूर्ण अधिनियमों, संहिताओं, नियमावलियों, नियम-पुस्तकों और फार्मों के अनुवाद का कार्य भी प्रारंभ किया गया। इन कार्यों के लिए ऐसे सक्षम अधिकारियों और कर्मचारियों की नियुक्ति की गई थी, जिनको तमिल भाषा का ज्ञान और प्रशासनिक अनुभव दोनों पर्याप्त मात्रा में प्राप्त थे। विभिन्न सरकारी कार्यालयों में तमिल भाषा के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करने और उसे सुचारुरूप से चलाने का कार्य भी इसी समिति की देखरेख में हो रहा है।

सरकारी कर्मचारियों को तमिल भाषा के माध्यम से कामकाज करने का प्रशिक्षण देने की योजना भी चल रही है। इस योजना के अंतर्गत लगभग 2250 कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। 422 कर्मचारी प्रशिक्षण ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं। तमिल टाइपिंग की सन् 1960 से कक्षाएं चल रही हैं।

इन योजनाओं के फलस्वरूप सरकारी कार्यालयों में तमिल का प्रयोग शनैः शनैः बढ़ रहा है। तमिल में प्राप्त पत्रों के उत्तर तमिल में ही दिए जाते हैं। विभिन्न स्तरों पर टिप्पण और आलेखन का कार्य तमिल में होने लगा है।

श्री सी० एन० सिंगरवेलु राजभाषा समिति के सचिव हैं।

2- तमिल विकास और अनुसंधान परिषद् :

तमिल के विकास और शोध कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए फरवरी 1959 में तमिल विकास और अनुसंधान परिषद की स्थापना की गई। विशेषाधिकारी श्री ए० एस० ज्ञानसंबंधन परिषद के सचिव हैं।

3- तमिल प्रकाशन ब्यूरो :

तमिल माध्यम के डिग्री पाठ्यक्रमों के लिए छात्रों और प्राध्यापकों का चुनाव करने के लिए और तकनीकी शब्दावली तथा पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के संबंध में परामर्श प्राप्त करने के लिए मद्रास सरकार ने अप्रैल 1959 में 'कालेज तमिल समिति' की स्थापना की थी। इस समिति ने 14 अप्रैल 1959 से 31 मार्च, 1962 तक विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की 35 पुस्तकें प्रकाशित कीं।

सरकार ने 1 अप्रैल 1962 को तमिल प्रकाशन ब्यूरो की स्थापना की और उसे उपर्युक्त समिति का कार्य सौंप दिया। ब्यूरो ने चिकित्सा, कानून, इंजीनियरी, टैक्नोलॉजी आदि विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की पुस्तकें तमिल में प्रकाशित करने की योजना बनाई। विश्वविद्यालय स्तर के मानक ग्रंथों का चुनाव किया गया और उनके तमिल अनुवाद की व्यवस्था की गई। तमिल में मूल पुस्तकें लिखाने का कार्य भी हाथ में लिया गया। इस योजना के अंतर्गत तैयार की गई पुस्तकों का मुद्रण और प्रकाशन ब्यूरो ने किया। प्रकाशित पुस्तकें लागत मूल्य से कम दामों पर बेची जा रही हैं।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना - संक्षिप्त परिचय

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा की स्थापना सन् 1937 में पूना में हुई। सभा पिछले 30 वर्षों से महाराष्ट्र में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार बड़ी लगन और निष्ठा से कर रही है। सभा की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है :-

परीक्षा संचालन : महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा द्वारा हिंदी की 15 परीक्षाओं का संचालन किया जाता है। उनमें भाषा की सात, लिपि की तीन तथा अन्य पांच परीक्षाएं शामिल हैं। लगभग 2200 परीक्षा-केन्द्रों में प्रतिवर्ष तीन लाख परीक्षार्थी शामिल होते हैं।

राष्ट्रभाषा प्रबोध, प्रवीण तथा पंडित सरकार मान्य परीक्षाएं हैं। इनका हिंदी का स्तर क्रमश: मैट्रिक, इंटर तथा बी0 ए0 के समकक्ष माना गया है। सभा के कार्यारंभ से आज तक लगभग 32,50,000 परीक्षार्थी हिंदी का अध्ययन करके लाभान्वित हुए हैं।

ग्रंथालय योजना : महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा द्वारा हिंदी के विकास के लिए ग्रंथालय योजना कार्यान्वित की जा रही है। पूना में सभा का केन्द्रीय राष्ट्रभाषा ग्रंथालय है जिसमें 25000 से अधिक ग्रंथ हैं। बंबई, औरंगाबाद, सेलू तथा नागपुर में सभा के विभागीय ग्रंथालय हैं। इनके अलावा जिला स्तर पर धुलिया, अहमदनगर, कोल्हापुर, सोलापुर, नासिक, सांगली आदि स्थानों पर भी ग्रंथालय चलाये जा रहे हैं। हाल ही में सभा द्वारा परिचलित ग्रंथालय योजना कार्यान्वित की जा रही है। आरंभ में चिंचवड, देहूरोड, तलेगांव, लोनावला, खेड, नारायण गांव, उरुलीकांचन तथा सासवड में केन्द्र खोले गये हैं।

अध्यापन और प्रशिक्षण : पूना में सभा हिंदी माध्यम की एक प्राथमिक शाला तथा एक हिंदी हाई स्कूल का संचालन कर रही है। साथ ही हिंदी शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए सनद विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक भंडार योजना : सभा द्वारा पूना में हिंदी पुस्तक भंडार चलाया जाता है । बंबई, औरंगाबाद और नागपुर में भी पुस्तक-भंडार संचालित किए जा रहे हैं ।

प्रकाशन : सभा की मासिक पत्रिका राष्ट्रवाणी पिछले 20 वर्षों प्रकाशित की जा रही है । "हमारी बात" सभा की मासिक प्रचार-पत्रिका है जो हिंदी के प्रचारकों और शिक्षकों के लिए उपादेय सामग्री प्रस्तुत करती है । सभा ने कुल 115 पुस्तकें प्रकाशित की हैं ।

मुद्रणालय : पूना में सभा का राष्ट्रभाषा मुद्रणालय है । सभा की मासिक पत्रिकाएं तथा अन्यान्य पुस्तकें राष्ट्रभाषा मुद्रणालय में ही छपती हैं । हिंदी मराठी की छपाई के अन्य काम भी किए जाते हैं ।

अन्य प्रवृत्तियां : हिंदी शिक्षा की प्रगति के लिए सभा प्रतियोगिताएं आयोजित कर रही है । विशेष उल्लेखनीय हैं - महाराष्ट्र गुजरात संयुक्त वक्तृत्व-स्पर्धा, पश्चिम भारत हिंदी निबंध लेखन स्पर्धा, बी० ए० हिंदी व्याख्यानमाला, पंडित वासंतिक वर्ग, प्रशिक्षण शिविर ।

सभा का भवन नारायण पेठ में है । सभा द्वारा निर्मित नवीन राष्ट्रभाषा भवन एरंडवणा में है । इसकी लागत 4,50,000 रुपये है ।

पदाधिकारी : महामहोपाध्याय पद्मभूषण डा० दत्तो वामन पोतदार सभा के अध्यक्ष हैं, श्री गो० प० नेने, प्रशासन मंत्री और श्री ग० वा० करकरे मंत्री हैं ।

संस्कृत के स्वैच्छिक संगठनों और प्रख्यात पंडितों को वित्तीय सहायता

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने 1967-68 में वित्तीय सहायता देने के लिए संस्कृत के स्वैच्छिक संगठनों, पंडितों आदि से आवेदनपत्र आमंत्रित किये हैं, जो 31 अगस्त, 1967 तक राज्य सरकारों के माध्यम से मंत्रालय में पहुंच जाने चाहिये । निर्धारित आवेदन पत्र और नियमावली के लिए संस्कृत यूनिट, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली से पत्रव्यवहार करें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

* भारत सरकार में

राजभाषा (विधायी) आयोग - संक्षिप्त परिचय

(गतांक से आगे)

आयोग ने निम्नलिखित 38 अधिनियमों के हिंदी पाठ को अन्तिम रूप दे दिया है। उसे राष्ट्रपति द्वारा अधिप्रमाणित किए जाने के लिए मुद्रित कराया जा रहा है।

1- सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908. 2- परिसीमा अधिनियम, 1963

3- विनिर्दिष्ट अनुतोष अधिनियम, 1963

4- भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908

5- हिन्दू अप्राप्तवयता और संरक्षकता अधिनियम, 1956

6- संरक्षक और प्रतिपाल्य अधिनियम, 1890

7- हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956. 8- हिन्दू विवाह अधिनियम, 1955

9- कराधान विधियां (वसूली की कार्यवाहियों का चालू रखा जाना और विधिमान्यकरण) अधिनियम, 1964

10- खाद्य निगम अधिनियम, 1964, 11- बोनस संदाय अधिनियम, 1965

12- स्वर्ण (नियंत्रण) अधिनियम, 1965

13- हिन्दू दत्तक और भरण - पोषण अधिनियम, 1956

14- लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950. 15- लोक प्रतिनिधित्व-अधिनियम, 1951

16- राष्ट्रपतीय और उपराष्ट्रपतीय निर्वाचन अधिनियम, 1952

17- संसद (निरर्हता निवारण) अधिनियम, 1959

18- द्वि-सदस्य निर्वाचन क्षेत्र (उत्सादन) अधिनियम, 1961

19- लोक प्रतिनिधित्व (प्रकीर्ण उपबन्ध) अधिनियम, 1965

20- लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम (संशोधन) अधिनियम, 1966

21- दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा अधिनियम, 1964

22- गोवा, दमण और दीव (आमेलित कर्मचारी) अधिनियम, 1965

23- रेल (सशस्त्र-बल-सदस्य-नियोजन) अधिनियम, 1965

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24- गोवा, दमण और दीव (सिविल प्रक्रिया संहिता और माध्यस्थम् अधिनियम का विस्तारण) अधिनियम, 1965

25- अन्तर्देशीय वाष्प जलयान अधिनियम, 1917

26- प्रेस परिषद् अधिनियम, 1965, 27- साधारण खण्ड अधिनियम, 1897

28- डाकघर अधिनियम, 1965, 29- उत्प्रवास अधिनियम, 1922

30- सांख्यिकीय संग्रहण अधिनियम, 1963

31- कंपनी (लाभ) अतिकर अधिनियम, 1964, 32- औद्योगिक वित्त-निगम, 1948

आयोग के अधिनियमों के हिंदी पाठ शीघ्र तैयार करने के उद्देश्य से जून, 1966 से दिसम्बर, 1967 तक की अवधि के लिए एक कार्यक्रम निश्चित किया है। इसके अन्तर्गत 67 अधिनियम और तदधीन नियमों को शामिल किया गया है।

सन् 1963 से आयोग संसद को अंग्रेजी विधेयकों के हिंदी पाठ भी दे रहा है। नए विनिश्चय के अनुसार आयोग नवम्बर, 1966 से संसद में पेश किये जाने वाले सभी विधेयकों अर्थात् अंग्रेजी के मूल तथा संशोधक विधेयकों के हिंदी पाठ संसद को दे रहा है। इसके फलस्वरूप राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 5 (2) वस्तुतः प्रवर्तित हो जाएगी। अभी तक 74 विधेयकों के हिंदी पाठ संसद को दिए जा चुके हैं।

आयोग जनसाधारण के उपयोग के लिए उन अधिनियमों के द्विभाषीय (अंग्रेजी-हिंदी) संस्करण प्रकाशित कर रहा है जिनके हिंदी पाठ अधिप्रमाणित हो चुके हैं। चार अधिनियमों के द्विभाषी संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और अन्य चार मुद्रित हो रहे हैं।

विधि शब्दावली : आयोग ने लगभग 6 हजार अंग्रेजी विधिक शब्दों के भारतीय पर्याय निश्चित कर दिए हैं। इस प्रकार प्रामाणिक विधि शब्दावली का एक बड़ा भाग तैयार हो गया है। ये शब्द लगभग 25 अधिनियमों से लिए गए हैं जिनके हिंदी पाठ आयोग अन्तिम रूप से तैयार कर चुका है। इनकी एक समेकित शब्दावली शीघ्र ही प्रकाशित की जा रही है।

(क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा मंत्रालय

हिंदी निदेशालय द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा द्वारा आयोजित पुनश्चर्या पाठ्यक्रम शिविर के अवसर पर देहरादून में निदेशालय द्वारा 1 जून से 3 जून, 1967 तक हिंदी के वैज्ञानिक, तकनीकी, साहित्यिक और संदर्भ ग्रंथों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन स्थानीय प्रतिष्ठित नागरिक तथा शिक्षाविद् महंत श्री इंदिरेश चरणदास ने किया। प्रदर्शनी में 38 विषयों की लगभग 2000 पुस्तकें सजाई गई थीं। भूतपूर्व संसद सदस्य श्री जसपत राय कपूर ने प्रदर्शनी को देखकर कहा : "प्रदर्शनी देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। इससे पता चलता है कि हिंदी में, किस तेज़ी से सब विषयों पर उच्च कोटि की पुस्तकें लिखी और और प्रकाशित की जा रही हैं।"

कृषि मंत्रालय :

वन अनुसंधान संस्थान एवं महाविद्यालय, देहरादून की 38 शाखाओं/अनुभागों में से एक अनुभाग (हिंदी अनुभाग) में सम्पूर्ण कामकाज हिंदी में होता है। अन्य 15 शाखाओं/अनुभागों में हिंदी में प्राप्त पत्रों के संबंध में टिप्पण और लेखन हिंदी में होता है। उनके उत्तर सामान्यत: हिंदी में ही दिए जाते हैं।

केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, कटक में गत मई मास में 16 कार्यालय आदेश हिंदी और अंग्रेजी में जारी किए गए।

निर्माण, आवास और नगर-विकास मंत्रालय :

भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद के कर्मचारियों के हिंदी प्रशिक्षण में पर्याप्त प्रगति हो रही है। गत जून में हुई प्राज्ञ परीक्षा में मुद्रणालय के 15 कर्मचारी शामिल हुए हैं।

आकाशवाणी केन्द्र, विजयवाडा और पनाजी में शिक्षण की प्रगति

विजयवाडा केन्द्र में हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत 11 कर्मचारियों ने प्राज्ञ परीक्षा पास कर ली है। 10 कर्मचारी प्रबोध और 7 कर्मचारी प्रवीण की तैयारी कर रहे हैं। पनाजी केन्द्र में 7 कर्मचारी प्रबोध की परीक्षा दे चुके हैं और अन्य 7 कर्मचारी नए सत्र में भर्ती हो रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

हिंदी और देवनागरी का बढ़ता हुआ प्रयोग :

भारतीय साहित्य परिषद के अनुरोध पर स्थानीय व्यापारिक संस्थाएं धीरे-धीरे हिन्दी और देवनागरी को अपना रही हैं। ओबेराय इंटरनेशनल होटल का नाम 17 जून को देवनागरी लिपि में लिख दिया गया है।

भारतीय भाषाओं का विकास :

शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन ने बताया कि 1966-67 में हिन्दी के विकास और प्रचार पर 114.47 लाख रुपये, संस्कृत के विकास और प्रचार पर 24.14 लाख रुपये और अन्य भारतीय भाषाओं पर 8.93 ला. रुपये खर्च किए गए हैं। 1967-68 में भाषा विकास कार्यक्रम के अंतर्गत 179.71 लाख रुपये की व्यवस्था है जिसमें 138.49 लाख रुपये हिन्दी के लिए हैं।

देवनागरी का प्रयोग :

देवनागरी सिन्धी सम्मेलन ने सिन्धी भाषा के लिए देवनागरी लिपि को अपनाने का निर्णय किया है। इस पर अमल करने से देवनागरी का ही महत्व नहीं बढ़ेगा, सिन्धी साहित्य भी लोकप्रिय होगा।

दिल्ली हिंदी साहित्य सम्मेलन की प्रगति :

सम्मेलन लगभग 5 हजार हिन्दी प्रेमियों और 28 मंडलों के द्वारा राष्ट्रभाषा की सेवा कर रहा है। वार्षिक चुनाव में श्री प्रकाशवीर शास्त्री को अध्यक्ष, श्री महावीर प्रसाद वर्मा को महा सचिव और डा० रामधन शास्त्री को उपाध्यक्ष चुना गया है। कार्यकारिणी में सम्मानित साहित्यकार सर्वश्री वियोगी हरि, डा० नगेन्द्र, प्रो० चन्द्रहासन आदि हैं।

"आवेदन हिन्दी में" पखवाड़ा :

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने देश भर में "आवेदन हिन्दी में" पखवाड़ा मनाने का निश्चय किया है। इस पखवाड़े के अन्तर्गत परिषद की 220 शाखाओं द्वारा अपने-अपने नगर में हिन्दी में आवेदन-पत्र देने की सुविधाओं का प्रचार किया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

हरियाणा की भाषा नीति :

भारतीय गणराज्य के 17 वें हिन्दी भाषी राज्य हरियाणा की सरकार ने हिन्दी को राज्य की सरकारी भाषा और शिक्षा का माध्यम घोषित कर दिया है। भाषा नीति के अन्तर्गत जो अन्य महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं वे निम्नलिखित हैं :-

1- पंजाबी का ज्ञान जो सरकारी नौकरियों के लिए आवश्यक था अब अनिवार्य नहीं रहेगा।

2- हिन्दी हरियाणा के सभी स्कूलों में प्राइमरी कक्षा से अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाएगी। प्रारम्भिक शिक्षा प्रथम श्रेणी से हिन्दी में ही दी जाया करेगी और हिन्दी ही पठन-पाठन और परीक्षा का माध्यम होगी।

3- अंग्रेजी भाषा का अध्यापन छठी श्रेणी से प्रारम्भ किया जाएगा और सातवीं में छात्र को संस्कृत, पंजाबी और उर्दू में से कोई एक भाषा और अनिवार्यतः पढ़नी होगी।

4- जिला और जिला स्तर से नीचे क्षेत्रीय भाषाओं से संबंधित चालू व्यवस्था जारी रहेगी अर्थात् हिन्दी को राज्य भाषा का स्थान मिलेगा। परन्तु यदि कोई पंजाबी या उर्दू में आवेदन पत्र दें तो उनका उत्तर उन्हीं भाषाओं में ही दिया जाएगा।

5- स्थानीय महत्व की अधिसूचनाएं तथा नियम आदि उर्दू और पंजाबी में भी प्रकाशित किये जाएंगे।

हरियाणा एक हिन्दी भाषी प्रदेश है तथा इसके निर्माण के समय से ही यहां के निवासियों की यह हार्दिक इच्छा रही है कि राजकाज में हिंदी को उसका उचित स्थान मिलना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल : क्षेत्रीय भाषाएं पांच वर्ष में अंग्रेजी का स्थान ले लेंगी :

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन ने कलकत्ते में कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं को राज्यों में प्रशासन की भाषा बनाने के लिए जोरदार कदम उठाए जा रहे हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में पूर्ण रूप से कामकाज अगले पांच वर्षों में चालू हो जाएगा।

उन्होंने कहा : केन्द्र में हिन्दी पहले ही राजभाषा बन चुकी है और अंग्रेजी सहभाषा के रूप में तब तक चलती रहेगी जब तक कि सभी राज्य हिन्दी में कामकाज शुरू करने पर सहमत नहीं हो जाते। केन्द्र सरकार में हिन्दी के प्रयोग में तेजी लाई जा रही है। तब अंग्रेजी को वह काम न करना पड़ेगा जो राजनीतिक कारणों से उस पर जबर्दस्ती थोपा गया था।

क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के संबंध में शिक्षा मंत्री ने कहा : मुझे विश्वास है कि अब वह समय आ गया है जब कि हमें इस स्थिति को बदलने के लिए एक साहसपूर्ण कदम उठाना चाहिए और विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाओं को बनाना चाहिए। मुझे इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है कि जब तक ऐसा नहीं किया जाएगा लोगों की वास्तविक रचनात्मक प्रतिभा का न पता चलेगा और न विकास हो सकेगा।

पंजाब : भाषा के प्रश्न पर कोई मतभेद नहीं :

मुख्य मंत्री सरदार गुरनाम सिंह ने चण्डीगढ़ में कहा : भाषा के प्रश्न पर कोई मतभेद नहीं है। वस्तुतः भाषा सूत्र यही है कि पंजाब की क्षेत्रीय भाषा पंजाबी है और हिन्दी राष्ट्रभाषा है जिसका यहां राष्ट्रभाषा के रूप में प्रसार और विकास किया जाना है।

पंजाबी की एक लिपि देवनागरी हो :

हिन्दी संरक्षक समिति के संयोजक श्री वीरेन्द्र ने जालन्धर में कहा : यदि देवनागरी को पंजाबी की एक लिपि के रूप में स्वीकार कर लिया जाए तो भाषा की कोई समस्या नहीं रह जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार : सरकार अंग्रेजी को ऐच्छिक विषय बनाने पर दृढ़ :

शिक्षा मंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर ने राज्य विधान सभा में बताया कि सरकार अगले वर्ष से अंग्रेजी को ऐच्छिक विषय बनाने के अपने निर्णय पर अटल रहेगी। राज्य सरकार का यह निश्चय है कि हिन्दी को प्रत्येक स्तर पर शिक्षा का माध्यम बना दिया जाए। जो छात्र हाईस्कूल या हायर सैकण्डरी परीक्षाओं में अंग्रेजी के अलावा अन्य सभी विषयों में उत्तीर्ण हुए हैं उन्हें पास घोषित कर दिया जाएगा।

केन्द्रीय शिक्षा राज्य मंत्री श्री भागवत झा आजाद ने अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय बनाने के बिहार सरकार के निर्णय का स्वागत किया है। श्री आजाद ने कहा : क्षेत्रीय भाषाओं का विकास अत्यन्त आवश्यक है। केन्द्रीय सरकार की यह नीति है कि अगले पांच वर्षों में विश्वविद्यालय स्तर पर पढ़ाई और परीक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएं बना दी जाएं।

उत्तर प्रदेश : बाल साहित्य पर विचार-गोष्ठी का आयोजन :

इलाहाबाद के बाल वाचनालय के तत्वावधान में 'बाल सखा' के सम्पादक पंडित लल्ली प्रसाद पांडे की अध्यक्षता में एक विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई। विषय था : 'हिन्दी बाल साहित्य का स्वरूप तथा बाल साहित्यकारों की समस्याएं'। प्रमुख वक्ता थे : सर्वश्री सत्यव्रत, उमाकान्त मालवीय, राजेन्द्र-सिंह गौड़, राजा दुत्ती आदि।

: वित्त मंत्रालय से अंग्रेजी विदा :

उत्तर प्रदेश के वित्त मंत्रालय ने अपना सारा कामकाज हिन्दी में करने का फ़ैसला कर लिया है। जनता से प्रार्थना की गई है कि अब से कोई प्रार्थना या शिकायत अंग्रेजी में न भेजी जाए। इससे कार्रवाई में विलम्ब हो सकता है।

: हिन्दी के अनन्य सेवक डा० रामचन्द्र वर्मा का अभिनंदन :

गत 26, 27 जून को कनखल में बाबू श्री प्रकाश जी की अध्यक्षता में वर्मा जी का हार्दिक अभिनंदन किया गया। श्री क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय की अध्यक्षता में एक विचार गोष्ठी का आयोजन भी हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

कलकत्ता विश्वविद्यालय : स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग :

विश्व में स्नातकोत्तर स्तर पर सर्वप्रथम हिन्दी के अध्यापन की व्यवस्था करने का गौरव अहिन्दी भाषी क्षेत्र बंगाल के कलकत्ता विश्वविद्यालय को प्राप्त है । यह व्यवस्था स्व0 सर आशुतोष मुखोपाध्याय ने सन् 1919 में की थी । तब से अब तक इस विश्वविद्यालय में एम0 ए0 की कक्षाओं में हिन्दी का अध्यापन लगातार होता रहा है । सर आशुतोष मुखोपाध्याय के हिंदी प्रेम को भुलाया नहीं जा सकता । उन्होंने हिन्दी के विद्वानों से सम्पर्क स्थापित किया और उन्हें हिन्दी विभाग में अध्यापन कार्य के लिए आमंत्रित किया । प्रकाशन योजना के अंतर्गत उन्होंने हिन्दी साहित्य के कई संकलन प्रकाशित कराए । उस समय वे अत्यन्त लोकप्रिय हुए और कालान्तर में कई विश्वविद्यालयों द्वारा एम0 ए0 के पाठ्यक्रम में निर्धारित किए गए । विश्वविद्यालय से सर्वप्रथम हिन्दी में एम0 ए0 करने का गौरव अहिन्दी भाषी सज्जन डा0 नलिनी मोहन सान्याल को प्राप्त है जो आगे चलकर हिन्दी विभाग में प्राध्यापक नियुक्त हुए । उस समय हिन्दी विभाग आधुनिक भाषा विभाग के अंतर्गत था ।

1951 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के तत्कालीन चान्सलर डा0 कैलाशनाथ काटजू ने हिन्दी विभाग के सम्यक् विकास के उपायों पर विचार करने के लिए एक समिति बनायी जिसके अध्यक्ष उपकुलपति तथा सचिव श्री कल्याणमल लोढ़ा थे । उनके प्रयास से श्री विश्वेश्वरलाल मोतीलाल हलवासिया न्यास ने हिन्दी विभाग में पांच वर्षों के लिए हलवासिया रीडर की नियुक्ति के हेतु 50,000 रु0 तथा श्री घनश्यामदास बिड़ला ने उसी अवधि के लिए दो प्राध्यापकों की नियुक्ति के हेतु 70,000 रु0 प्रदान किये । बाद में विश्वविद्यालय द्वारा ये पद स्थायी बना दिये गये । इस विभाग के विकास और संवर्धन का श्रेय स्वर्गीय ललिता प्रसाद सुकुल को है । उन्होंने 1933 में इस विभाग में प्रवेश कर 1959 तक जीते जी निःस्वार्थ सेवा की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यार्थियों की संख्या को क्रमशः बढ़ता हुआ देखकर और हिन्दी के उच्च अध्ययन के महत्व को जानते हुए सैनेट ने 1961 में रीडर की अध्यक्षता में इसे स्वतंत्र विभाग बना दिया । इस समय विभाग में चार पूर्णकालिक और दो अंशकालिक प्राध्यापक हैं । 100 के लगभग विद्यार्थी हैं । इनमें लगभग एक तिहाई अहिन्दी भाषी हैं । प्रो० कल्याणमल लोढ़ा विभागाध्यक्ष हैं ।

विभाग के अंतर्गत अध्यापन के अतिरिक्त शोध-निर्देशन की भी व्यवस्था है । अब तक 18 शोध छात्रों को उनके हिन्दी शोध प्रबंधों के लिए डी० फिल की उपाधि मिल चुकी है । इस समय 21 शोध विषय पंजीयित हैं ।

विश्वविद्यालय द्वारा दिए जाने वाले सामान्य पुरस्कारों के सिवा विभाग द्वारा बी० ए० हिन्दी आनर्स में प्रथम आनेवाली छात्रा को श्री रामकुमार भुवालका स्वर्णपदक तथा एम० ए० में प्रथम आने वाले विद्यार्थी को पश्चिम बंग हिन्दी साहित्य सम्मेलन का निराला पुरस्कार दिया जाता है ।

शोध कार्य के लिए विभाग में तीन छात्रवृत्तियां हैं । इनमें दो दो सौ रु० की और एक सौ रु० की है ।

बिड़ला हिन्दी प्रचार व्याख्यानमाला के अंतर्गत प्रति वर्ष हिन्दी के एक मूर्धन्य विद्वान को हिन्दी भाषा और साहित्य से सम्बद्ध किसी विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया जाता है । इस व्याख्यानमाला के अन्तर्गत अब तक डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी और डा० नगेन्द्र के व्याख्यान हो चुके हैं ।

श्री रघुनाथ प्रसाद नोपानी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत श्री अगरचन्द नाहटा ने गतवर्ष राजस्थानी भाषा और साहित्य पर छः व्याख्यान दिये थे । इन्हें प्रकाशित करने का विचार है ।

अन्य प्रकाशनों के अतिरिक्त, छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा की परिचायिका - 'प्रक्रिया' एवं भित्ति-पत्र - 'आलोक' का प्रकाशन नियमित रूप से होता है ।

भारत के इस प्राचीनतम हिन्दी विभाग का हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन में विशिष्ट योग रहा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं०	मूल्य
नई तालीम विद्यापीठ, सेवाग्राम :				
* तमिल-प्रवेश : नागरी लिपि	रा० शंकरन्	तमिल शिक्षण	83	1-50
आंध्र सारस्वत परिषद, हैदराबाद :				
तेलुगु भाषा स्वबोधिनी	आर० शकरैया शास्त्री	तेलुगु शिक्षण	202	3-00
हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद :				
दौलत	ना० सी० फड़के	उपन्यास	294	5-50
दी न्यू कैच प्रेस, धनबाद :				
गैस जाँच की किताब	वी० दशन्धी	विज्ञान	29	0-75
सरदारी पोथी	,,	,,	152	3-00
शॉटफायरी किताब	,,	,,	39	1-00
कोलयरी ओवरमैन की पाठ्यपुस्तक	चंद्रेश्वर प्रसाद सिंह	,,	320	9-00
नारायण पुस्तक भंडार, पटना :		बालोपयोगी साहित्य		
हँसो हँसाओ	ब्रज किशोर	हास्य विनोद	24	1-50
बाबा की दाढ़ी	कैसरी	,,	28	1-50
विज्ञान की बातें भाग 1 व 2	गोलोकबिहारी चौधरी	विज्ञान	23	1-00
			31	1-50
उद्योग की कहानी	डा० केदारराम गुप्त	उद्योग	23	1-50
ऐतिहासिक कहानियाँ	कमरुन्निसा बेगम	जीवनी	80	1-50
सैर का शौक	ब्रजकिशोर नारायण	यात्रा-साहित्य	24	1-50
सतरंगा	,,	कहानी	24	1-50
बरगद की छाँह	कैसरी	,,	15	1-50
भारत के सात अमर वैज्ञानिक	गो० बि० चौधरी	जीवनी	36	1-50
जगमग जगमग	ब्रजकिशोर नारायण	कविता	24	1-50

* हिन्दी और देवनागरी के माध्यम से तमिल भाषा सीखने के लिए पुस्तक उपयोगी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारायण पुस्तक भंडार, पटना :

हमारा झण्डा	ब्रजकिशोर नारायण	कहानी	24	1-50
[illegible]	,,	ऐतिहासिक कहानियां	29	1-50
लाल बहादुर शास्त्री	,,	जीवनी	24	1-50

बिहार ग्रन्थ कुटीर, पटना :

हंस चुगे ज्यों सीप से मोती	हिमांशु श्रीवास्तव	कहानी संग्रह	104	3-50
सरंग	,,	भाव-चित्र	80	2-50
श्री पं चाचा नेहरू	सत्यदेवनारायण सिन्हा	जीवनी	47	2-00
देश के पहरेदार	हिमांशु श्रीवास्तव	,,	52	0-95
कश्मीर के शहीद	बंधु प्रसाद	नाटक	103	2-50
राष्ट्रीय समग्रता में साहित्य	दीनानाथ शरण	निबंध	122	3-00
[illegible]	फणीश्वर नाथ रेणु	कहानी संग्रह	186	3-00
नाना राव पेशवा	हिमांशु श्रीवास्तव	उपन्यास	127	3-75
वियोग	डा० ल० ना० सुधांशु	गद्य काव्य	67	2-00
चरित्रवान	आरिगपूडि	उपन्यास	280	6-00
गल्पभारती	सं० केसरी कुमार	निबंध संग्रह	217	4-00
मेरे अपने	कपिलदेव नारायण सिंह	संस्मरण	155	7-50
विचार और मूल्यांकन	प्रो० कपिल	निबंध	176	5-50
दीर्घतपा	फ० ना० "रेणु"	उपन्यास	163	4-00
लिफाफा देख कर	शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव	निबन्ध	105	2-50
अप्रियं ब्रूयात	रवीन्द्र राज हंस	कविता	60	2-00
शहर था शहर नहीं था	राजकमल चौधरी	उपन्यास	140	3-75
सांप्रतिकी	सं० महेश आदि	कविता संकलन	175	4-00
बीती बातें	"सुहृद"	संस्मरण	326	15-00
युगकवि दिनकर	मुरलीधर श्रीवास्तव	आलोचना	233	10-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्त्सेफ
   अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use)
   लेखक : ए० एफ० यौफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry)
   ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : वी० कुद्रयावत्सेव
   अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ:183 मूल्य:4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर
   अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०:268 मूल्य:8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा
    अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले०वी० फेडिंस्की अनु०पवनकुमार जैन पृष्ठ:122 मूल्य:2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स
    अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses)
    ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर
    अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ:142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8** और 31, **थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिंटो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

12
गुरुकुल कांगड़ी
30-8-6

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 1 अगस्त 1967 अंक 12

0 भाषा-संगम (तमिल विकास विभाग, मद्रास)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद)

0 हिंदी

* भारत सरकार में * राजधानी में

* प्रादेशिक अंचल में * विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

सभी भारतीय भाषाओं के लिए देवनागरी को अपनाना सम्पूर्ण देश को सुरक्षा के एक-जैसे हथियार से लैस करने के बराबर है। इससे भारत की बहुभाषी आम जनता के बीच आपसी संपर्क कायम करने और भावनात्मक एकता एवं राष्ट्रीयता की भावना बनाए रखने में सबसे अधिक मदद मिलेगी। जनता के बीच राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न करना भारत की सुरक्षा के लिए सशस्त्र सेनाओं की अनेक बटालियनों या विमानों के अनेक दस्तों अथवा नौसेना के अनेक बेड़ों से कहीं अधिक मूल्यवान होगा।

- जहाजरानी और परिवहन मंत्री, डा० वी०के०आर०वी०राव

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, 15/16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा-संगम

तमिल विकास विभाग, मद्रास

(गतांक से आगे)

पुस्तकों के अनुवाद और लेखन का कार्य विभिन्न विद्वानों को सौंपा जाता है। पाण्डुलिपियों के अनुमोदन के लिए विभिन्न कालेजों में अल्प अवधि के लिए 'सैल' खोले जाते हैं। वहां विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ पाण्डुलिपियों की जांच करते हैं और उन पर अनुमोदन देते हैं।

यह ब्यूरो विश्वविद्यालय के छात्रों के अलावा जनसाधारण के लिए भी वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों की पुस्तकें तैयार कराता है। अब तक ब्यूरो ने विभिन्न विषयों की 150 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इनसे तमिल को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने में सहायता मिलेगी।

इस विभाग की स्थापना 2 अगस्त 1965 को की गई थी। यह विभाग - राजभाषा समिति, तमिल विकास और अनुसंधान परिषद तथा तमिल प्रकाशन ब्यूरो के कार्य की देखरेख करता है। श्री वी0 कार्तिकेयन इस विभाग के निदेशक हैं।

विभाग के अंतर्गत तमिल के विकास की कई योजनाएं हैं। इनमें प्रमुख योजना है - तमिल की महत्वपूर्ण पुस्तकों के प्रकाशन के लिए उनके लेखकों को वित्तीय सहायता देने की योजना। इस योजना के अंतर्गत वित्तीय सहायता के लिए जो आवेदन पत्र प्राप्त होते हैं उन पर विशेषज्ञ समिति विचार करती है और उनके संबंध में सरकार को परामर्श देती है। स्वीकृत पाण्डुलिपियों को तमिल प्रकाशन ब्यूरो के अंतर्गत प्रकाशित किया जाता है और लेखक को उपयुक्त पारिश्रमिक दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल साहित्य और लोक साहित्य की मौलिक रचनाओं और शोध-ग्रंथों के लिए भी विभाग प्रोत्साहन देता है । विशिष्ट विषयों पर प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तकों पर पुरस्कार देने की योजना भी है । पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन विषय के विशेषज्ञों की सहायता से किया जाता है । इसके लिए 1966-67 में 10000 रुपए की बजट व्यवस्था थी ।

तमिल विकास विभाग के कार्य के लिए 1966-67 वित्त वर्ष में 2,33,700 रुपए की बजट व्यवस्था थी । राजभाषा समिति के लिए 78600 रुपए का बजट था । तमिल प्रकाशन ब्यूरो के अंतर्गत पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए 9,95,500 रुपए रखे गए थे ।

तमिल के प्रचार-प्रसार के लिए विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थाओं को भी वित्तीय सहायता दी जाती है । 1966-67 में इसके लिए 182500 रुपए की बजट व्यवस्था थी ।

त्रैमासिक पत्रिका "तमिल कल्चर" के प्रकाशन के लिए 3500 का अनुदान दिया गया था । सदर्न लैंग्वेज बुक ट्रस्ट मद्रास के लिए 12000 रुपए के अनुदान की व्यवस्था थी ।

सरकारी सहायता से बाल विश्वकोश प्रकाशित किया जा रहा है । इसके लिए 50,000 रुपए की बजट व्यवस्था की गई है । तमिल विश्वकोश के पहले खण्ड के प्रकाशन के लिए तमिल अकादमी को 46,500 रुपए का अनुदान दिया गया है । अन्य योजनाओं के लिए 30,000 रुपए की व्यवस्था है ।

स्वैच्छिक संस्थाएं

मद्रास में अनेक स्वैच्छिक संस्थाएं हैं जो तमिल के प्रचार और विकास-कार्यों में सरकार का हाथ बटाती हैं । इनमें मद्रास प्रेसीडेन्सी तमिल संगम, तमिल अकादमी, तमिल वरलट्ट कषगम, सदर्न लैंग्वेजेज बुक ट्रस्ट, तमिल लेखक संघ, और तमिल संगम प्रमुख हैं । आशा है, इनके सहयोग से मद्रास सरकार तमिल को राजभाषा और सभी स्तरों की शिक्षा के माध्यम के रूप में सरलता से अपना सकेगी ।

— 00 —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद - संक्षिप्त परिचय :

अहिंदी भाषी प्रांतों में हिंदी के प्रचार के लिए महात्मा गांधी ने जो देश-व्यापी आंदोलन चलाया था, गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद उसी का एक अंग है। इसकी स्थापना 18 अक्तूबर 1920 को हुई थी। विद्यापीठ का मूल उद्देश्य स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने वाले विद्यार्थियों के शिक्षण-प्रशिक्षण की व्यवस्था करना था। इस शिक्षा व्यवस्था में हिंदी का अध्ययन अनिवार्य था।

स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण ही विद्यापीठ के कार्य में अनेक बाधाएं आई हैं। सन् 1930 के नमक सत्याग्रह के समय इसके समस्त विद्यार्थी और अध्यापक सत्याग्रह में सम्मिलित हो गए थे। कुछ समय के लिए संस्था पर ब्रिटिश सरकार का अधिकार हो गया था। विद्यापीठ की राष्ट्रीय सेवाओं को देखते हुए सन् 1963 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसे राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया है और केंद्रीय सरकार ने इसे विश्वविद्यालय का दर्जा दिया है।

प्रारंभ में विद्यापीठ राष्ट्रभाषा प्रचार - समिति, वर्धा के कार्यक्रम के अनुसार हिंदी प्रचार का कार्य करता था। सन् 1942 से यह संस्था हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा, वर्धा के कार्यक्रम के अनुसार हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा का प्रचार करने लगी। किन्तु सन् 1949 में संविधान द्वारा राष्ट्रभाषा का रूप निश्चित हो जाने के बाद देवनागरी लिपि में हिंदी का प्रचार किया जाने लगा है और उर्दू लिपि को परीक्षाओं में ऐच्छिक विषय कर दिया गया है।

इस समय विद्यापीठ में हिंदी प्रचार के निम्नलिखित कार्यक्रम हैं :

1- हिंदी शिक्षक महाविद्यालय :

गुजरात के स्कूलों के लिए हिंदी शिक्षक तैयार करने के उद्देश्य से 1962 में स्थापित यह महा-विद्यालय विद्यापीठ की देख-रेख में काम कर रहा है। इस महाविद्यालय को केन्द्रीय सरकार की ओर से शत-प्रतिशत अनुदान मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2- परीक्षा संचालन :

विद्यापीठ इस समय छह परीक्षाएं चला रहा है - हिंदी बाल पोथी, हिंदी पहली, हिंदी दूसरी, हिंदी तीसरी, हिंदी विनीत और हिंदी सेवक । भारत सरकार ने अन्तिम तीन परीक्षाओं को क्रमश: हिन्दी में मैट्रिक, इन्टर और बी०ए० के समकक्ष मान्यता प्रदान की है । वर्गों में शामिल हुए बिना विद्यार्थी इन परीक्षाओं में बैठ सकते हैं । 1944 से 1967 फरवरी तक इन परीक्षाओं में 1388137 विद्यार्थी सम्मिलित हो चुके हैं ।

अन्य परीक्षाएं : हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था भी विद्यापीठ में की गई है । जिन लोगों की मातृभाषा गुजराती नहीं है उन्हें गुजराती सिखाने के लिए 1955 से चार परीक्षाओं का संचालन किया जा रहा है । 1966 से मराठी, तमिल, बंगला और उर्दू भाषाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था भी की गई है । हाल ही में हिंदी से गुजराती और गुजराती से हिंदी में अनुवाद की कक्षाएं भी चलाई जा रही हैं ।

अध्यापन केन्द्र : विद्यापीठ के प्रचारक अपनी सुविधा के अनुसार उपर्युक्त परीक्षाओं के लिए विभिन्न केन्द्रों में कक्षाएं चला सकते हैं । विद्यापीठ की ओर से "हिंदी विनीत" और "हिंदी सेवक" के विद्यार्थियों के लिए व्याख्यान मालाएं आयोजित की जाती हैं । अब तक "हिंदी विनीत" के लिए छह और हिंदी सेवक के लिए सोलह व्याख्यान मालाएं आयोजित की जा चुकी हैं ।

प्रचारक कक्षाएं : प्रचारकों का हिंदी ज्ञान बढ़ाने के लिए कक्षाएं बहुधा गर्मी की छुट्टियों में आयोजित की जाती हैं । 1945 से 1967 तक इस प्रकार के 30 सत्रों का आयोजन किया जा चुका है ।

हिंदी शिक्षक सनद कक्षाएं : गुजरात सरकार ने हिंदी अध्यापकों के लिए जूनियर हिंदी शिक्षक-सनद और सीनियर हिंदी शिक्षक-सनद की परीक्षाएं निश्चित की हैं । विद्यापीठ में इन परीक्षाओं के लिए भी कक्षाएं चलाई जाती हैं ।

(शेषांश अगले अंक में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

* भारत सरकार में

आकाशवाणी में हिंदी का प्रयोग

आकाशवाणी सरकार का एक ऐसा विभाग है जिस का जनसाधारण से सीधा संबंध है इसलिए उसके प्रसारणों में हिंदी को महत्वपूर्ण स्थान मिलना स्वाभाविक है । संविधान के अंतर्गत विशिष्ट स्थान प्राप्त होने तथा विस्तृत क्षेत्र में प्रचलन के कारण हिंदी का प्रयोग आकाशवाणी के कार्यक्रमों में सबसे अधिक होता है । इस समय आकाशवाणी के 75 मुख्य तथा सहायक केन्द्र हैं (इन में विविध भारती के 25 केन्द्र भी सम्मिलित हैं) । इनमें से लगभग 44 केन्द्रों के अधिकांश कार्यक्रम हिंदी में होते हैं । अहिंदी भाषी क्षेत्रों के शेष 31 केन्द्रों में कुछ कार्यक्रम हिंदी के भी होते हैं । आकाशवाणी के हिंदी कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :

समाचार बुलेटिन : आकाशवाणी दिल्ली से हिंदी में प्रतिदिन नौ समाचार बुलेटिन प्रसारित किए जाते हैं । हिंदी क्षेत्रों के केन्द्रों से ये सभी बुलेटिन रिले किए जाते हैं । अहिंदी भाषी क्षेत्रों के केन्द्र कम से कम एक बुलेटिन अवश्य रिले करते हैं । हिंदी के समाचार प्रत्येक श्रोता तक पहुंच सकें इसलिए सुबह 8-15 बजे और शाम के 8-15 हिंदी समाचार बुलेटिन विविध भारती से प्रसारित किए जाते हैं ।

संसद-सदस्यों की एक समिति ने 1962 में समाचार बुलेटिनों की भाषा के संबंध में यह निर्देश दिया था कि इनकी भाषा सरल, सुबोध और स्वाभाविक होनी चाहिए तथा प्रचलित शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग होना चाहिए । इस कार्य के लिए 1963 में श्रीप्रकाश समिति नियुक्त की गई थी । इस समिति की सिफारिश के अनुसार तैयार किए जा रहे समाचार बुलेटिनों पर पत्रकारों, साहित्यकारों तथा संसद-सदस्यों ने संतोष व्यक्त किया है ।

नाटकों का अखिल भारतीय कार्यक्रम : हिंदी की उत्कृष्ट नाट्य कृतियों को इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रसारित किया जाता है । प्रादेशिक भाषाओं के उत्कृष्ट नाटकों के हिंदी अनुवाद भी विभिन्न केंद्रों से प्रसारित किए जाते हैं ।

अखिल भारतीय रूपक कार्यक्रम : इस कार्यक्रम में विकास परियोजनाओं और पंचवर्षीय योजना के महत्वपूर्ण पहलुओं पर रूपक प्रसारित किए जाते हैं । ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसारण हिंदी में होते हैं। अंग्रेजी के रूपक हिंदी में रूपांतरित करके प्रसारित किए जाते हैं।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन : हर वर्ष गणतंत्र दिवस पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजित किया जाता है। इसमें सभी प्रादेशिक भाषाओं के प्रसिद्ध कवि भाग लेते हैं। उनकी कविताओं के हिंदी अनुवाद भी प्रसारित किए जाते हैं। बाद में इन अनूदित रचनाओं को पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। सम्मेलन में पढ़ी गई .. हिंदी कविताओं का अनुवाद प्रादेशिक भाषाओं में भी प्रसारित किया जाता है।

साहित्य समारोह : वर्ष में एक बार साहित्य समारोह का आयोजन किया जाता है। इसमें किसी निर्धारित विषय पर हिंदी में चर्चा होती है।

हिंदी पाठ : अहिंदी भाषी क्षेत्रों के श्रोताओं को हिंदी भाषा की जानकारी देने के विचार से दिसम्बर 1949 से हिंदी पाठ ` कार्यक्रम शुरू किया गया था। यह कार्यक्रम बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, तिरुचि, आदि तेरह अहिंदी भाषी केन्द्रों से प्रसारित किया जाता है। 1962 में आपातकालीन स्थिति के कारण इसे बीच में कुछ समय के लिए बंद कर देना पड़ा था। मई, 1966 से इसे पुन: प्रसारित किया जाने लगा है। यह कार्यक्रम 15 मिनिट के लिए सप्ताह में तीन से पांच दिन तक होता है।

विदेश स्थित श्रोताओं को अंग्रेजी के माध्यम से हिंदी की जानकारी देने के लिए पच्चीस पाठों की एक माला तैयार की जा रही है। इसे प्रति सप्ताह प्रसारित करने का विचार है। ये हिंदी पाठ उपयोग के लिए विदेशी प्रसारण संगठनों को भी उपलब्ध होंगे। कुछ वर्ष पहले विदेश प्रसारण प्रभाग से भी हिंदी पाठ प्रसारित हुए थे

खेलकूद प्रतियोगिताओं का आँखों देखा हाल : आकाशवाणी के प्रसारणों में खेलकूद संबंधी वार्ताओं आदि की ओर अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है। मई 1966 से अप्रैल 1967 तक 21 खेलकूद प्रतियोगिताओं का आँखों देखा हाल हिंदी में प्रसारित किया गया। इसे श्रोताओं ने बहुत पसंद किया है। समाचार पत्रों ने भी इसकी प्रशंसा की है।

हिंदी शब्दावली : आकाशवाणी ने हिंदी क्षेत्रों तथा हिंदीतर क्षेत्रों के केंद्रों के उपयोग के लिए हिंदी शब्दावली भी तैयार की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह मंत्रालय

केन्द्रीय कर्मचारियों के हिंदी शिक्षण में पर्याप्त प्रगति

गृह मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री विद्याचारण शुक्ल ने लोक सभा में बताया कि अब तक एक लाख चौरासी हजार कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने की शिक्षा दी जा चुकी है। 6858 कर्मचारियों ने हिंदी टाइपिंग सीखा है तथा 1098 कर्मचारियों ने हिंदी शार्टहैण्ड की शिक्षा प्राप्त की है। केन्द्र सरकार के 1306 विभागों में हिंदी माध्यम से कार्य करने की व्यवस्था की गई है। गत वर्ष हिंदी में प्राप्त कुल पत्रों के 80 प्रतिशत उत्तर हिंदी में दिए गए। लगभग सभी सरकारी संकल्प हिंदी में प्रकाशित किए गए। संसद के समक्ष प्रस्तुत किए जाने वाले 87 प्रतिशत प्रतिवेदन हिंदी में प्रकाशित किए गए। संवैधानिक मामलों से संबंधित भाग-दो को छोड़ कर भारत के राजपत्र के सभी भाग 26 जनवरी 1965 से हिंदी में भी प्रकाशित किए जा रहे हैं। केन्द्र सरकार ने उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात तथा हरियाणा से हिंदी में पत्र-व्यवहार करने का निश्चय किया है।

शिक्षा मंत्रालय

श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ का संचालन

मंत्रालय ने विद्यापीठ का संचालन अपने हाथ में ले लिया है। इसके लिए एक स्वशासी समिति गठित की गई है जिसके अध्यक्ष केन्द्रीय पर्यटन मंत्री डा० कर्णसिंह हैं। विद्यापीठ में आचार्य, शास्त्री तथा शिक्षा-शास्त्री पाठ्यक्रमों के शिक्षण की व्यवस्था है और शोध-कार्य के लिए सुविधाएं उपलब्ध हैं। योग्य छात्रों को छात्रवृत्तियां तथा छात्रावास की सुविधा दी जाती है।

डा० मंडन मिश्र विद्यापीठ के निदेशक हैं।

1966-67 में हिंदी का विकास

चौथी पंचवर्षीय योजना में हिंदी, संस्कृत और आधुनिक भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाओं के विकास से संबंधित योजनाओं के लिए केन्द्रीय क्षेत्र में 10 करोड़ 90 लाख रु0 की राशि रखी गई है। इसमें से 7 करोड़ 60 लाख रु0 हिंदी के लिए, 2 करोड़ 30 लाख रु0 संस्कृत के लिए और 1 करोड़ रु0 आधुनिक भारतीय भाषाओं के लिए हैं।

अहिंदी-भाषी क्षेत्रों में हिंदी के प्रचार और प्रसार के लिए स्वैच्छिक संगठनों को 1966-67 में 12 लाख रु0 के अनुदान दिए गए। 1967-68 में भी इसके लिए 12 लाख रु0 की बजट व्यवस्था की गई है।

आलोच्य वर्ष में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने लगभग 24 हजार शब्द तैयार किए और 25 हजार शब्दों को अंतिम रूप दिया। आयोग ने भौतिकी, रसायन, गणित, वनस्पति विज्ञान और कृषि विषयों के प्राथमिक पारिभाषिक शब्द कोश तैयार किए हैं। अब तक आयोग ने 779 मानक पुस्तकों को अनुवाद के लिए चुना है। इनमें से 380 पुस्तकों का हिंदी अनुवाद हो रहा है।

क्षेत्रीय भाषाएं शिक्षा का माध्यम घोषित

भारत सरकार ने सिद्धान्त रूप में यह स्वीकार कर लिया है कि सभी स्तरों पर सभी विषयों की शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से दी जानी चाहिए। इस में इंजीनियरिंग, डाक्टरी, टैक्नोलाजी, कानून तथा कृषि के विषय शामिल हैं।

शिक्षामंत्री ने कहा है कि सरकार को विश्वास है कि जब तक सभी स्तरों तक, सभी विषयों में भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा नहीं दी जाएगी तब तक जनता की रचनात्मक शक्ति का विकास नहीं होगा, शिक्षा का स्तर ऊपर नहीं उठेगा, आम जनता तक ज्ञान का विस्तार नहीं होगा तथा बुद्धिजीवी वर्ग व आम जनता के बीच की खाई पाटी नहीं जा सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*राजधानी में

अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ : विचार-गोष्ठी का आयोजन

राजभाषा हिंदी की समस्या के संदर्भ में विचार करने के लिए संघ की ओर से 30 जुलाई, 1967 को श्री गंगाशरण सिंह की अध्यक्षता में विचार-गोष्ठी सम्पन्न हुई। इसमें केन्द्र सरकार से मान्यता प्राप्त स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं के प्रतिनिधि तथा राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों के विशिष्ट कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। प्रमुख भाषण कर्ता : सर्वश्री मौलिचन्द्र शर्मा, गो०प० नेने, आंजनेय शर्मा, डा० मो०दि० पराडकर, गिरिराज किशोर, के०बि० मानप्पा, प्रकाशवीर शास्त्री, जगन्नाथ पहाड़िया, [illegible] एस०एम० जोशी आदि थे।

राष्ट्र की सुरक्षा के लिए देवनागरी

जहाजरानी और परिवहन मंत्री डा० वी०के०आर०वी०राव ने देश की सभी भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि को अपनाने की जोरदार अपील की है। उन्होंने सुझाव दिया है कि देवनागरी का अध्ययन अतिरिक्त लिपि के रूप में किया जाना चाहिए। छात्र अपनी मातृभाषा की लिपि तो सीखें ही, साथ ही देवनागरी भी सीख लें। इससे उन्हें सभी भारतीय भाषाओं की कुंजी प्राप्त हो जाएगी। भारतीय भाषाओं के लिए रोमन लिपि को डा० राव ने अनुपयुक्त बताया। डा० राव ने इस बात का ज़ोरदार समर्थन किया कि सभी स्तरों पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।

हिंदी का प्रयोग बढ़ाने का आग्रह

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद के दो दिन के सम्मेलन में सेठ गोविन्द दास ने कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाया जाए और निजी कार्य हिंदी में किया जाय। आगामी वर्ष के लिए श्री गोविन्द नारायणको परिषद का अध्यक्ष तथा श्री हरिबाबू कंसल को महा-सचिव चुना गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रादेशिक अंचल में

पंजाब : केंद्र से हिंदी में पत्र व्यवहार

पंजाब के वित्तमंत्री डा0 बलदेव प्रकाश ने कहा है कि केंद्र से पत्र-व्यवहार में पंजाब अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग शीघ्र ही करने लगेगा ।

भाषा-सर्वेक्षण

पंजाब के भाषा-सर्वेक्षण का काम पंजाब सरकार की ओर से विधिवत आरंभ कर दिया गया है । इस प्रकार का प्रथम सर्वेक्षण 1894 में ग्रियर्सन ने किया था । आशा है यह काम तीन वर्षों में पूरा होगा । सर्वेक्षण के दौरान भाषा संबंधी आंकड़ों के अतिरिक्त लोकगीतों आदि का संग्रह भी किया जाएगा ।

जम्मू और काश्मीर : डोंगरी भाषा का प्रथम शब्दकोश

डोंगरी विद्वान श्री एन0आर0 पंदोत्रा ने डोंगरी भाषा का पहला शब्दकोश तैयार किया है । इस शब्दकोश में 30 हजार शब्द हैं ।

बिहार : लोक-सेवा आयोग की परीक्षाओं में हिंदी :

बिहार-मंत्रीमंडल ने यह निश्चय किया है कि बिहार लोक-सेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी की भाँति हिंदी को भी अनिवार्य विषय बनाया जाएगा ।

उत्तरप्रदेश : हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष की अपील

सम्मेलन के अध्यक्ष सेठ गोविन्ददास ने सभी हिंदी प्रेमियों से अनुरोध किया है कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वे अपने-अपने क्षेत्र में हिंदी व्यवहार समितियां स्थापित करें । ये समितियां जनता को हिंदी में अथवा प्रादेशिक भाषा में पत्र-व्यवहार करने की प्रेरणा दें तथा सरकारी कार्यालयों में हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाओं के प्रयोग का प्रचार करें ।

राजस्थान : विज्ञान की शिक्षा का ऐच्छिक माध्यम- हिंदी

राजस्थान विश्वविद्यालय ने अगले वर्ष से हिंदी को विज्ञान की शिक्षा का ऐच्छिक माध्यम बनाने का निर्णय किया है ।

उत्तरप्रदेश : उत्तरप्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री रामप्रकाश ने विधान परिषद में घोषणा की है कि राज्य में पांच वर्ष के अंदर विज्ञान तथा इंजीनियरिंग सहित सभी विषयों का माध्यम हिंदी हो जाएगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*विश्वविद्यालयों में

गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद : हिंदी विभाग

गुजरात विश्वविद्यालय की स्थापना अहमदाबाद में सन् 1949 में हुई थी। बड़ौदा एवं वल्लभ विद्यानगर को छोड़ कर शेष समस्त गुजरात इसका क्षेत्र है। 150 से अधिक डिग्री कालेज इससे संबद्ध हैं, जिनमें कला, वाणिज्य, विज्ञान आदि विभिन्न विषयों का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। अहमदाबाद तथा कुछ अन्य विशिष्ट केंद्रों में मान्य प्राध्यापकों के निर्देशन में स्नातकोत्तर अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था की गई है। उच्च शिक्षण को व्यवस्थित करने के लिए गुजरात विश्वविद्यालय ने अपने प्रांगण में चार भवनों (स्कूलों) की स्थापना इस प्रकार की है :

(1) भाषा-साहित्य-भवन (2) विज्ञान-भवन

(3) समाजविद्या-भवन और (4) मनोविज्ञान एवं शिक्षण-शास्त्र-भवन

"भाषा साहित्य भवन" में हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, संस्कृत, फारसी और भाषाशास्त्र के स्नातकोत्तर और शोध-संबंधी अध्ययन-अध्यापन की विशेष व्यवस्था की गई है।

विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना सन् 1963 में हुई थी। इसमें डा० अम्बाशंकर नागर रीडर तथा अध्यक्ष नियुक्त हुए। इससे पूर्व वे एम० एस० विश्वविद्यालय बड़ौदा तथा महात्मा गांधी द्वारा संस्थापित गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, के हिंदी प्राध्यापक थे।

विभाग की स्थापना के बाद पिछले चार वर्षों में डा० नागर के निर्देशन में स्नातकोत्तर अध्ययन तथा शोध-संबंधी निर्देशन का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। गुजरात में लगभग दो ढाई सौ छात्र प्रतिवर्ष हिंदी लेकर एम० ए० की परीक्षा में बैठते हैं। अहमदाबाद के अतिरिक्त नवसारी, सूरत, नड़ियाद, भावनगर, जामनगर, जूनागढ़ और विसनगर आदि केन्द्रों पर क्रमानुसार प्रो० नित्यानंद पटेल, डा० अरविंद देसाई, डा० रमणलाल गांधी, प्रो० हीरालाल सलाल, डा० मदन कुमार जानी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078084

प्रो0 एस0 टी0 ठक्कर और डा0 प्रभास शर्मा के निर्देशन में स्नातकोत्तर शिक्षण कार्य चल रहा है।

अहमदाबाद के विभागीय स्नातकोत्तर अध्यापन के लिए अहमदाबाद के कालेजों के वरिष्ठ प्राध्यापकों को भी आमंत्रित किया जाता है। अतिथि प्राध्यापकों में सर्व श्री डा0 रणधीर उपाध्याय, डा0 गोवर्धन शर्मा, डा0 भगवत् शरण अग्रवाल, प्रो0 रजनीकान्त रावल, प्रो0 प्रभाकर मंगलवेढ़ेकर, डा0 ह0 एन0 शुक्ल, प्रो0 अमरसिंह लोढ़ा, प्रो0 अरविन्द जोशी और डा0 भ्रमरलाल जोशी प्रमुख हैं।

शोध कार्य

डा0 नागर के निर्देशन में दो छात्र पी0 एच0 डी0 की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं और आठ शोध कर रहे हैं। प्रो0 रामकुमार गुप्त और प्रो0 भ्रमरलाल जोशी को क्रमश: गुजरात के संतों की हिंदी साहित्य को देन ' तथा सूरदास और नरसी मेहता - एक तुलनात्मक अध्ययन ' विषयों पर (बड़ौदा विश्वविद्यालय से) डाक्टरेट की उपाधि मिल चुकी है। अन्य छात्र निम्नलिखित विषयों पर शोध कर रहे हैं :

पंजीकृत विषय	अनुसंधित्सु
(1) राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विकास	श्री एस0 आर0 वर्मा
(2) गांधी विचारधारा का हिंदी साहित्य पर प्रभाव	प्रो0 अरविन्द जोशी
(3) सत्रहवीं-अठारहवीं शती के जैन-गुर्जर कवियों की हिंदी कविता।	प्रो0 हरीश शुक्ल
(4) आधुनिक हिंदी-गुजराती कविता का तुलनात्मक अध्ययन।	प्रो0 भोलाभाई पटेल
(5) राष्ट्रीय कवि दिनकर की काव्य कला।	प्रो0 शेखर जैन
(6) गुजरात के वैष्णव कवियों की हिंदी कविता। (बड़ौदा विश्वविद्यालय)	श्री विश्वनाथ शर्मा

)(क्रमश:)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि यूनेस्को के भारतीय आयोग के सहयोग से निदेशालय यूनेस्को कूरियर का हिंदी संस्करण प्रकाशित कर रहा है।

मंत्रालय की तरफ से हम जितनी सामग्री बिना मूल्य दे सकते हैं आपको भेज ही रहे हैं, लेकिन कूरियर को मुफ्त बांटने में हम असमर्थ हैं। अत: आपसे निवेदन है कि आप इसके ग्राहक बनकर बनें और रु0 10-50 वार्षिक चंदा हमें तत्काल भिजवा दें। अगस्त अंक शीघ्र ही प्रकाशित होने वाला है।

यूनेस्को कूरियर के साल में 11 अंक प्रकाशित होंगे। इनमें दो माह का सम्मिलित अंक भी निकलेगा जो रंगीन होगा।

कूरियर के कुछ अंक एक ही विषय पर होते हैं; कुछ में विभिन्न विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते हैं। पहला अंक जातीय पृथक्-वासन पर है। आप जानते ही हैं कि यह विषय तात्कालिक महत्व का है इसीलिए पहला अंक इस विषय पर निकालने की ज़रूरत समझी गई।

नीचे एक फार्म दिया जा रहा है। कृपया इसे भरकर वार्षिक चन्दे की रकम (रु0 10.50) के साथ नीचे लिखे पते पर भेज दें।

रु0 चन्द्रहासन
निदेशक

सेवा में,

व्यवस्थापक, हिंदी कूरियर, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय),
15/16 नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6.

महोदय,

मैं 'हिंदी-कूरियर' का ग्राहक बनना चाहता हूं। वार्षिक चन्दा रु0 10-50 मनीआर्डर / पोस्टल आर्डर द्वारा भेज रहा हूं। मेरा पूरा पता नीचे दिया है।

भवदीय

पता :-

(-------)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं०	मूल्य
नीलाभ प्रकाशन, 5 खुसरो बाग रोड, इलाहाबाद :				
आकाश चारी	उपेन्द्रनाथ अश्क	कहानी संग्रह	116	3-50
परतों के आरपार	,,	संस्मरण	168	4-50
शिकायतें और शिकायतें	कौशिल्या अश्क	डायरी	192	4-00
तूफानी लहरों में हँसता माँझी	उ०ना० अश्क (मार्क ट्वेन की जीवनी पर आधारित)	जीवनी	211	3-50
खोया हुआ प्रभा मंडल	उ०ना० अश्क	कविता संग्रह	80	4-00
प्रत्यूष प्रकाशन, राम बाग, कानपुर :				
इंसानियत जिन्दाबाद	डा० रामचरण महेन्द्र	एकांकी [illegible] संग्रह	223	5-00
वे उसे नहीं रोक सके	डा० रामनारायण व्यास	,,	169	4-00
पूजा के फूल	डा० सियारामशरण प्रसाद	एकांकी संग्रह	143	4-00
प्रत्यावर्तन	डा० सुरेश चन्द्र शुक्ल	,,	161	4-00
पारिजात प्रकाशन, गोपालगंज, सागर :				
वधू या प्रियतमा	अनिल मैत्रा	उपन्यास	187	3-00
सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी :				
प्रेमदान दान	विनोबा	भूदान	[illegible]	1-00
ग्रामदान	,,	,,	159	1-50
बाबा विनोबा	श्री कृष्णदत्त भट्ट	जीवन चरित्र	187	2-00
मजदूरों से	,,	गांधीजी, विनोबा, जयप्रकाश नारायण, का संकलन	71	0-60
चुनाव और लोकतंत्र			64	0-75
तूफान यात्रा	सुरेश राम	बिहार में विनोबा की ग्रामदान तूफान यात्रा की झांकी	296	3-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी :

जापान में कृषि औजार	मीहन पारीख	कृषि विज्ञान	132	3-50
गांव गांव में कुर्ए	एवट, पीटर स्टैन,	,,	30	2-00
	चौधरी			

रामनारायणलाल बेनी प्रसाद, प्रकाशक व पुस्तक विक्रेता, इलाहाबाद-2 :

नाना फड़नवीस	डा० रामकुमार वर्मा	नाटक	90	2-00
परमाणु शक्ति की कहानी	डा० कृष्ण बहादुर	बाल-विज्ञान	64	2-25
भारत में सहकारिता आंदोलन	महेशचन्द्र	सहकारिता	80	2-00
	रामनारायण लोहकार			
गीतानन्द	मे० पा० पिल्लाई	नाटक	111	2-00
चित्रकूट	लक्ष्मीनारायण मिश्र	नाटक	153	2-50
कुक्कुट पालन	जयराम सिंह	कुक्कुटपालन	100	1-00
चिंतना	प्रो० जगमोहन मिश्र	निबंध संग्रह	87	2-00
मन्दिर का कलश	प्रो० स्व० श्रीवास्तव	बालनाटक संग्रह	[illegible]	[illegible]
[illegible]	कृष्ण किशोर श्रीवास्तव	नाटक	95	1-50
आठ एकांकी	डा० त्रिलोकीनारायण	नाटक	205	2-25
	दीक्षित ([illegible])			
नींव की दरारें	कृ० कि० श्रीवास्तव	नाटक	118	2-00
केरल वैभव	एन० वैंकटेश्वरन्	यात्रा	110	1-75
भारतीय अर्थशास्त्र दर्शन	कृपा शंकर गौड़	अर्थशास्त्र	371	3-00

[illegible]

इतिहास की कहानियां	नरोत्तमदास अग्रवाल	नाटक	64	0-83
बिम्ब और प्रतिबिम्ब	म०रा० गौतम	नाटक	96	2-50
कृषि अर्थशास्त्र तथा भारत की कृषि समस्याएं	दूधनाथ सिंह	अर्थशास्त्र	452	7-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक: वी० मेजेन्सेफ
   अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use)
   लेखक: ए० एफ० यौफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: ...
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geom...
   ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य ...
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : वी० कुद्रयावत्सेव
   अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ:183 मूल्य:4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर
   अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०:268 मूल्य:8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : प्रो० मकेयेवा
    अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले०वी० फेडिंस्की अनु०पवनकुमार जैन पृष्ठ:122 मूल्य:2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स
    अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्माल पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses)
    ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर
    अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ:142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिण्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CENTRAL HINDI DIRECTORATE * MINISTRY OF EDUCATION * Delhi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar